दिव्य प्रकाश दुबे

लप्रेक

लाग्

VISIT…

दिव्य प्रकाश दुबे

बेस्ट सेलर **'मसाला चाय'** और **'टर्म्स एंड कंडिशंस अप्लाई'** लिखने के बहुत समय बाद तक दिव्य प्रकाश दुबे (DP) को यही माना जाता था कि वे ठीक-ठाक कहानियाँ लिख लेते हैं। लेकिन अब जब वे **'स्टोरीबाजी'** में कहानियाँ सुनाते हैं तो लगता है कि वे ज्यादा अच्छी कहानियाँ सुनाते हैं। **Tedx** में बोलने गए तो टशन-टशन में हिंदी में बोलकर चले आए। हर संडे वे **संडे वाली चिट्ठी** लिखते हैं कुछ ऐसे लोगों के नाम जिनके नाम कोई चिट्ठी नहीं लिखता। तमाम इंजीनियरिंग और MBA कॉलेज जाते हैं तो अपनी कहानी सुनाते-सुनाते एक-दो लोगों को रायटर बनने की बीमारी दे आते हैं। पढ़ाई-लिखाई से BTech-MBA है और इन दिनों एक बड़ी सेल्युलर कंपनी में AGM (Assistant General Manager) के पद पर कार्यरत हैं। साल 2016 में छपे अपने उपन्यास **'मुसाफ़िर Cafe'** की बंपर सफलता के बाद दिव्य प्रकाश **'नई वाली हिंदी'** के पोस्टर-बॉय की तरह देखे जाने लगे हैं। **'शर्तें लागू'** इनकी पहली किताब **'Terms And Conditions Apply'** का नया और परिवर्धित संस्करण है।

Email: authordivyaprakash@gmail.com
Website: www.divyaprakash.in

*शर्तें लागू

दिव्य प्रकाश दुबे

westland publications ltd
61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095
93, I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002
www.westlandbooks.in
Hind Yugm
201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase-2, Delhi-110091
www.hindyugm.com

Formerly published as 'Terms And Conditions Apply' by Hind Yugm 2013

Copyright © Divya Prakash Dubey 2017
All rights reserved
ISBN : 978-93-86224-67-5

Divya Prakash Dubey asserts the moral right to be identified as the author of this work. This novel is entirely a work of fiction. The names, characters and incidents portrayed in it are the product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons, living or dead, or events or localities is entirely coincidental.

Due care and diligence has been taken while editing and printing the book. Neither the author, publisher nor the printer of the book hold any responsibility for any mistake that may have crept in inadvertently. Hind Yugm and WESTLAND, the Publisher and the printers will be free from any liability for damages and losses of any nature arising from or related to the content. All disputes are subject to the jurisdiction of competent courts in Chennai.

This book is sold subject to the condition that it shall not by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, circulated, and no

reproduction in any form, in whole or in part (except for brief quotations in critical articles or reviews) may be made without written permission of the publishers.

मम्मी के लिए,
उन्होंने पहला शब्द बोलना सिखाया
पापाजी के लिए,
उन्होंने उस पहले शब्द का मतलब समझाया

तुमसे पहले न जाने कितने अधूरे लिखे पन्ने
खो दिए मैंने
तुमने पन्ने समेट कर
किताब की शक्ल दे दी- ऋचा के लिए

कहानी-क्रम

They lived happily ever after
Class 9th B
Kitty
सैलून
लोलिता
Monkey-Man
Sangam Caterer
*Terms & Conditions Apply
Room Number 303
समोसा
Ask Expert
Let’s go home
Welcome
कागज

They lived happily ever after

तुम मुझसे कुछ बोलती क्यों नहीं, इतना फासला क्यों आने दिया तुमने? सब तुम्हारी गलती है। मुझे गलत करते हुए न रोकना भी तुम्हारी ही गलती है। कोई कॉलेज में बोल ही नहीं सकता कि हम कभी लड़ भी सकते हैं। आज हालात ये हैं कि हम एक ही घर में अलग सोते हैं। मेरा टिफिन अलग आता है। तुम अपना खाना अलग बनाती हो। प्रीति हम इसलिए तो घर से नहीं भागे थे। हमने इसलिए तो शादी नहीं की थी। याद है तुम्हें थोड़ा भी, जिस दिन हमने पहले बच्चे का नाम सोचा था! तुमने उसको आने ही नहीं दिया। career इतना important होता है क्या, बताओ?

मेरा सर, दर्द से फट रहा है और तुम, दूसरे कमरे में गजल सुन रही हो! अब मुझसे ये सब बर्दाश्त नहीं होता। मैं suicide कर लूँगा, लेकिन तुमसे तलाक नहीं ले सकता। ऐसी जिंदगी नहीं चाहिए जिसमें तुम न हो। एक बार फिर से सोच लो न तुम, क्या हो गया है तुम्हें?

अभिषेक ने एक पन्ने पर 6-Aug-2012 की तारीख लिखी और सोने की कोशिश करने लगा।

मैंने फासला नहीं बनाया है, बल्कि हमेशा तुम्हारी सारी गलतियों को नजरअंदाज करने की कोशिश में ही शादी के बाद 4 साल गुजार दिए। तुम्हें ये बात पता है कि मैं कितना भी कम खाना बनाऊँ तो भी ज्यादा बन जाता है, फिर भी तुमने अपने लिए टिफिन लगा लिया। तुम्हें मालूम है कि सुबह की पहली चाय बनाने में मुझे बहुत आलस आता है, फिर तुम कैसे सुबह उठ के नाप से केवल अपने लिए चाय बना लेते हो और हमेशा कहते हो मैं कोशिश नहीं करती। बार-बार झूठे इल्जाम लगाते हो। बच्चा ही शायद हमें अलग होने से बचा सकता था। जैसे ही मैं माँ बनी तो तुम क्यों ये बोलने लगे कि बाप बनने के लिए तुम अभी तैयार नहीं हो। वो हमारा बच्चा था अभिषेक, कितनी आसानी से तुमने बोल दिया था, अभी तुम बाप नहीं बन सकते। तुमने चाहे जितना भी बुरा किया हो, लेकिन पता नहीं क्यों मैं तुम्हारे बिना एक भी दिन जिंदगी का नहीं सोच सकती और इसके जिम्मेदार तुम हो। इसीलिए मैंने फैसला किया है मैं suicide करने जा रही हूँ।

शायद मेरे बाद तुम समझ पाओ कि जिस लड़की ने तुम्हारे लिए अपना घर छोड़ दिया था, वो तुम्हारा थोड़ा प्यार तो deserve करती ही थी। मैं जा रही हूँ और मुझसे दूसरी दुनिया में भी कभी मत मिलना। love you अभिषेक!

डायरी में इतना लिखने के बाद प्रीति ने सामने टेबल पर अपनी एक पुरानी फोटो को देखा, अपने पर्स से सल्फास की शीशी निकाली, गजल की आवाज थोड़ी बढ़ा दी ताकि अगर सल्फास खाकर वो तड़पे भी तो अभिषेक को पता न चल पाए। शीशी खोल के डालने ही वाली थी इतने में अभिषेक दरवाजे पर आकर चिल्लाया- "थोड़ा धीमे बजाओ मुझे नींद नहीं आ रही।"

प्रीति ने बिना कुछ बोले आवाज कम कर दी और बिना तारीख डाले डायरी के पन्ने को दोबारा देखा और शीशी को अलमारी में बंद कर दिया। वो अपने तड़पने की आवाज अभिषेक को सुनाना नहीं चाहती थी।

Flash back :

अभिषेक और प्रीति मोती लाल नेहरू इंजीनियरिंग कॉलेज में पहली बार मिले थे। दोनों में, शुरू के दो साल कुछ ज्यादा बातचीत नहीं थी। तीसरे साल में जब दोनों एक साथ कॉलेज कि literary committee में आए, तब पता चला उन दोनों को कि वे दोनों ही लिखते हैं। इंजीनियरिंग कॉलेज में लिखने वाले लोग अक्सर कम ही होते हैं, इसलिए जो थोड़े बहुत लिखने वाले होते हैं उनकी कैमिस्ट्री तुरंत मैच कर जाती है। बातें किताबों से शुरू होती थी और उनके characters पर खतम। वो जो एक-दूसरे से सीधे नहीं बोल पाते थे, किसी किताब में कोई-न-कोई character वह बात बोल देता था। दोनों को कई बार एक-दूसरे से जो बोलना होता था वे किताब में निशान लगा कर बता दिया करते थे। हालाँकि प्रीति को किताब में पेन से निशान लगाना बिलकुल पसंद नहीं था और अभिषेक ने पेंसिल से लिखना कब का छोड़ दिया था। प्रीति इस बात से बहुत नाराज होती थी कि अभिषेक किताब में भी पेन से निशान लगा देता है। इस बात से अभिषेक को ज्यादा कोई फर्क नहीं पड़ता था। वो अक्सर ही कहता था-

"एक बार जो लिख दिया सो लिख दिया, बार-बार क्या मिटाना।"

"क्यों, गलतियाँ भी जो लिख दीं वो लिख दीं, अभिषेक?"

"हाँ और क्या, ज्यादा-से-ज्यादा पन्ना फाड़ के फेंक दिया।"

"हर पन्ना रफ नहीं होता... हर पन्ना फाड़ा नहीं जा सकता" इतना कहकर प्रीति हर बार चुप हो जाती।

"तुम ज्यादा ही philosophical हो जाती हो, थोड़ा practical बनो मैडम। इंजीनियरिंग पढ़ने आई हो; literature नहीं।" अभिषेक हर बात इसी लाइन से खतम करता।

इंजीनियरिंग कॉलेज में अगर कोई लड़का नोट्स बनाता है तो उसको सच्चा इंजीनियर नहीं बोला जा सकता। कभी-कभी लगता है अगर कॉलेज में लड़कियाँ न होतीं तो कभी किसी भी इंजीनियरिंग कॉलेज में कोई नोट्स बन ही नहीं पाता। जैसा हर लड़की के साथ होता है, जैसे-जैसे वो करीब आती है उसकी टोका-टाकी बढ़ जाती है। एक दिन ऐसा भी आता है जब हॉस्टल जाने से पहले वो bye के साथ take care भी

बोलने लगती है। सुबह breakfast के लिए उठाने लगती है। पेपर में पहले से ही नोट्स की एक फोटोकॉपी बना के रखती है। ये सभी प्यार/फ्रेंडशिप जैसी चीज के symptoms हुआ करते थे, हुआ करते हैं। प्यार लड़के की तरफ से और फ्रेंडशिप लड़की की तरफ से।

ज्यादा literature पढ़ने का एक नुकसान यह भी है कि कभी अगर आपको किसी को बोलना पड़े कि आपको प्यार हो गया है, तो आप पढ़ी हुई सैकड़ों प्रेम कहानियों में प्यार का इजहार कैसे किया गया है इसके research scholar तो बन जाएँगे लेकिन वो एक तरीका नहीं ढूँढ़ पाएँगे, जिससे सामने वाला समझ भी जाए और मना भी न कर पाए। इसीलिए इंजीनियरिंग के दिनों का सबसे बड़ा डर 'प्लेसमेंट' नहीं लड़की की 'ना' हुआ करता था।

खैर इस कहानी में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। प्रीति चूँकि लखनऊ की थी तो दीवाली की छुट्टी से पहले अभिषेक ने ऐसा प्रोग्राम बनाया कि उसको कुछ काम है लखनऊ में, तो क्यों न दोनों साथ में ही बस में चले चलें। प्रीति को भी सही लगा। इसी बहाने वो कुछ और टोकाटाकी कर पाएगी।

दुनिया के 100 प्रतिशत इंजीनियर जिंदगी में पहली बार किसी लड़की का हाथ बस में ही पकड़ना सीखते हैं और 99 परसेंट पहला kiss भी बस में करते हैं। ऐसी ही किसी छुट्टियों से पहले, ऐसे ही किसी शहर में किसी काम के बहाने जाने से पहले।

ऐसा ही कुछ अभिषेक और प्रीति के साथ हुआ। बस रात के साढ़े ग्यारह बजे लखनऊ पहुँची। उसने जाने से पहले न अभिषेक को bye बोला न ही हमेशा की तरह 'take care' का कोई sms किया। प्रीति को अपने ऊपर बहुत गुस्सा आया कि वो ये सब कैसे कर सकती है। उसने छुट्टियों भर अभिषेक का कोई फोन नहीं उठाया। छुट्टियाँ 6-7 दिनों की ही थीं। छुट्टियों से आते ही अभिषेक गुस्से में मिलने आया।

"क्या नाटक है ये सब प्रीति, फोन भी नहीं उठा सकती तुम?"

"I'm sorry!" प्रीति बिना आँख मिलाए अभिषेक से बोली।

अभिषेक बहुत कुछ बात करना चाहता था लेकिन प्रीति ने खराब तबीयत का बहाना बना दिया।

रात में 2 बजे अभिषेक को sms मिला "I thought a lot about you all this while and I don't know why but I cannot proceed ahead. Please forgive me for sake of our friendship... I love you, always yours Preeti, take care."

अभिषेक को समझ आ गया था ये नॉर्मल 'take care' नहीं है। पढ़ने वाली लड़कियाँ अक्सर प्यार को शुरुआत में गलती ही मानती हैं। यह लड़के की जिम्मेदारी होती है कि वह लड़की को ज्यादा दिन इसको गलती मानने से रोक ले और ठीक यही अभिषेक ने किया।

"Today is the best day of my life, I love you. अभिषेक, मालूम नहीं हम कभी मिलेंगे या नहीं लेकिन मुझे भरोसा है तुम सब सही कर लोगे।" प्रीति अपनी डायरी में लिख के सोने की कोशिश करने लगी।

"Today is the best day of my life, I love you प्रीति, आगे चाहे जो भी हो,

चाहे कुछ भी करना पड़े लेकिन तुम्हें कभी अपने से दूर नहीं जाने दूँगा।" अभिषेक ने एक पन्ने पर लिखा और उस पन्ने को संभाल के रख दिया और सोने की कोशिश करने लगा।

Flash back : Marriage

प्रीति चूँकि घर की बड़ी लड़की थी, तो उसको प्यार करने का हक नहीं था। यह वह बात थी जो माँ रोज फोन पर समझाती थी। अभिषेक चूँकि ब्राह्मण था तो श्रीवास्तवों में शादी कर नहीं सकता था। ये बात उसके घर वाले रोज उसको समझाते थे।

अक्सर खीजकर अभिषेक प्रीति को बोलता कि हम सभी surname की बजाय name के हिसाब से क्यों नहीं जी सकते। जिस दिन भी हम केवल name के हिसाब से जीना शुरू कर दें तो दुनिया की उम्र थोड़ी बढ़ जाएगी। केवल हमारे नाम काफी क्यों नहीं होते? कभी-कभी लगता है दुनिया name के आगे लगे surname में बँटी हुई है। ये सुनकर प्रीति कुछ बोल नहीं पाती थी। बस 'हाँ, हूँ' करके बात खतम कर दिया करती।

"यह ऐसे करना है, वह वैसे करना है केवल इसलिए क्योंकि आप फलाने पांडे के घर या ढिमका श्रीवास्तव के यहाँ पैदा हुए हैं। हमें क्या मतलब है, सैकड़ों सालों से क्या होता आया है?" अभिषेक प्रीति से बोला।

दोनों ने न जाने कितनी पुरानी धारणाएँ और रिश्तों को तोड़कर कोर्ट मैरिज कर ली। जैसाकि अक्सर होता है, दोनों के घर वाले नहीं माने। जब भी कोई inter-caste शादी करता है तो दुनिया की उम्र थोड़ी-सी बढ़ जाती है, अभिषेक यही मानता था और अभिषेक और प्रीति ने शादी करके दुनिया की उम्र बढ़ा दी।

दोनों की जॉब लग चुकी थी, तो दोनों पर घर वालों के मानने न मानने का ज्यादा फर्क पड़ा नहीं।

अभिषेक जो पहले प्रीति की एक फोन कॉल से झट से उठ जाता था, अब उठने में टाइम लगाने लगा। रोज सुबह कम-से-कम आधा घंटा प्रीति उसको उठाती तब जाकर वो उठता। प्रीति को उसको उठाने में मजा आता। यही हाल प्रीति का था, रात में अभिषेक उसका सर तब तक सहलाता जब तक वो सो नहीं जाती। सुबह अभिषेक को उठाते वक्त प्रीति वही सोचती थी जो अभिषेक रात में प्रीति को सुलाते वक्त सोचता।

दोनों के ऑफिस के रास्ते एक ही थे। अभिषेक ने लोन पर एक बाइक ले ली और प्रीति ने महीने भर में छोटी-छोटी चीजों से घर ऐसा सजाया कि लगता ही नहीं था कि शादी को इतना कम समय हुआ है। कई बार दोनों को यह भी लगता कि एक-दूसरे के बिना वे अभी तक रह कैसे रहे थे। अभिषेक के वे दोस्त जिनकी गर्लफ्रेंड थी या प्रीति की वे दोस्त जिनके ब्वॉयफ्रेंड थे, वे लोग इनके घर अक्सर आने लगे। कई बार तो यूँ भी होता कि किसी couple में लड़ाई हो जाती तो अभिषेक और प्रीति मिलके सुलझाते और चौंकते कि प्यार में लोग लड़ते क्यों हैं। दोनों को देखकर कई और लोगों ने शादी की हिम्मत कर ली थी वरना इंजीनियरिंग कॉलेज में अक्सर होता यह है कि लोग प्यार करने की हिम्मत तो कर लेते हैं, लेकिन शादी की नहीं कर पाते। कई बार अपनी वजह से तो कई बार अपने surname की वजह से।

Flash back : They lived happily ever after

शादी के शुरू के 1-2 साल सब सही रहा। अभिषेक का बहुत मन था कि वो बाहर से मास्टर ऑफ साइंस करे। उसका GRE score भी बहुत अच्छा आया था। scholarship भी मिल गयी थी। लेकिन शादी-वादी के चक्कर में, वह ये सब कुछ सोच ही नहीं पाया था। यह बात इतनी बड़ी तो नहीं थी लेकिन उसको खटकती थी। हालाँकि दोनों शादी से बहुत खुश थे।

अक्सर ही दोनों वही शर्त लगाते थे जो दुनिया का करीब-करीब हर लड़का, हर पति एक बार जरूर लगाता है।

"लड़की होगी।"

"ना लड़का, एकदम तुम्हारे जैसा। देख लेना मिस्टर अभिषेक।"

"नेहा नाम रखेंगे, वैसे भी लड़की ही होगी।"

"क्यों नेहा क्यों, बहुत ही कॉमन नाम है" प्रीति ने ऐतराज किया।

"तुमसे पहले नेहा नाम की ही लड़की थी ना... उससे शादी तो हो नहीं पाई, तो कम-से-कम नाम तो रख लूँगा।"

"अच्छा जी, तो ठीक है पहला लड़का होगा तो क्षितिज, दूसरा होगा तो मोहित, तीसरा होगा तो गौरव .... and so on ..." कहकर प्रीति जोर से हँसने लगी।

और अभिषेक थोड़ा serious होकर बोला-

"प्रीति मुझे बच्चा चाहिए।" और प्रीति की आँखों में उनका होने वाला बच्चा ढूँढ़ने लगा।

"थोड़े दिन दो। मुझे एक साल में career सेट हो जाएगा।"

एक यही बात थी जिससे अभिषेक चिढ़ता था। प्रीति को भी बोलने के बाद लगा कि career वगैरह सब लगा रहेगा। शादी के 2 साल हो गए हैं, बच्चा कर लेते हैं, लेकिन यह बात उसने अभिषेक को कभी बताई नहीं।

प्रीति जब बहुत खुश होती थी तो घर cake लेकर आती थी, वो भी बिना अभिषेक को बताए। ये surprise का तरीका पुराना था लेकिन अभिषेक अभी भी वैसे ही surprise होता था, जैसेकि प्रीति पहली बार cake लेकर आई हो। यही एक तरीका अभिषेक को भी आता था surprise देने का।

उस दिन तो गजब ही हो गया। दोनों एक-एक cake लेकर आए थे।

"पहले तुम अभिषेक।"

"नहीं पहले तुम बताओ क्या surprise है?" अभिषेक ने जोर दिया

"नहीं पहले तुम बताओ, कहीं तुम्हें डॉक्टर ने फोन तो नहीं कर दिया?"

"what do you mean Doctor, क्या हुआ तुम्हें?"

"तुम्हें कभी कोई पापा नहीं बुलाता ना... तो बस... आगे ऐसा नहीं होगा। तुम्हें पापा बोलने वाला बच्चा आने वाला है। आदत डाल लो" इतना कहकर प्रीति अभिषेक से जाकर लिपट गई और बाहर बरसात का कुछ पानी दोनों की आँखों में आ गया।

"मैं तो भूल ही गई, तुम cake क्यों लेके आए थे?"

"मैं... कुछ नहीं ऐसे ही यार, बहुत दिन हो गए थे।"

"अभिषेक, तुम कुछ भी छुपा नहीं पाते, फिर कोशिश क्यों करते हो? चलो बताओ।"

“हम्म...मेरा MIT के वन इयर प्रोग्राम में selection हो गया है। पूरे बैच में सबसे कम उम्र का मैं ही हूँ।”

“congratulations अभिषेक! तुमने बताया नहीं, फॉर्म कब भरा?”

“मुझे लगा था, अभी एक साल तुम भी अपना जॉब सेट कर रही हो... इतने में मैं कोर्स खतम कर लेता हूँ। कॉलेज से ही मेरा यही सपना था MIT.”

“लेकिन अब कैसे तुम्हें छोड़ के जा पाऊँगा... तुमने पहले क्यों नहीं बताया?” अभिषेक ने बात जारी रखते हुए कहा।

“मैंने उस दिन बोलने के बाद सोचा। तुम्हारा इतना मन है हमारे बच्चे के लिए तो सोचा career वगैरह तो बनता रहेगा। क्या पता बच्चे के बहाने ही सही, हमारे पैरेंट्स फिर से मिल पाएँ हमें...”

इतना बोल के प्रीति रोने लगी और अभिषेक ने उसको गले लगा लिया।

अगले दिन अभिषेक ने पूरे तीन साल बाद माँ को फोन किया और बच्चे के बारे में बताया। माँ बहुत खुश हुई और 10 बातें बताने लगी, कैसे बहू का ख्याल रखना है। भारी सामान नहीं उठाना है, घर का कोई काम नहीं करना है और फोन रखने से पहले बोलने लगी कि उसको बहू का ख्याल रखने के लिए आकर ले जाए। ऐसा लगा ही नहीं, तीन साल से बात नहीं हुई थी। ये पहली ऐसी बात थी जिसपर दोनों परिवार खुश थे।

2-3 दिन तक तो अभिषेक बहुत खुश रहा। अब MIT की फीस जमा करनी थी और वो सोच नहीं पा रहा था। वो नहीं रहेगा तो बच्चे का ख्याल कौन रखेगा और अगर वो नहीं जाता तो उस सपने का क्या जो सालों से उसको बेचैन करता था।

इसी बेचैनी में उसने घर आकर प्रीति को कहा

“प्रीति पता नहीं... मैं तुमसे ये सब कैसे कह पाऊँगा...”

“क्या हुआ बोलो”

“प्रीति... please मुझे गलत मत समझना... लेकिन क्या हम बच्चा बाद में प्लान कर सकते हैं?”

“क्या मतलब, मैं समझी नहीं”

“मतलब यह कि MIT जाना बहुत important है, मेरे career के लिए। मैं ये postpone नहीं कर सकता... बच्चा तो हम एक-दो साल बाद भी प्लान कर सकते हैं...”

प्रीति बहुत देर तक कुछ नहीं बोली।

“और मेरा career important नहीं था... अभिषेक...?”

“वह बात नहीं है...”

“फिर क्या बात है... यही न... लड़की का कोई career नहीं होता। ऑफिस में काम तो केवल लड़के करते हैं...?”

फिर दोनों बहुत देर तक एक-दूसरे को यही समझाने की कोशिश करते रहे कि ‘तुम समझ ही नहीं रहे हो’ और ‘तुम समझ ही नहीं रही हो’।

दोनों शादी के बाद से पहली बार आज अलग सोए। अभिषेक ने अगले दिन फिर अपने MIT वाले सपने की बात logical तरह से समझाने की कोशिश की और प्रीति ने बच्चे वाली बात emotional तरह से। बात पहले कभी इतनी बिगड़ी नहीं थी कि वे दोनों

सीख पाएँ कि मनाते कैसे हैं। हफ्ते भर बाद एक दिन, रात में प्रीति की तबीयत बहुत खराब हुई। उसको भयंकर bleeding हो रही थी। दोनों में अभी भी बात नहीं हो रही थी। प्रीति से जब सहा नहीं गया तो उसने अभिषेक को जगाया।

अभिषेक बहुत घबराया प्रीति के लिए और उससे ज्यादा अपने बच्चे के लिए। जब तक डॉक्टर आया बहुत bleeding हो चुकी थी। डॉक्टर आने के बाद बहुत गुस्सा हुआ कि अगर बच्चा गिराना ही था तो कम-से-कम किसी से कंसल्ट तो करना था। उल्टी-सीधी दवा खाने से ज्यादा नुकसान हो सकता था। अभिषेक को यह बात पता ही नहीं थी। इस बार प्रीति ने अभिषेक के सपने को लॉजिकल मानते हुए उसको MIT जाने के लिए आजाद कर दिया था। अभिषेक का सर, दर्द से फट रहा था। घर आते ही-

"किससे पूछ के दवा खाई तुमने, और बताया भी नहीं... वो हमारा बच्चा था...तुमने अकेले कैसे फैसला कर लिया...?"

"तुम्हारे लिए ही किया मैंने ये सब...तुम जाओ अब...बनाओ अपना career ... जाओ हट जाओ..."

"तुमने बताया क्यों नहीं प्रीति?"अभिषेक इतनी जोर से कभी नहीं चिल्लाया था।

"क्या बताती... कि मैं बच्चा मारने जा रही हूँ!" इतना कहकर प्रीति रोने लगी।

"मैंने last week ही अपना admission cancel कर दिया था।"

फिर प्रीति बहुत देर तक पता नहीं क्या बोलती रही और अभिषेक बहुत देर तक रोता रहा।

Flash back : Divorce

अभिषेक बिना पिए प्रीति को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था और प्रीति पिए हुए अभिषेक को। दोनों अब ऑफिस से अलग-अलग आने लगे थे। जब पति-पत्नी कम लड़ते हैं, उसका एक नुकसान यह भी होता है कि वे एक-दूसरे को मनाना, माफ करना नहीं सीख पाते। कुछ ऐसा ही हुआ इन दोनों के साथ।

किसी को यकीन ही नहीं आता था, अभिषेक और प्रीति भी कभी एक-दूसरे से अलग रहने का सोच सकते हैं। Divorce के case में कुछ था नहीं। जिस अभिषेक को प्रीति प्यार करती थी, वो बच्चे के साथ ही मर गया था और जिस प्रीति को अभिषेक प्यार करता था, उसने अभिषेक के बच्चे की जान ली थी।

ऐसा नहीं था कि प्रीति और अभिषेक ने कभी कोशिश नहीं की सब सही करने की लेकिन कभी-कभी बड़ी चीजें समझने के चक्कर में छोटी चीजें रह जाती हैं। अभिषेक कभी यह नहीं भूल पाया कि प्रीति ने अकेले यह फैसला कैसे ले लिया और प्रीति यह नहीं भूल पाई कि घर में केवल अभिषेक का career ही important है।

दोनों के ऑफिस में भी इसका असर पड़ा। जो अभिषेक कभी किसी पर चिल्लाता नहीं था। एक दिन अपने जूनियर की एक गलती पर इतना चिल्लाया कि पूरा ऑफिस इकट्ठा हो गया। वो डाँटते हुए बार-बार यही बोल रहा था कि-

"एक बार पूछा भी नहीं तुमने, कैसे अपने-आप सब कर दिया?"

यह बात उसने इतनी बार दुहराई कि ऐसा लगा अपने जूनियर से नहीं, प्रीति को बोल रहा हो। थोड़ी देर बाद एक-दो दोस्त उसको वहाँ से लेकर गए। उस शाम अभिषेक अपने

आप को बिलकुल भी कंट्रोल नहीं कर पा रहा था। जैसा कि अक्सर होता है जब आदमी खुद को कंट्रोल नहीं कर पाता तो शराब के कंट्रोल पर छोड़ देता है। अभिषेक ने भी यही किया और यह सिलसिला शुरू हो गया, खुद को कंट्रोल न कर पाने का।

उधर प्रीति के ऑफिस में कोई बहुत ही जरूरी assignment था लेकिन bleeding के बाद तबीयत बहुत दिन खराब होने की वजह से बहुत सारा काम pending था। करीब 10-12 दिन बाद जब उसने ऑफिस जाने के लिए अभिषेक को कहा तो वह इतना नाराज था कि उसने कह दिया कि अपने-आप चली जाओ। इतने सालों में यह पहली बार हुआ था कि प्रीति अभिषेक के साथ ऑफिस नहीं गई। वो ऐसे ही बहुत परेशान थी उस पर से काम का बहुत pressure आ गया और प्रीति की वजह से प्रोजेक्ट की deadline मिस हो गई। आजकल के ऑफिस और बॉस सब कुछ बर्दाश्त कर लेते हैं लेकिन deadline मिस होना बर्दाश्त नहीं कर पाते। सच पूछिए तो बँधुआ मजदूरी की शक्ल बदल गई है, बस और बड़े एसी वाले offices में बँधुआ मजदूर सफेद कॉलर पहन के आते हैं ताकि दूर-दूर तक उनमें छुपा बँधुआ मजदूर कोई पहचान न पाए। प्रीति की एक के बाद एक 3 deadlines मिस हो गईं तो उसको ऊपर से memo आ गया 'या तो वो अपना काम सुधार ले, नहीं तो 3 महीने का नोटिस देकर कहीं और नौकरी ढूँढ़ ले'।

यह बात घर आकर प्रीति अभिषेक को बताना चाहती थी। उसके साथ बैठकर रोना चाहती थी। लेकिन उस दिन फिर अभिषेक इतना पीकर आया हुआ था कि वो सुनने की हालत में नहीं था।

दोनों में बात करीब-करीब बंद हो चुकी थी। कौन बात शुरू करे यह फैसला दोनों ने एक-दूसरे पर छोड़ दिया था। divorce की नौबत कब आ गई, पता ही नहीं चला। बस दोनों एक-दूसरे को झेल नहीं पा रहे थे। Case चलने लगा। जो तारीखें दोनों अपनी डायरियों में डाला करते थे वही तारीखें अब वो family court में दर्ज करने लगे। दोनों ने अलग-अलग घर ले लिए। पुराना घर उन्हें वो सब कुछ याद दिलाता था जो उनके पास नहीं था।

Final hearing से पहले कोर्ट पति-पत्नी को एक बार और साथ रहने का मौका देती है, जिसको कोर्ट की भाषा में mediation कहा जाता है। और सारे सबूतों और गवाहों को मद्देनजर रखते हुए यह फैसला हुआ कि अगले 3 महीने दोनों को साथ रहना होगा वैसे ही जैसे पति-पत्नी रहते हैं और इस बीच कोई भी एक-दूसरे पर शारीरिक संबंध बनाने का दबाव नहीं डालेगा। फैसले से दोनों ही नाखुश थे, लेकिन घर वालों को, दोस्तों को लगा कि शायद दोनों दोबारा सब शुरू कर पाएँ।

Mediation:

"Court mediation period 7-May-2012 से 7-August-2012 मुकर्रर करती है। mediation के बाद तारीख 8-august-2012 है। mediation में दोनों अभिषेक और प्रीति के बर्ताव और सहमति के अनुरूप कोर्ट अपना फैसला सुनाएगी।"

तीन महीने दोनों ने करीब-करीब कोई बात नहीं की। प्रीति ने दोबारा डायरी लिखना शुरू कर दिया था और अभिषेक भी हमेशा पन्नों पे कुछ-न-कुछ लिख के सोने जाता था।

“मेरा सर दर्द से फट रहा है और तुम दूसरे कमरे में गजल सुन रही हो। अब मुझसे ये सब बर्दाश्त नहीं होता। मैं suicide कर लूँगा लेकिन तुमसे तलाक नहीं ले सकता। ऐसी जिंदगी नहीं चाहिए जिसमें तुम न हो। एक बार फिर से सोच लो न तुम। क्या हो गया है तुम्हें?”

अभिषेक ने एक पन्ने पर 6-Aug-2012 की तारीख डाली और सोने की कोशिश करने लगा।

7-August-2012

आज Mediation का आखिरी दिन था और अभिषेक ने फैसला कर लिया था कि वो प्रीति के बिना नहीं रह सकता और वो नयी शुरुआत करेगा। उसने सभी कॉलेज के दोस्तों को शाम को घर पर बुलाया और खुद cake लेकर half day करके घर चल दिया ताकि शाम को प्रीति के आने से पहले घर को सजा कर surprise दे। रास्ते में उसने एक red rose भी लिया प्रीति हमेशा ताना मारती थी कि तुमने आज तक एक गुलाब का फूल भी नहीं दिया मुझे। ऐसे ही न जाने कितनी छोटी-मोटी चीजें लेकर वो घर पहुँचा जैसे अपनी सारी गलतियाँ एक ही दिन में सुधार लेगा।

प्रीति का ऑफिस का 3 महीने का नोटिस पीरियड भी आज ही खतम हो रहा था। उसने नौकरी न करने का सोच लिया था। ऐसा नहीं था कि प्रीति ने कहीं नौकरी के लिए कोशिश नहीं की लेकिन वो एक अजीब-सी हालत में थी, न कुछ पुराना झेल पा रही थी और न ही कुछ नया कर पा रही थी। ऑफिस जाना था नहीं, सो उसने सल्फास की शीशी फिर बाहर निकाल ली बहुत देर तक कुछ सोचती रही लेकिन वो जहर खाकर तड़पना नहीं चाहती थी। बहुत देर तक अपनी डायरी पलटती रही। कॉलेज के टाइम से अभी तक का एक-एक पेज पढ़ लिया उसने। बस फिर पता नहीं क्या सोचा और डायरी में बस इतना लिखा-

“मेरे बाद पीना छोड़ देना अभिषेक और दूसरी शादी जरूर कर लेना, तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मुझे divorce नहीं चाहिए। love you अभिषेक!”और बहुत देर रोती रही।

इधर अभिषेक सारा सामान लेकर घर जल्दी आ गया। दरवाजा अंदर से बंद था। अभिषेक की चाबी से नहीं खुला। बहुत देर तक खटखटाया उसने, लेकिन दरवाजा नहीं खुला। थोड़ी देर बाद जब उसने दरवाजा तोड़ा, तो सामने प्रीति पंखे से लटकी हुई थी। अभिषेक 20-25 मिनट तक चिल्लाता ही रहा। पड़ोसी बताते हैं कि लाश उतारे जाने के बाद उसने cake काट के सोती हुई प्रीति को खिलाने की कोशिश भी की। दोस्तों ने कितना भी समझाया लेकिन वो सबसे लड़ने लगा।

“तुम पागल हो सब-के-सब... वो मेरे बिना रह ही नहीं सकती... वो आ जाएगी... जाओ मेरे घर से... हम अकेले ही ठीक हैं...” और पता नहीं क्या-क्या...

खैर जब पुलिस आई तो उन्हें प्रीति की डायरी जब्त कर ली जिसके आखिरी पेज में लिखा था-

मैंने फासला नहीं बनाया है, बल्कि हमेशा तुम्हारी सारी गलतियों को नजरअंदाज करने की कोशिश में ही शादी के बाद 4 साल गुजार दिये। तुम्हें ये बात पता है कि मैं कितना भी कम खाना बनाऊँ तो भी ज्यादा बन जाता है फिर भी तुमने अपने लिए

टिफिन लगा लिया। तुम्हें मालूम है कि सुबह की पहली चाय बनाने में मुझे बहुत आलस आता है, फिर तुम कैसे सुबह उठ के नाप से केवल अपने लिए चाय बना लेते हो और हमेशा कहते हो मैं कोशिश नहीं करती। बार-बार झूठे इल्जाम लगाते हो। बच्चा ही शायद हमें अलग होने से बचा सकता था। जैसे ही मैं माँ बनना चाहा तो तुम क्यों ये बोलने लगे कि बाप बनने के लिए तुम अभी तैयार नहीं हो। वो हमारा बच्चा था अभिषेक। कितनी आसानी से तुमने बोल दिया था अभी तुम बाप नहीं बन सकते। तुमने चाहे जितना भी बुरा किया हो लेकिन पता नहीं क्यों मैं तुम्हारे बिना एक भी दिन जिंदगी का नहीं सोच सकती और इसके जिम्मेदार तुम हो। इसीलिए मैंने फैसला किया है मैं suicide करने जा रही हूँ। शायद मेरे बाद तुम समझ पाओ कि जिस लड़की ने तुम्हारे लिए अपना घर छोड़ दिया था वो तुम्हारा थोड़ा प्यार तो deserve करती ही थी। मैं जा रही हूँ और मुझसे दूसरी दुनिया में भी कभी मत मिलना। love you अभिषेक!

डायरी के इसी पन्ने की बिना पर अभिषेक को गिरफ्तार कर लिया गया। इलाहाबाद high कोर्ट में बहुत दिन case चलता रहा। वही इलाहाबाद जहाँ दोनों पहली बार मिले थे। कोर्ट में भी अभिषेक बस यही बोलता- “तुम पागल हो सब-के-सब... वो मेरे बिना रह ही नहीं सकती... वो आ जाएगी... जाओ मेरे घर से... हम अकेले ही ठीक हैं...”

अभिषेक की मानसिक स्थिति के कारण उसको बरी कर दिया गया। वो किसी पागलखाने में है। कभी-कभी लगता है, अगर कभी दुनिया के सभी पागल अपनी कहानी सुनाने लगें तो शायद पागलखानों की जरूरत ही न पड़े। उनको अलग शायद इसलिए ही रखा जाता है ताकि उनकी कहानी किसी को पता ही न चल सके।

अभिषेक की लिए प्रीति कभी मरी नहीं और प्रीति, अभिषेक के बिना जीने की आदत नहीं डाल पाई।

अभिषेक अब पन्ने पर नहीं डायरी में लिखने लगा है। पूरी डायरी में बस एक ही लाइन लिखी है उसने-

“They lived happily ever after.”

Class 9th B

स्कूल खालिस सरकारी था। बहुत नाम था स्कूल का कि 'जनता इंटर कॉलेज लखनऊ' में जिसका बोर्ड का सेंटर पड़ गया वह गंगा नहा लिया। मास्टर जी लोग के नाम बड़े मस्त हुआ करते थे, ऐसा लगता था किसी कहानी के पात्र हों। गणित के मास्साब संतोष कुमार उर्फ 'भूत'; भूत इसलिए क्योंकि वो मारते-मारते भूत बना देते थे। विज्ञान त्यागी जी पढ़ाते थे, पढ़ाते क्या थे घर पर ट्यूशन पढ़ाने बुला लेते थे। वो sociology (समाज शास्त्र) वाली रोशनआरा मैडम के साथ अक्सर पाए जाते थे। अपने कैबिन में कुछ ऐसे समीकरण सुलझाने की कोशिश में, जिसको जालिम जमाना और आजकल के हरामी लड़के समझते ही नहीं थे। हिंदी वाले मास्साब का नाम 'white pigeon' (सफेद कबूतर) था। हमेशा सफेद कपड़े ही पहनते थे। हालत थोड़ी पतली रहती थी मास्साब की। अब हिंदी मीडियम स्कूल में कोई हिंदी की ट्यूशन तो पढ़ता नहीं था, तो सूखी-सूखी तनख्वाह से ही काम चलाना पड़ता था। बायोलॉजी के मास्साब थे कुमार चंदर मोहन, लेकिन बहुत कम आते थे। सब बताते थे कि कानपुर में अपना स्कूल है उनका, जब कभी आते भी, तो किसी सीधे टाइप के लड़के को खड़ा कर देते थे और पूछते-

"ये बताओ शादी करोगे?"

लड़का थोड़ा शरमाकर, थोड़ा सोचकर गर्व से बोलता-

"बिलकुल करेंगे मास्साब, आपको भी बुलाएँगे।"

"बुलाएँगे-बुलाएँगे ठीक है, ये बताओ शादी के बाद क्या करोगे?"

लड़का चुप, और क्लास के बाकी लौंडे ताली बजाने लगते। मास्साब कहाँ आसानी से छोड़ने वाले थे- "अबे biology की क्लास है, शरमाओगे तो चूतिये ही रह जाओगे। बताओ फिर, क्या करोगे शादी के बाद?"

लड़का फिर चुप और क्लास के बाकी लौंडे फिर ताली बजाने लगते। तभी पीछे वाली सीट से आवाज आती-

"ये कुछ नहीं करेगा मास्साब, आप ही बता दो आपने क्या किया था, शादी के बाद।"

अब मास्साब चुप और क्लास के बाकी लौंडे ताली बजाने लगते।

"कौन बोला बे, कौन बोला?" इतना कहकर नाराज होकर मास्साब चले जाते।

सरकारी स्कूल के लड़कों को बस मौज लेने से मतलब था। चाहे मास्साब से लें या साथ वाले किसी लड़के से। कोई भी किसी की भी कस के मौज लेता तो पूरी क्लास

तालियों द्वारा भरपूर समर्थन करती थी। उन दिनों उत्साहवर्धन का यही एकमात्र सिद्ध तरीका हुआ करता था।

यह दर्जा 9 ब अर्थात क्लास 9^{th} B का दृश्य था। 9बी पूरे स्कूल की सबसे कुख्यात व उदंड क्लास है- ऐसी मान्यता जगत व्याप्त थी। बरसों पहले पूरे महीने की फीस (मासिक शुल्क) 1 रुपया और 80 नये पैसे हुआ करती थी। मास्साब को जब 2 रुपये दिये जाते तो वो 20 नये पैसे लौटाते नहीं थे और पूरी क्लास में 92 लड़के थे, तो कुल मिलाकर यदि सभी लड़के मासिक शुल्क जमा कर देते और मास्साब किसी के भी 20 पैसे न लौटाते तो मास्टर जी की 18 रुपये और 40 पैसे की सूखी-सूखी कमाई भी हो जाती थी। जैसे-जैसे देश में गरीबी, भुखमरी, महँगाई और भष्टाचार बढ़ा उसी अनुपात में यहाँ की फीस भी बढ़ी। अब फीस 14 रुपये और 80 नये पैसे हो गई है लेकिन अब भी मास्साब 15 रुपये देने पर 20 पैसे नहीं लौटाते।

अगला पीरियड संतोष कुमार उर्फ 'भूत' का होता था। संतोष कुमार के नाम की महिमा कुछ ऐसी थी कि बाकी मास्साब लोग भी उनको भूत ही बुलाते थे। मास्साब 9th से लेकर 10th तक क्लास में एक ही चीज पढ़ाते थे। क्लास में आकर किसी भी ऐसे लड़के को खड़ा कर देते, जो उनके घर ट्यूशन पढ़ने न जाता हो।

"खड़ा हो बे, हाँ! तू पीछे वाली सीट से"

संतोष कुमार आँखों को भूतिया बनाकर चिल्लाते। जिस लड़के को खड़ा करने के लिए बोला उस लड़के को अगले ही पल संतोष कुमार इंसान से भूत बनते हुए प्रतीत होने लगते और इसी कारण लड़का डर से थर-थर काँपने लगता-

"ये बताओ (A+B) का whole square कितना होता है?"

"सर A^2+B^2+2AB"

"अच्छा, अब A−B का whole square बताओ?"

"सर A^2+B^2-2AB"

"साले कहाँ से नकल कर के बोल रहा है, ये बता Sin C + Sin D कितना होता है?"

लड़का अभी क्लास 9th में पहुँचा ही था और मास्साब ने 10th क्लास वाला फॉर्मूला पूछ लिया। लड़का नहीं बता पाया।

"ऐसा है कल अपने पिताजी को ले आना, ऐसे नहीं चलेगा, नाम बताओ अपना।"

फिर एक छोटी-सी diary जिसमें वो ट्यूशन का सारा हिसाब-किताब रखते थे; उसके पिछले पन्ने पर लड़के का नाम नोट कर लेते और उसके पिताजी के आने का इंतजार करते।

पिताजी के आने पर बस इतना कहते- "आपको तो पता ही है सरकारी स्कूल में एक-एक क्लास में 92 बच्चे हैं, सभी पे ध्यान नहीं दे पाते इसीलिए शाम को घर पे कुछ बच्चों को, जिनमें अच्छे नंबर लाने की संभावना है, उनको अलग से प्राइवेट मार्गदर्शन देते हैं। आपका लड़का अच्छा है, लेकिन यहाँ के लड़कों के साथ पढ़ेगा तो, बोर्ड का इम्तिहान तो घुस गया समझिए।" हिंदुस्तान का आम पिता भी आखिर सब कुछ देख सकता है, लेकिन बोर्ड में लड़के का नंबर कम नहीं देख सकता। पिता तुरंत मास्साब को धन्यवाद देता कि चलिए आपका सशक्त और समर्थ मार्गदर्शन मिलेगा तो बोर्ड रूपी भवसागर पार हो जाएगा। इधर भूत ने अपना एक और शिकार बनाया और पिताजी को आश्वस्त किया

कि सबसे कम फीस उनकी ही है वरना वर्मा जी कैसे प्राइवेट मार्गदर्शन के नाम पे ठगी मचाए हुए हैं। फिर ट्यूशन वाले लड़के से अगले दो साल कभी कोई फॉर्मूला नहीं पूछा जाता और लड़का कोई फॉर्मूला याद भी नहीं करता।

फिर आता था हमारे क्लास टीचर का नंबर। मास्साब का नाम था 'पुत्तू लाल' और मास्साब ऊपर से नीचे तक पुत्तू लाल ही लगते थे। आपने अपने जीवन में जो सबसे बड़ा चूतिया टाइप का खूसट आदमी देखा हो उसकी शक्ल पुत्तू लाल से जरूर मिलती होगी; ये भी एक सामान्य मान्यता थी उन दिनों। पुत्तू लाल खूसट इसलिए भी थे क्योंकि कॉपी जाँचते समय दो पेन रखते थे एक नीला और एक लाल, अगर किसी लड़के ने कोई जवाब सही लिखा है और वह उनके यहाँ ट्यूशन नहीं पढ़ता, तो बेचारे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे, नीले वाले पेन से जवाब काट देते और लाल वाले पेन से अंडा हग देते थे। इस प्रकार जो लोग पुत्तू लाल के यहाँ ट्यूशन पढ़ने जाते थे उनके साथ न्याय हो जाता था।

अगली कक्षा होती थी संस्कृत की, और पांडे जी एकदम टाइम पर क्लास में आ जाते। संस्कृत के मास्टरों वाली एक भी आदत नहीं थी उनमें, फ्रेंच दाढ़ी रखते थे। क्लास को बाहर पेड़ की छाँव में लेते ताकि वो सामने वाली नयी मैडम को देख सकें और लड़कों को 'बालिका के रूप' समझा सकें।

एक दिन की बात है। पांडे जी पढ़ा रहे थे, इतने में कोई लड़का बोला-

"गुरु जी आज पढ़ने का मन नहीं है, कोई किस्सा हो जाए।"

किस्सा सुनाना पांडे जी की मजबूरी ही नहीं कमजोरी भी थी। संस्कृत उन्हें उतनी ही आती थी जितनी इम्तिहान में आती थी। खैर पांडे जी ने बड़े रूखे मन से सामने वाली मैडम जी की तरफ देखते हुए कहा-

"अब इस नीबू में रस नहीं रहा, पहले क्या दिन थे!"

फिर पांडे जी थोड़ी देर तक अपनी जवानी के दिन और रातों में खो गए और लड़के मैडम जी में।

तभी किसी ने कहा- "गुरु जी ये बात नहीं है, आज भी आप जनता इंटर कॉलेज के मोहब्बतें वाले शाहरुख हो"

पांडे जी ने एक लंबी साँस भरी और लड़के की बात को मूक सहमति प्रदान करते हुए बोले-

"हमारा रस तो चुस गया।"

तभी पीछे से आवाज आई-

"चुस कैसे गया गुरु जी?"

पांडे जी को लगा लड़के ने 'चुस' नहीं बल्कि सरकारी स्कूल की आम बोलचाल में 'चुस्स' से मिलता-जुलता दूसरा शब्द बोला है।

इतने में फिर पीछे से आवाज आई

"रस चुस्सने का कोई किस्सा हो जाए गुरु जी।"

फिर पांडे जी, नजरें मैडम पर गड़ाए-गड़ाए अपने रस चुसने वाले दिन और रातों में खो गए।

इसके बाद इंटरवल में सारे लड़के ठेले पे जाके कश्मीरी मिर्च वाले आलू खाते। कुछ सीधे टाइप के चूतिये घर से लंच का डिब्बा भी लेके आते, जिनको बाकी लड़के 'लौंडिया

हो का बे' कह के चिढ़ाते थे। कुछ लड़के इतनी ही देर में क्रिकेट मैच खेल आते थे।

इंटरवल के बाद 1 घंटे कोई क्लास नहीं लगती थी, सुबह से पढ़ाते-पढ़ाते मास्साब लोग और पढ़ते-पढ़ते लड़के थक चुके होते थे।

अरे लीजिए त्यागी जी और रोशन आरा मैडम के बारे में तो बताना रह ही जाता इन सब लोगों की बातों में। इधर लड़के और बाकी मास्टर Interval में आराम कर रहे होते, तब अपने कैबिन में त्यागी जी और रोशन आरा मैडम सबसे ज्यादा काम कर रहे होते अर्थात दिन भर का सुख-दुख बाँट रहे होते। रोशन आरा मैडम का पति बहुत जालिम है, यह अफवाह कॉलेज में उस दिन से उड़ी हुई थी जिस दिन पहली बार रोशन आरा मैडम ने अपना दुखड़ा त्यागी जी को बताया था। तो रोशन आरा मैडम का जो दुख था, वही त्यागी जी का सुख था। त्यागी जी का कैबिन लैब के अंदर था; एक दम छुपा हुआ। Interval के टाइम की बात है, एक दिन त्यागी जी एक लड़के को लैब से मारते-मारते बाहर ले आए। लड़का अपना रजिस्टर लैब में गलती से छोड़ आया था। बैग लाने का रिवाज हुआ नहीं करता था जनता इंटर कॉलेज में। 9th क्लास में लड़के एक रजिस्टर खरीद लेते थे, वही 2 साल चल जाता था। त्यागी जी लड़के को गधे की तरह मारे जा रहे थे और लड़का गधे की ही तरह मार खाए जा रहा था।

मारते-मारते जब त्यागी जी थक गए, तब छोटे वर्मा ने जाकर त्यागी को रोका और कहा-

"क्या बात हो गई, इतना क्यों पेल रहे हो साले को, ट्यूशन के पैसे नहीं दिए क्या इसने?"

"अब क्या बताएँ वर्मा जी, कितनी बार समझाया है लैब में जब भी आओ, पूछ कर आओ। मैं अगली क्लास के लिए नोट्स बना रहा था, आकर विघ्न डाल दिया साले ने।"

त्यागी जी ने पिछली क्लास कब ली थी, न लड़कों को याद था न ही त्यागी जी को। चूँकि कॉलेज आकर रोशन आरा मैडम के सानिध्य में अगली क्लास के लिए नोट्स बनाना एक जरूरी प्रक्रिया थी, सो उसमें त्यागी जी विघ्न बर्दाश्त नहीं कर पाते थे।

छोटे वर्मा समझदार आदमी थे। कभी-कभी नोट्स बनाने के लिए त्यागी जी की लैब वाला कमरा वो भी लिया करते थे। तुरंत उन्होंने भी लड़के की कनपटी पर काँग्रेस की एक जोरदार मोहर लगाई और घोषणा कर दी-

"जब तक क्लास 9बी के सभी लड़के त्यागी जी को लिखित में माफी नहीं माँगते, तब तक त्यागी जी क्लास में पढ़ाने नहीं आएँगे।"

इतना सुनकर त्यागी जी छोटे वर्मा की तरफ देखकर विजयी भाव से मुस्कुराए और अधूरे बचे हुए नोट्स दोबारा बनाने के लिए लैब में लौट गए। लैब में जब रोशन आरा मैडम ने पूछा कि ज्यादा लगी तो नहीं? तब त्यागी को पहली बार हाथ में मारने का दर्द महसूस हुआ। यूँ ही एक-दूसरे का दर्द महसूस करते हुए त्यागी जी और रोशनआरा मैडम ने फिर से बिना विघ्न के सुख-दुख बाँटना शुरू कर दिया।

इसके बाद जिसकी क्लास होती थी उसका नाम था, 'दुग्गी' असली नाम 'छोटे वर्मा'।

छोटे वर्मा चरित्र से और पैसे दोनों से बहुत ही खर्चा पसंद आदमी थे। 'दुग्गी' नाम इसीलिए पड़ा था कि इनके दो चक्कर थे। एक घर वाली और एक बाहर वाली? जी नहीं,

ऐसा बिलकुल नहीं था। दुग्गी नाम की महिमा यह थी कि उनके दो चक्कर थे, 'एक बाहर वाली से और दूसरा भी, दूसरी बाहर वाली से।'

दूसरी बाहर वाली कॉलेज के स्टाफ में से ही थी, तो कभी-कभार छोटे वर्मा, त्यागी जी से अगली क्लास के लिए नोट्स बनाने के बहाने से लैब वाला कैबिन ले लेते थे।

वर्मा जी भी प्राइवेट मार्गदर्शन में कोई कसर नहीं रखते थे, हमेशा एक ही रंग की फटी हुई लुंगी पहनते और एक ही रोना रोते, अपने ट्यूशन वाले लड़कों से- "यार ये संतोष कुमार सिंह 'भूत'नी का, मा...चो... लड़कों के भविष्य के साथ खेलता है। अपने दोस्तों को उसके पास मत जाने देना। इस छमाही इम्तिहान में मेरा ही पेपर आ रहा है। हम तो बस बता ही सकते हैं, लेकिन लड़कों के भविष्य के साथ कोई खेले तो मन खराब हो जाता है।"

देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ न हो, यह व्यापक चिंता का विषय था जिसपे 'दुग्गी' अर्थात छोटे वर्मा द्वारा अपनी ट्यूशन में की गई चिंता उनके अच्छा इंसान होने पर मुहर लगाती थी। मास्टर वो चाहे जैसे भी हों।

इसके बाद एक खेल कक्षा अर्थात स्पोर्ट्स क्लास भी होती। मास्टर का नाम हरेन्द्र नाथ था, उनको लड़के प्यार से हरेंदर, चुकंदर, भगंदर, जितेंदर, सुरेंदर, छछुंदर आदि, जो मन में आ जाए, बोल दिया करते थे। मास्टर स्पोर्ट्स के थे लेकिन पहनते धोती थे। बस जीवन भर खेल में ही रह गए। भरपूर कूद नहीं पाए कभी, इसलिए शादी नहीं हो पाई। क्लास में आकर किसी भी गोरे-चिकने लड़के को खड़ा कर देते, अपने पास बुलाते, एक-आध बार पीठ सहलाते और कहते-

"देख रहे हो, जब यह इतना खूबसूरत है तो इसकी माँ कितनी खूबसूरत होगी?"

हालाँकि इस बात से क्लास के कुछ लड़के नाराज हो गए। एक बार उन्होंने कमरे का दरवाजा बंद किया, मास्साब की धोती उतारी, कंबल लपेटा और मास्साब से निवेदन किया कि किसी को यह बात बाहर जाकर न कहें और इस सविनय निवेदन के बाद क्लास के हर लड़के ने मास्साब की 'कंबल कुटाई' करके अपने जीवित होने का संकेत दिया। इसके बाद हरेंदर मास्साब अगले एक साल क्लास नहीं आए।

चूँकि मास्साब आते नहीं थे तो लड़के नियम से अपने-आप स्पोर्ट्स क्लास के टाइम पर खेलने चले जाते थे।

अगली और आखिरी क्लास होती थी मिस्टर J P N मिश्रा की, अपना नाम अँग्रेजी में ही लिखना पसंद करते थे। J P N मिश्रा का full form केवल दो लोगों को पता था, एक स्वयं J P N मिश्रा को दूसरा उनके स्वर्गीय पिताजी को। J P N मिश्रा की एक और आदत बाकी मास्साब लोगों से अलग थी, अक्सर स्कूल से निकल के जब घर जा रहे होते तो रास्ते में आनंद टॉकीज से गुजरते हुए साइकिल थोड़ी धीमी कर देते। आनंद टॉकीज वही, जहाँ केवल बाल सिनेमा ही लगता था, जिसको आम बोल चाल की भाषा में लोग फालतू में 'ब्लू फिल्म' बोल देते थे। पोस्टर ऐसे देखते थे जैसे पोस्टर के 5 मिनट आगे-पीछे का भी दिख रहा हो। पोस्टर को अभी निहार ही रहे होते कि इतने में क्लास का कोई हरामी टाइप लड़का 'प्रणाम गुरु जी' कहके साइकिल आगे निकाल लेता था और J P N मिश्रा अगले दिन क्लास में लड़के को गिरा लेते थे कि ये सब देखना और सोचना भी आदर्श विद्यार्थी के लिए कितना गलत है। इससे वीर्य का नाश होता है और पढ़ने में मन

नहीं लगता है।

खैर ऐसे ही एक दिन मिश्रा जी क्लास में घुसते ही बोले-

“देखो बच्चो”

“दिखाइए गुरु जी” पूरी क्लास एक साथ कोरस में चिल्लाई।

“देखो बेटा, दिखाएँगे तो डर जाओगे” मिश्रा जी गुस्से में चिल्लाए

आखिर में, पीछे वाले दरवाजे से धीरे-धीरे लड़के निकलना शुरू कर देते। छुट्टी का टाइम शाम के 4 बजे था, लेकिन तब तक स्कूल में न मास्टर बचते, न बच्चे। 5 बजे से मास्टरों को ट्यूशन पढ़ानी होती और लड़कों को पढ़नी होती।

कभी आपको मौका लगे तो किसी सरकारी स्कूल का चक्कर जरूर लगाइएगा ये सारे लोग बदले हुए नामों के साथ मिल जाएँगे।

Kitty

हाँ Kitty ही नाम था उनका। हाँ थोड़ा अजीब है। उम्र यही कोई 40 साल। गजब के जिंदादिल, मस्तमौला आदमी। हमारे मुहल्ले में ही रहते थे या यूँ कह लीजिए हम उनके मुहल्ले में रहते थे। Kitty भइया का असली नाम शायद उनके स्कूल और कॉलेज के certificate के अलावा कहीं भी दर्ज नहीं था। दफ्तर में भी सब Kitty ही जानते थे। बस Kitty भइया वाली गली में रहते हैं, यही हमारा पूरा पता हुआ करता था। रोज कहीं-न-कहीं से कुछ अच्छा खाने को लाते और जबरदस्ती खिलाते थे। इस आदत से उनके घर वाले बहुत चिढ़ते थे कि फालतू में पैसा लुटाते हैं। लेकिन Kitty भइया पर इन सब तानों का कभी कोई असर होते नहीं दिखा।

अक्सर छत पर टहलते हुए मिल जाते थे। नवरात्र छोड़कर पूरे साल दारू और हर बार दारू के बाद एक ही रोना-

“यार हमारा मन कहीं और था....उससे खूबसूरत लड़की थी नहीं कोई.....बहुत प्यार करते थे उससे...”

“क्यों, अब नहीं करते प्यार?” मैंने पूछा।

“करते हैं, लेकिन यार अब बच्चे बड़े हो गए। लड़के बड़े हो रहे हैं, बड़ा वाला तो साला अबकी B.Sc. कर लेगा।”

“तो शादी क्यों नहीं की आपने उनसे?”

यह ऐसा सवाल था जिसको सुनकर, हर बार बहुत देर तक खामोश हो जाते और थोड़ी देर बाद जैसे ही मैं चलने लगता तो रोक कर पूछते-

“MBA की तैयारी कर रहे थे न तुम?”

“हाँ भइया।”

“तुम्हारे भइया की बहुत जान-पहचान है, पेपर दे लो। अगर admission में दिक्कत आए तो बोल देना हमें, लखनऊ में जितने बड़े कॉलेज वाले हैं ना, सब हमारे साथ पीते हैं। इतना काम करते हैं इन सालों का, एक अपना काम भी बोल देंगे।”

“ठीक है भइया।” इतना बोल कर मैं चल देता।

खैर ये तो उनका रोज का रोना था। रजिस्ट्री ऑफिस में थे तो रोज का 2-3 हजार पा जाते थे और सूखी-सूखी हर महीने की तनख्वाह अलग। माताजी, पिताजी, बीवी और बच्चों से लेकर पड़ोस वाले, घर के नौकर सभी का हिस्सा था उन्हीं 2-3 हजार रुपयों में।

माताजी की पता नहीं कौन-सी पूजा होती, वो अपने हिसाब से बिना बताए kitty भइया की जेब से पैसे निकाल लेती थीं। हाँ! बस इस बात का खयाल रखती थीं कि रोज की पूजा, पूजा ही लगे हवन नहीं। महीने में दो हवन भी कर ही देती थीं... शायद मंदिर जाकर करती थीं। क्योंकि हवन के बाद कभी कोई प्रसाद बँटा नहीं मुहल्ले में।

पिताजी का भी यही हाल था। बस माताजी की पूजा, पिताजी की दवाई थी और माताजी के हवन, पिता जी के medical checkup जिनकी रिपोर्ट कभी आ ही नहीं पाती थी।

बचे-कुचे दोनों लड़के अपने हिसाब से पॉकेट money निकाल लेते थे। मोबाइल का रीचार्ज और पेट्रोल के बढ़ते दामों का असर उन्हीं पर सबसे ज्यादा हुआ था।

घर पर सबको kitty भइया के रोज पीने की इतनी आदत हो चुकी थी कि अगर कभी गलती से न पीएँ तो माहौल बड़ा खिंचा रहता था। न माताजी की पूजा हो पाती थी, न पिताजी की दवाई आ पाती थी और न ही लड़कों की bike में पेट्रोल भर पता था।

एक और रिकॉर्ड दर्ज था kitty भइया के नाम, कि इतने सालों दारू पीने के बाद भी उन्होंने कभी किसी के साथ बदतमीजी नहीं की। बल्कि मुहल्ले भर के महरी (बर्तन माजने वाली) और जमादारों की उतनी लड़कियों की शादी के पैसे दे चुके थे जितनी लड़कियाँ कभी पैदा ही नहीं हुईं।

इस आदमी ने भी जैसे कसम खा रखी थी कि कभी किसी को किसी भी काम के लिए मना नहीं करेगा, किसी को भी खाली हाथ नहीं लौटाएगा। रोज दफ्तर जाने से पहले मंदिर जाना और वहाँ पंडित जी को 21 रुपये देकर दिन की शुरुआत करना। पंडित जी का आयुष्मान भवः आशीर्वाद देना और बताना कि कैसे इस बार नवरात्रि पर अखंड ज्योति जलने की तैयारी हो गई और इस महायज्ञ में kitty भइया कैसे मुद्रारूपी आहुति दे सकते हैं। फिर पंडित जी का दोहराना- “सबसे नहीं बोलते हैं आहुति के लिए, केवल योग्य सामर्थ्यवान लोगों द्वारा ही यह कार्य संपादित हो, ऐसी देवी माँ की इच्छा है।” इसके बाद kitty भइया के मंदिर से चलने के पहले अपने बड़े भाई वाले जमीन के टुकड़े को पुनः प्राप्त करने की मंशा व्यक्त करना, कि जमीन का टुकड़ा मिल जाता तो उसमें भी एक छोटा-सा देवी माँ का मंदिर बन जाए; ऐसा सपना उनको देवी माँ ने दिखाया है। जिस दिन पंडित जी ज्यादा देर बात करने लगते उस दिन kitty भइया को 21 नहीं 51 रुपये देने पड़ जाते।

मंदिर और पंडित जी की आध्यात्मिक दुनियादारी से आगे बढ़कर kitty भइया असली दुनियादारी के मंदिर अर्थात दफ्तर रूपी कर्मभूमि में पहुँचते। 11 बज चुके होते, कुछ लोग आ चुके होते और कुछ आने वाले होते। सारे सरकारी दफ्तर करीब-करीब एक से ही लगते हैं, लोगों का आना-जाना दिन भर लगा रहता है। कुछ लोग देर से आते हैं तो कुछ लोग जल्दी जाते हैं और बचे हुए देर से आते हैं और जल्दी जाते हैं। दफ्तर से जल्दी जाने का मतलब यह बिलकुल भी नहीं है कि फलाँ आदमी काम नहीं कर रहा है। अक्सर दफ्तर की सबसे काम की बातें दफ्तर के बाहर ही की जाती हैं।

कभी आपको रजिस्ट्री ऑफिस में जाना पड़े तो देखिएगा, लगेगा पूरा शहर ही जमीन खरीद-बेच रहा है। 99 प्रतिशत खरीदने-बेचने वाले लोग अच्छा Investment करने वाले लोग हैं और बचे-कुचे 1 प्रतिशत वे भी मिल जाएँगे जिनको एक छोटा-मोटा घर

बनवाना है, जिसके लिए पैसा जोड़ने में उनकी पूरी उम्र लग गई। Kitty भइया इस बात का पूरा खयाल रखते थे कि अपना कट केवल उन लोगों से लें जो अच्छा Investment करने वाले लोग हैं।

मैं जब खाना खाकर छत पर टहल रहा होता, तो पकड़ लेते और दारू चढ़ने के बाद बोलते-

"जानते हो असली corruption क्या है?"

"corruption, corruption है, असली नकली क्या भइया?"

"अबे तुम छोटे हो, तुम्हें नहीं पता। देखो, मोटी party से छोटा पैसा लेना और छोटी party से मोटा पैसा लेना; असली corruption है।"

Corruption की इतनी ईमानदार परिभाषा मेरे लिए बिलकुल नयी थी। हर बार ऐसा ही कुछ-न-कुछ ईमानदार और अनोखा बोलकर kitty भइया पेग बनाते हुए आसमान में चाँद और चाँद में उस लड़की को निहारने लगते। 2-3 पेग के बाद पूरी दुनिया में सिर्फ दो लोग बचते और मैं पढ़ने के बहाने अपने कमरे में आ जाता।

भाभी को कभी कुछ पैसे ज्यादा दे दिए, तो अगले दिन दफ्तर जाने के बाद सास, बहू को माँ-बहन की गाली जरूर सुनाती-

"शादी के बाद ही पीने लगे... संभाले न गए तुमसे... खा गई हमारे kitty को।"

हाँ! एक और अजीब बात थी उनके घर में, जिस दिन दारू नहीं पीते घर से जोर-जोर से लड़ने की आवाज आती। अपनी लाख खामियों के बावजूद माताजी की बहुत इज्जत करते थे। सो कभी अपनी बीवी को पिटते वक्त बचा नहीं पाए। बस बीवी के सामने जाकर अकेले में रोकर माफी माँग लेते और अगले दिन महँगी साड़ी ले आते। रोज की करीब यही कहानी थी। दारू वैसे ही चलती रही, चाँद वैसे ही निकलता रहा।

मेरे MBA के बाद, मेरी नौकरी लखनऊ में लग गई। इधर उनकी तबीयत कुछ खराब रहने लगी थी। लेकिन न जिंदादिली में कोई कमी आई, न दारू में। एक दिन ऐसे ही दीवाली पर मिल गए। जबरदस्ती हाथ में 100 रुपये पकड़ा दिए और बोले पटाखे खरीद लेना।

"मैं बड़ा हो गया हूँ भइया, कमाने भी लगा हूँ।"

"साले अपने भइया से ज्यादा कमाने लगे हो क्या...आशीर्वाद दे रहे हैं, रखो बे... मिठाई खा लेना।" इतना बोल के कुछ सुनते नहीं थे आगे बढ़ जाते थे। मेरे जैसे न जाने कितने लड़के थे मुहल्ले में, जिनके साथ वो होली-दीवाली ऐसे ही और इतनी ही मनाते थे।

यूँ ही होली-दीवाली पर आशीर्वाद का सिलसिला जारी रहा। भोपाल transfer के बाद kitty भइया से बात लगभग बंद हो गई, बस होली पर उनका फोन आया।

"तुम्हारे मिठाई के पैसे घर पर मम्मी को दे दिए हैं।"

"अरे इसकी क्या जरूरत थी भइया!"

"रखो बे...मिठाई खा लेना...इधर लखनऊ आना, तो मिलना। वहाँ कोई दिक्कत हो, तो बोलना। वहाँ पर भी तुम्हारे भइया की बहुत जान-पहचान है।" इतना बोल के फोन काट दिया।

होली के दो दिन बाद ही खबर आई कि kitty भइया नहीं रहे। दारू ने शरीर खोखला

कर दिया था। यह ऐसा झूठ था जिसे सबने चुपचाप वोट देकर भारी मतों से विजयी बनाया था।

मुझे बहुत गुस्सा आया और खुशी भी हुई कि कम-से-कम उनका रोज थोड़ा-थोड़ा मरना बंद हुआ। दारू वैसे चलनी बंद हो गई, लेकिन चाँद वैसे ही निकलता रहा।

बड़े लड़के को उनकी जगह नौकरी मिल गई है। लड़का अपनी दादी को गाली देना सीख गया है। माताजी की पूजा अब पहले जैसे नहीं होती, न ही पिताजी की दवाई आती है और दफ्तर में भी corruption बढ़ गया है।

इस बार दीवाली पर घर गया, तो मैंने उनके दोनों लड़कों को बुला के 100-100 रुपये जबरदस्ती पकड़ा दिए। तो बड़ा वाला लड़का बोला-

“मैं बड़ा हो गया हूँ भइया, कमाने भी लगा हूँ।”

“साले अपने भइया से ज्यादा कमाने लगे हो क्या...आशीर्वाद दे रहे हैं, रखो बे... मिठाई खा लेना” मैंने प्यार से डाँटते हुए कहा।

अब जाकर यकीन आया kitty भइया सही में नहीं रहे।

सैलून

जो बुड्ढे अपने बाल रंगते हैं वे चालू होते हैं, ऐसा मैं नहीं मानता लेकिन सैलून वाले जुम्मन भाई हमेशा ऐसा ही बोलते हैं। पूरे मुहल्ले में किसी का हाल जानना हो, किसकी लड़की का चक्कर किसके साथ है, किसका लड़का नशा करने लगा है, किस राजनीतिक पार्टी का चुनाव में क्या होगा, कौन-सी हीरोइन का चक्कर किसके साथ है, कुल मिलाकर ये जानना हो कि आपकी आसपास की दुनिया में क्या हो रहा है, तो बस जुम्मन मियाँ के सैलून में जाकर बाल कटा लीजिए। 20-25 मिनट में जुम्मन मियाँ जो खबरें सुना देते हैं कि उसके आगे पूरे देश का मीडिया फेल है।

पिछले हफ्ते जब शेव कराने गया तो देखा बहुत भीड़ थी, मैंने कहा बाद में आता हूँ जुम्मन मियाँ। झट से बोले- "रुको मियाँ इसके बाद कर देते हैं। तुम तो सुबह ही नंबर लगा के गए थे।"

"और बताइये क्या हाल चाल जुम्मन मियाँ?"

"क्या बताएँ बाबू, हाल वही हैं बस पिक्चरें बदल रहीं हैं और चाल का हमसे क्या पूछ रहे हो!"

"और सुनाइये, क्या चल रहा है मुहल्ले में?" मैंने सोचा अगले 20-25 मिनट का पूरा सदुपयोग किया जाए।

"दीक्षित जी वाला बताया था क्या तुम्हें?"

"नहीं, बस यही बताया था, दीक्षित जी बाल रंगवाने आते रहते हैं आपके पास।"

"अच्छा तो सुनो, अपने 25 नंबर वाले जो दीक्षित जी हैं न?"

"वही, जिनकी बहू मर गयी थी?" मैंने कन्फर्म करने के लिए पूछा।

"हाँ, वही ... दीक्षित जी के बारे में कुछ जानते हो क्या पहले से?"

"ज्यादा नहीं बस यही कि कोई सरकारी नौकरी में थे अब retire हो गए हैं।"

"हाँ! दीक्षित जी एक दम रहमदिल इंसान हैं और बेरहम अधिकारी थे। उनकी बहू जो मरी थी ना, वह असल में मरी नहीं थी, कुछ और चक्कर था।"

"क्या चक्कर, मैंने तो सुना था जब मरी, तो पेट से थी बेचारी।"

"हाँ! सही सुना तुमने मियाँ, बहू पेट से थी।"

"फिर तो और भी बुरा हुआ। दो जानें चली गयीं।"

"हाँ यार! बुरा तो हुआ, लेकिन पेट में जो बच्चा था, वो दीक्षित जी के लड़के का नहीं

था।"

"क्या जुम्मन भाई, अब बहू मर ही गयी है। अब तो उसके character की माँ-बहन मत करो यार!" मैंने जुम्मन मियाँ से नाराज होते हुए कहा।

"अमाँ! वही तो बता रहे हैं, बहू थी नहीं सही। बस यह था कि दीक्षित जी की बीवी के मरने के बाद से पूरा संभाल रखा था उसने।"

"जुम्मन मियाँ, आपको हुआ क्या है आज, दीक्षित जी की बहू के बारे में इतना कैसे पता है आपको?"

"यार, तुम हमारी बात सुनो, गलत नहीं बोला आज तक जुम्मन ने किसी के बारे में। उनके यहाँ जो लड़का काम करता है ना, वह भी यहाँ बाल कटाने आता है। वही बता रहा था कि बहूरानी ऐसे तो बहुत अच्छी हैं, लेकिन बाबूजी से हमेशा नाराज ही रहती हैं" जुम्मन भाई ने अपने ऊपर लग रहे इल्जामों की सफाई में तुरंत कहा।

"खैर, जो भी हो, तब भी बच्चा किसी और का कैसे हो सकता है?" मुझे भी अब दीक्षित जी की मरी हुई बहू के बारे में और जानने का मन हुआ।

ये वैसे ही जैसे आप किसी की ईमानदारी की तारीफ करिए, तो लोग विश्वास नहीं करते, लेकिन अगर किसी के character को लेकर कितना भी झूठा किस्सा अपने मन से बना के सुना दीजिये, तो लोग तुरंत मान जाते हैं, कोई सवाल नहीं पूछता।

मेरी शेविंग हो चुकी थी। लेकिन जुम्मन मियाँ की कहानी अभी शुरू ही हुई थी और मेरा मन एकाएक दीक्षित जी की मरी हुई बहू में अटक गया। भीड़ इतनी थी कि जुम्मन मियाँ को काम रोक के पूछ भी नहीं सकता था। 'ये कहानी अगली बार सुनूँगा आपसे' इतना कहकर मैं चल दिया।

लौटते हुए 25 नंबर घर भी पड़ा और पहली बार मैंने दीक्षित जी के घर में झाँका। वहाँ करीब 30 साल की एक लड़की रस्सी पर कपड़े डालते दिखी। लाल साड़ी, मोटी बिंदी, खूब सारे गहने पहने। मेरा तो सर ही चकरा गया कि जब बहू मर चुकी है, तो ये कौन है या सचमुच में भूत होते हैं। मेरे कदम तेज चलने लगे। जब तक घर पहुँचा, साँस तेज चल रही थी। मैंने आते ही माँ से पूछा-

"ये दीक्षित जी की बहू मर गयी थी ना?"

"हाँ! मर गयी थी, लेकिन तू क्यों पूछ रहा है?"

"फिर उनके घर में दूसरी लड़की कौन है?"

"दूसरी लड़की... कोई भी नहीं।"

इतना सुनने के बाद, मुझे पहली बार वो सारी कहानियाँ सच लगने लगीं, जो भूतों के नाम पर डराने के लिए सुनाई जाती रही हैं।

"क्यों क्या हुआ, कोई दिखा क्या वहाँ?"

"हाँ! आज लौट रहा था तो उनकी बहू दिखी थी।"

"चल पगले, कोई और होगा ....तुझे ही वहम हुआ होगा।"

पता नहीं वहम या असली लेकिन मेरा संडे का पूरा दिन दीक्षित जी की बहू के बारे में ही सोचते बीता। क्या हुआ होगा उसके साथ? पेट में बच्चा आखिर था किसका? या ये सब जुम्मन मियाँ के दिमाग का फितूर है!

जब शाम तक मेरा मन नहीं माना, तो मैं लौट के फिर जुम्मन मियाँ के पास पहुँचा।

रास्ते में फिर दीक्षित जी का घर पड़ा, लेकिन मेरी उधर देखने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने सोचा बाल भी बड़े हो गए हैं। एक हफ्ते पहले ही कटा लेता हूँ। जुम्मन मियाँ खाली थे। मैंने कुर्सी पर बैठते ही कहा-

"आज दिन में जब जा रहा था, तो दीक्षित जी के घर पर एक लड़की दिखी थी, उनकी बहू थी क्या?"

"हाँ!"

"लेकिन आपने तो कहा था बहू मर चुकी है?"

"यार, सुबह पूरी बात नहीं बता पाये थे, दीक्षित जी ने ज्यादा लोगों को बताया नहीं है मुहल्ले में। लेकिन उन्होंने लड़के की दूसरी शादी कर दी है, तो वही दिखी होगी तुम्हें।"

यह सुनकर कम-से-कम भूत वाला सस्पेंस खत्म हुआ, लेकिन वही सवाल मन में घूमने लगा कि पुरानी वाली बहू के साथ क्या हुआ होगा और वह बच्चा किसका था। जुम्मन मियाँ ने बात आगे बढ़ाई-

"जब देखने जाना था, उसके एक दिन पहले ही आए थे बाल रंगवाने।"

"लड़के की शादी में, वह भी लड़के की दूसरी शादी से पहले ससुर क्यों बाल रंगवाने लगा!" मैंने पूछा।

"यही तो बता रहे हैं गुरु, असल बात यही है। बाल तो दीक्षित जी पहले भी रंगवाते थे। उनका लड़का touring वाली नौकरी में है तो महीने में 15 दिन तो रहता नहीं है। कुछ चक्कर दीक्षित जी और बहू के बीच था। जो लड़का उनके यहाँ काम करता है वही बता रहा था। झूठ नहीं बोल रहे।"

"यार जुम्मन मियाँ मूड मत ऑफ करो, काम करने वाले लड़के ने बोला और आपने मान लिया बेचारी मर चुकी है। अभी वो क्यों मरे हुए के बारे में आप ये सब बोल रहे हो?" मैंने गुस्से में जुम्मन मियाँ को बोला।

"देखो मियाँ, हम पहले ही बता चुके हैं, कोई बात बस हम बताने के लिए नहीं बताते, पूरा सबूत है हमारे पास।"

"क्या सबूत?"

"मेडिकल की दुकान देख रहे हो न सामने?"

"हाँ! तो?"

"इसी दुकान से दीक्षित जी कैपसूल लेते थे।"

"अरे तो लेते होंगे, बुढ़ापे में दुनिया भर की बीमारी लगी रहती हैं।"

"मालूम है हमें, लगी रहती हैं, लेकिन ये बताओ मियाँ, बुढ़ापे में जिसकी बीवी मर गयी हो वो मर्दाना ताकत वाला कैपसूल अपने लड़के के लिए तो नहीं लेगा ना!"

"अरे तो किसी ने मँगा लिया होगा।"

"सही कह रहे हो, हम भी मान लेते हैं, चलो एक बार किसी ने मँगा लिया होगा, लेकिन तभी क्यों लेते थे जब लड़का tour पर रहता था?" जुम्मन मियाँ ने इस मामले की पूरी तहकीकात कर रखी थी।

यह ऐसी बात थी जिसका जवाब मेरे पास नहीं था, लेकिन फिर भी मेरा मन नहीं माना। सारी बात दीक्षित जी की हो रही थी और बहू का नाम खराब हो रहा था। जुम्मन मियाँ ने अगला सुबूत पेश किया।

“हवा में नहीं बोल रहे हम, अल्लाह झूठ न बुलवाए, ये बताओ बहू पेट से है या नहीं, इसका टेस्ट ससुर क्यों करेगा और आगे सुनो फिर बच्चा गिराने की दवा क्यों खरीदेगा, कोई ससुर कभी अपना बच्चा गिराता है क्या?”

इस बात के बाद मैं सोच में पड़ गया। जुम्मन मियाँ जिस हिसाब से बोल रहे थे, ऐसा लग रहा था दीक्षित जी के घर में झाँक कर आए हों और दीक्षित जी की बहू अब थी नहीं जो बता सके कि सही क्या है और गलत क्या है।

“दीक्षित जी की बहू मरी कैसे थी?” मैंने जुम्मन मियाँ से पूछा।

“देखो जो दुनिया को पता है वो कि बाथरूम में फिसल गयी थी और Brain haemorrhage हो गया था, लेकिन असल में उसने कोई जहर खा लिया था।”

“अब ये आपको कैसे पता?”

“पता इसलिए है, क्योंकि मुहल्ले वाले डॉक्टर साहब एक दिन बाल कटवाने आए थे। वही बता रहे थे, बहू का अंतिम संस्कार इतना जल्दी इसीलिए किया क्योंकि जहर के बाद रंग बदलने लगता है बॉडी का। इसलिए दीक्षित जी ने बहू के घर वालों के आने का इंतजार भी नहीं किया।”

यह बात सही भी थी। अब मुझे धीरे-धीरे सारे टुकड़े जुड़ते हुए नजर आ रहे थे। इतनी जल्दी दूसरी शादी भी कर दी लड़के की यह बात समझ ही नहीं आई।

“दूसरी शादी इतनी जल्दी क्यों कर दी?” मैंने जुम्मन मियाँ से पूछा।

“यार अब तुम इतना तो समझ गए होगे बुड्ढा है बहुत बड़ा ठरकी। बहू को मरे अभी 6 महीने भी नहीं हुए थे, तो एक दिन बाल रंगवाने आया था, उस दिन अलग ही रंग लगवाया उसने, मुझे दो बार डाँटा भी, यहाँ छूट गया वहाँ छूट गया।”

“तो, इसमें क्या है जुम्मन मियाँ ये शौक वाली बात है!”

“नहीं मियाँ, जो लड़का उनके यहाँ काम करता है उससे पूरी बात निकलवाई न!”

“क्या बात?”

“उस दिन लड़की वाले आने वाले थे, लड़की की शादी हुई थी लेकिन पहले दिन ही लड़के ने उसको छोड़ दिया था और इसीलिए दीक्षित जी ने लड़की वालों से ज्यादा पैसे भी नहीं माँगे।”

“एक तो जिस घर में एक बहू मरी हो, उस पर भी दीक्षित जी को दहेज चाहिए था!” मुझे दीक्षित जी से नफरत होने लगी।

“हाँ भइया, जुग-जमाना ऐसा ही है, दीक्षित जी अकेले नहीं हैं मुहल्ले में। खामख्वाह दीक्षित जी पर नाराज न हो तुम। वो बस जमाने के साथ चल रहे हैं।”

“दहेज लेने वालों से खतरनाक दहेज देने वाले होते हैं भाई जान।”

ये जुमला एकदम से जुम्मन मियाँ ने हवा में अपने पान की पीक के साथ थूक दिया।

“लड़की वाले छोटे घर से थे। घर पर लड़की बैठाते तो दुनिया जीने नहीं देती और मियाँ दिल्ली-मुंबई तो ये है नहीं कि जहाँ सब चलता है, यहाँ तो यहाँ के हिसाब से ही चलता है ना!”

इतनी देर से हमारी दीक्षित जी और उनकी बहू के बारे में बात हो रही थी। अचानक मुझे दीक्षित जी के लड़के का खयाल आया।

“दीक्षित जी का लड़का कभी बाल कटवाने नहीं आता आपके यहाँ?”

“आता है मियाँ, लेकिन साला आज तक उसको कभी कुछ बोलते नहीं सुना और हम भी अकेले ही बोल के बात नहीं कर सकते हैं न, नाई हैं, अम्माँ थोड़े हैं कि अकेले ही बोल के काम चला लें।”

जब जुम्मन भाई ने यह बात बोली उस दिन मुझे पहली बार यह खयाल आया कि माँ भी घंटों पता नहीं क्या बोलती रहती है और मैं कुछ भी नहीं बोलता फिर भी हमारी बात हो जाती है। माँ से बात करने में मुझे कभी बोलने की जरूरत ही नहीं हुई। बस ‘हाँ, हूँ’ से ही काम चल जाता है। बाकी सबके साथ भी कुछ ऐसा ही होता हो शायद।

मेरे बाल कट चुके थे लेकिन फिर भी उठने का मन नहीं कर रहा था। संडे था तो शाम को फिर से बाल कटाने के लिए लोगों का हुजूम लगा हुआ था। जुम्मन भाई की कहानियाँ बदलती रहीं। कभी किसी की बहू, तो कभी किसी की बेटी।

मेरा मेडिकल में selection हो गया, तो मैं वहाँ से दिल्ली चला गया। वहाँ जब भी बाल कटाने जाता, तो जुम्मन मियाँ के किस्सों की याद आ जाती।

इस बार जब दीवाली पर घर जाना था तो जानबूझ के बाल नहीं कटाये। सोचा जुम्मन मियाँ के यहाँ जा के बाल कटाऊँगा। इसी बहाने मुहल्ले भर का हाल मिल जाएगा।

घर पर गया तो माँ से पूछा मुहल्ले में क्या नया-पुराना, दीक्षित जी की नयी वाली बहू जिंदा है या वो भी चल बसी। माँ ने बताया दीक्षित जी को पोता हुआ है और बहुत ही अच्छी है नई वाली बहू।

अगले दिन फुर्सत में जुम्मन मियाँ के पास पहुँचा।

“क्या मियाँ दिखते नहीं हो!”

“बस क्या बताएँ जुम्मन भाई, दिल्ली चले गए हैं। डॉक्टर बन जाएँगे 2-3 साल में।”

“दीक्षित जी के क्या हाल हैं?” मुझे आज भी दीक्षित जी के बारे में जानने की इच्छा थी और उनसे ज्यादा नयी वाली बहू के बारे में जानने का मन था।

“दीक्षित जी का तो पूछो मत। उनकी पूरी ऐश हो रही है।”

“क्यों अब क्या हो गया?”

“पहले तो बाल रंगवाने आते थे, नई वाली बहू आने के बाद से बाल रंगवाने नहीं आते। उनका नौकर बता रहा था, बहू बड़ी सेवा करती है, वही रंग भी लगा देती है, घर पर ही।”

“तो इसमें क्या है जुम्मन मियाँ, बढ़िया ही है, सुना है पोता हुआ है उनको!”

“हाँ! सही सुना है मियाँ, अपनी बहू से कोई बाल रंगवाता है क्या?” जुम्मन भाई ने उदास होते हुए कहा।

“अब ये मत बताना मुझे कि पोता होने में कुछ योगदान दीक्षित जी का भी है!” ये बोलने के बाद हम दोनों ने जोर से ठहाका मारा।

मैं बाल कटा के चलने लगा, तभी जुम्मन भाई ने एक लिफाफा पकड़ाया। बोले-

“यार दीक्षित जी के लड़के का छूट गया है। बाल कटवाने बैठा ही था कि तभी घर से फोन आया, लड़का बिस्तर से गिर गया है। जल्दबाजी में छूट गया, अभी खुला भी नहीं है। उधर से जा रहे हो दे देना। किसी डॉक्टर की रिपोर्ट है। आप भी तो डॉक्टरी पढ़ रहे हो!”

डॉक्टर की रिपोर्ट सुनकर, मैंने लिफाफा खोलकर देखा। उस रिपोर्ट में जो लिखा था

उसके मुताबिक दीक्षित जी का लड़का बाप बन ही नहीं सकता था। मुझे यकीन ही नहीं हुआ। मैंने रिपोर्ट दोबारा पढ़ी। तभी जुम्मन मियाँ ने पूछा-

“किस चीज की है, हम तो अँग्रेजी समझते नहीं हैं?”

“कुछ नहीं है। किसी और को भी दिखाई है क्या आपने?”

“नहीं मियाँ, आपने बताया डाक्टरी पढ़ रहे हो, तो दिमाग में आया वरना हम तो भूल चुके थे।”

“कोई बात नहीं। लाओ, मैं पहुँचा देता हूँ दीक्षित जी के यहाँ।”

ये कहकर मैं सैलून से चल दिया। पुरानी वाली बहू इसीलिए शायद अच्छी नहीं थी क्योंकि वो दीक्षित जी के हिसाब से नहीं चली। नयी वाली इसीलिए अच्छी थी, क्योंकि पोता तो लायी ही, साथ में दीक्षित जी के हिसाब से भी चली। वो रिपोर्ट मैंने नाले में फेंक दी। अब जब भी कभी किसी के घर में किसी की बहू के मरने की खबर सुनता हूँ, तो दीक्षित जी की बहू की याद आ जाती है।

लोलिता

हर स्कूल में एक ऐसी लड़की होती है जिसको अपनी उम्र से ज्यादा पता होता है। जो सभी लड़कियों को अंदर की सारी बातें बताती है। जिसका चक्कर केवल एक लड़के के साथ नहीं होता। जिस उम्र में लोग हाथ पकड़ने और 'किस' वगैरह पर अटके होते हैं, उस उम्र में वो लड़की अपने समय से आगे के कुछ सच जान-देख चुकी होती है; महसूस कर चुकी होती है।

उस लड़की की बदनामी न हो इसलिए उसका नाम लोलिता रख लेते हैं। वैसे भी ऐसी कहानियों में नाम में ज्यादा कुछ रखा नहीं होता और सच पूछिए तो ये सारी कहानियाँ सभी को पहले से पता भी होती हैं। फिर भी ये कहानियाँ कभी नाम बदल के, तो कभी शहर बदल के बार-बार सुनाई जाती हैं।

मैं लोलिता के साथ ट्यूशन पढ़ता था। वो पढ़ने में बहुत अच्छी नहीं; तो बहुत खराब भी नहीं थी। हाँ बाकी लड़कियों से अलग एक आदत थी उसमें कि वो लड़कों की आँखों-में-आँखें डाल कर देख लेती थी। बाकी लड़कियाँ थोड़ा शरमाती थीं और कई लड़कों को शरमाती हुई लड़कियाँ प्यार के लिए बहुत अच्छी लगती हैं। घूरने वाली लड़की को हमेशा ही अलग नजर से देखा जाता है। लोलिता वाले बैच में पढ़ने के लिए हमेशा ही कोचिंग के लड़के लालायित रहते थे। सभी को वही टाइम सूट करता था, जब लोलिता ट्यूशन आती थी। एक और खास बात थी लोलिता में, वो अकेली लड़की थी जो बदतमीजी करने पर लड़कों को माँ-बहन की गाली दे लेती थी। और शायद वही अकेली लड़की थी; जो गाली समझ भी लेती थी।

बहुत सारी कहानियाँ थीं उसके बारे में कि वो pregnant हो चुकी है एक बार। और जिस लड़के ने ये सब किया था उसके बड़े भाई ने लोलिता को abort कराया था। तभी तो वो 15 दिन तक नहीं आई थी। फिर उस लड़के के बड़े भाई के साथ भी उसका कुछ चक्कर था, उन्होंने भी वही सब किया जो उस लड़के ने लड़कपन में किया था। कुछ फोटो और विडियो भी बना लिए थे उसके बड़े भाई ने; जिसको दिखाने का डर दिखा के वो बार-बार वही सब करने लगे थे; जो वो लड़का केवल एक बार कर पाया था।

एक और कहानी थी लोलिता के बारे में कि उसका स्कूल के English वाले सर के साथ भी कुछ चक्कर था। वो लोलिता को घर पढ़ाने आते थे और एक दिन जब घर पर कोई नहीं था तो लोलिता ने जान-बूझ कर सर के कपड़ों पर कोल्ड ड्रिंक गिरा दी और

पोंछने के बहाने उनको excite किया। वो हमेशा चुईंगगम खाती रहती थी, वही चुईंगगम उसने सर के होंठों पर चिपका दी। सर आखिर तक मना करते रहे लेकिन लोलिता कहाँ मानने वाली थी। उसने सर को बहुत फटकार भी लगाई कि इतने बड़े और समझदार होकर भी अपने पास कंडोम नहीं रखते। तब से इंग्लिश वाले सर का पर्स थोड़ा मोटा रहने लगा था और वो कंडोम रखकर सही मायनों में बड़े और समझदार हो गए थे। ये बात स्कूल के सभी शरीफ घरों के लड़कों ने नोटिस की थी।

बाकी लड़कियों से बहुत तेज Scooty चलाना, लिपस्टिक लगाना, मॉल में स्कूल बंक करके मूवी देखने की लोलिता की आदत के बारे में स्कूल की सभी लड़कियों को पता था। इसी वजह से कुछ लड़कियाँ लोलिता से बहुत चिढ़ती भी थीं। उन दिनों लड़कों को लड़कियों का liberal होना उतना नहीं अखरता था जितना लड़कियों को लड़की का liberal होना।

जब भी ट्यूशन में उसे देखता तो ये सारी कहानियाँ दिमाग में चलने लगतीं। वो जैसी उस समय दिख रही होती वैसा देख ही नहीं पाता मैं, कभी कोल्ड ड्रिंक गिराती; तो कभी कंडोम का पैकेट खोलती; तो कभी smooch करते हुए फोटो खिंचाती हुई दिखने लगती। कभी मैं इंग्लिश का टीचर बन जाता तो कभी वो लड़का और कभी तो उस लड़के का बड़ा भाई।

ऐसे ही मैं उसकी तरफ देख रहा था एक दिन और वो भी मेरी तरफ देखने लगी। हालाँकि कोशिश मैं यही करता था कि वो मुझे देख न पाए। मैं वही सब सोचने पर मजबूर था; जो कहानियाँ मैंने सुन रखी थीं। ट्यूशन से बाहर निकल कर जब मैं बाइक लेकर जाने लगा तो गली के मोड़ पर उसने मुझे रोक लिया-

“बहुत दिनों से देख रही हूँ; घूरते क्यों रहते हो? कभी लड़की नहीं देखी?”

इस सवाल की मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी। मेरे मुँह से बस ‘sorry’ निकल पाया।

“आगे से ध्यान रखना बच्चू।”

इतना कहकर वो scooty लेके उड़न-छू हो गई और मैं उसको तब तक देखता रहा जब तक वो दिखना बंद नहीं हो गई। इतने में ट्यूशन वाले लड़कों ने मुझे पकड़ लिया-

“क्या बात है बे, आज तो लोलिता से बात कर रहा था!” एक ने पूछा

तभी दूसरा चिल्ला कर कहने लगा- “क्यों बे, साले तेरा भी चक्कर शुरू हो गया क्या? मजा लूट लिया तूने भी। पूरी कहानी सुना...”

ऐसे ही न जाने कितने लड़के अपने मन से कुछ-न-कुछ बोलने लगे। मुझे शुरू में बड़ा अटपटा लगा लेकिन फिर अच्छा लगने लगा। मैंने किसी को भी किसी बात की सफाई नहीं दी। सच क्या है ये किसी को नहीं बताया। जो जैसा समझता रहा, मैंने उन्हें वैसा ही समझता हुआ रहने दिया। वैसे भी दुनिया के आधे सच झूठ हैं और आधे झूठ सच और कभी-कभी सच और झूठ दोनों में कोई भी फर्क नहीं होता।

ट्यूशन से लौट कर बहुत देर तक किताब खोल के बैठा रहा। टाइम कब निकल गया पता ही नहीं चला। अगले दिन से मैंने उसको देखना बंद कर दिया। कभी भी नहीं देखता। एक दिन ऐसे ही मेरी नजर पड़ी कि वो मुझे देखे जा रही है। जैसे ही मेरी आँख मिली वो थोड़ा सकपका गई। बाहर निकलने पर मैंने बहुत स्टाइल से उसकी scooty को रोका।

“बहुत दिनों से देख रहा हूँ, घूरती क्यों रहती हो? कभी लड़का नहीं देखा?”

उसको शायद ही किसी ने ऐसे बोला हो। वो बिलकुल भी तैयार नहीं थी, उसके मुँह से बस सॉरी निकला और बड़े ही टशन में उसने कहा-

“चलो बच्चू अभी बाइक हटाओ सॉरी हो गया न, खुश रहो।”

“बच्चू नहीं मयंक; मयंक नाम है मेरा।”

“बाइक हटाओ, बच्चू।”

पता नहीं क्यों लेकिन मुझे बुरा नहीं लगा। फिर उसको तब तक देखता रहा जब तक वो दिखना बंद नहीं हो गई। ट्यूशन वाले लड़के आकर मेरी मौज लेते इससे पहले ही मैं वहाँ से निकल लिया।

अगले दिन वो ट्यूशन नहीं आई और मेरा मन बिलकुल भी नहीं लगा। टीचर ने बताया अगले दो दिन छुट्टी रहेगी जो लोग आज नहीं आए हैं, उनको बता दें। कोई भी लड़की उसकी दोस्त नहीं थी और न ही कोई लड़का उसको अपना दोस्त समझता था या समझना चाहता था। लड़के हमेशा ही दोस्ती से ज्यादा चाहते हैं और लड़कियाँ हमेशा दोस्ती को भी ज्यादा ही समझती हैं। मैंने अगले दिन ट्यूशन थोड़ा पहले ही पहुँच गया। वो टाइम पर आई और अंदर जाए इससे पहले ही मैंने उसे रोका-

“सुनो”

“क्या है?”

“आज ट्यूशन नहीं है, कल भी नहीं रहेगी”

“तो तुम क्यों आए हो?”

“मैंने सोचा तुम्हें कैसे पता चलेगा?”

मैं ये बोलते वक्त दुनिया का सबसे बड़ा बेवकूफ लग रहा था। जैसाकि हर लड़का कभी-न-कभी लगता ही है या लगने का सोचता है। ये बात अलग है कि इन सब चीजों को बेवकूफी बोला नहीं जाता।

“तो तुम मुझे बताने चले आए, Wow! so romantic!” लोलिता ने टोंट कसने वाले अंदाज में कहा।

फिर भी मुझे बड़ा अच्छा लगा सुनकर। लेकिन तभी वो गुस्से में बोली-

“You, all are emotional fools.”

अपनी scooty स्टार्ट करने लगी। मुझे बहुत बुरा लगा। एक तो बताने आया उस पर भी ये भाव खा रही है।

“मैंने बहुत सारी बातें सुन रखी हैं, तुम्हारे बारे में, सब सच हैं न?”

“कौन-सी बातें?” उसने बिना चौंके पूछा।

“बहुत सारी बातें, गंदी बातें। सब बता भी नहीं सकता। इतनी गंदी; तुम गंदी लड़की हो न?”

मैंने ये सारी बातें एक साँस में कह दीं और बाइक भगा ली। उसने मुझे रोकने की कोशिश की, लेकिन मैं रुका नहीं।

फिर ट्यूशन आना-जाना लगा रहा। वो भी आती रही लेकिन उसके बाद न उसने कभी मुझे घूरा और न मैंने उसे। लड़के मुझे उसके नाम से चिढ़ाने लगे थे। 11^{th} खतम होने के बाद एक महीने की छुट्टी हुई और मैंने सोच लिया था कि ट्यूशन का टाइम बदल

लूँगा। मैंने टाइम बदल कर अपना टाइम सुबह करा लिया, हालाँकि मुझे सुबह उठने से बहुत ही नफरत थी। लेकिन उस बात से ज्यादा इस बात से नफरत होने लगी थी कि एक 'लोलिता' टाइप लड़की भी मुझसे सेट नहीं हुई।

सुबह उठा तो जाता नहीं था, सो पहले दिन ही ट्यूशन पहुँचने में देरी हो गई। हाँफता हुआ पीछे की सीट पर पहुँचा तो देखा लोलिता मेरी बगल वाली सीट पर बैठी हुई है। मेरी सारी नींद ही खुल गई। 10 मिनट तक मैं पता नहीं क्या-क्या सोचता रहा। तभी उसने एक पर्ची पर सॉरी लिख कर मेरी तरफ बढ़ाया।

मैंने गुस्से से पर्ची फाड़ दी। लेकिन ज्यादा देर रहा नहीं गया मुझसे और मैंने अपने रजिस्टर के आखिरी पन्ने को फाड़ने के लिए खोला तो देखा कि पीछे के पन्नों पर पता नहीं क्या-क्या लिखा है। खैर मैंने एक पन्ना फाड़ के 'It's okay' लिख दिया।

"कैसे हो बच्चू?"

"मेरा नाम मयंक है।"

"मुझे बच्चू बोलना cute लगता है।"

"मुझे मयंक सुनना ही पसंद है।"

"ओके, कोशिश करूँगी।"

"ठीक है। कैसी रही छुट्टियाँ?"

ऐसे ही इधर-उधर की न जाने कितनी बातें होने लगीं पर्चियों के जरिये। न वो कुछ बोली, न मैं। ट्यूशन खतम होने पर भी हम एक-दूसरे से कुछ नहीं बोले। अगले दिन मैं फिर late पहुँचा और उसने एक जगह रोक रखी थी। उससे बात करने का लालच मैं छोड़ नहीं पाया और जैसे ही उस सीट की तरफ बढ़ने लगा, इतने में सर ने कहा कि वहाँ पीछे क्यों बैठ रहे हो? यहाँ आगे आ जाओ।

मैंने घबराहट में कहा- "आगे से गर्दन ज्यादा ऊँची करनी पड़ती है, यहाँ पीछे ठीक है।"

सर ने दोबारा नहीं पूछा, लेकिन कुछ लड़के बहुत कुछ फुसफुसाने लगे।

"कितना बोरिंग टॉपिक है न?" उसने पहली पर्ची आगे बढ़ाई।

"हाँ, बहुत ज्यादा।"

"वो वाली बात नहीं बताई तुमने!"

"कौन-सी वाली?"

"गंदी लड़की वाली, किसने कहा तुमसे?"

"सब कहते हैं।"

"क्या कहते हैं?"

"ये मैं बता नहीं सकता।"

"बताओ मुझे" वो जिद करने लगी और फिर मैंने किसी भी पर्ची का जवाब नहीं दिया।

2-3 दिन मैं उससे दूर बैठा, वो भी कुछ नहीं बोली थोड़ी नाराज दिख रही थी। मुझसे ही रहा नहीं गया और एक दिन ट्यूशन के बाद जाकर मैंने उसे एक पर्ची दी जिस पर 'सॉरी' लिखा था।

इस बैच में मैंने किसी भी लड़के से दोस्ती नहीं की। उसको भी कभी किसी लड़की से

बात करते नहीं देखा।

अगले दिन उसकी रोकी हुई जगह पर जाकर मैं बैठ गया। हम दोनों ही थोड़ा जल्दी आ गए थे, तब तक कोई भी आया नहीं था। उस दिन पहली बार हमने एक-दूसरे को पर्ची के बिना 'Hi' बोला।

"तुम्हें आज बात बतानी ही होगी।"

"तुम कुछ भी कर लो मैं कुछ नहीं बताने वाला" मैंने गुस्से से कहा।

"बताना तो पड़ेगा, after all we are friends."

फ्रेंड्स वाली बात कुछ अलग ही असर करती है। इस दुनिया के सारे अधूरे प्यार दोस्ती पर खतम होते हैं और करीब-करीब सारे पूरे प्यार दोस्ती से शुरू होते हैं। इस फ्रेंड्स वाली बात पर मैं पिघल गया।

"यहाँ नहीं बता सकता, लेकिन बता दूँगा।"

"Promise?" जैसे हर लड़की promise बोलती है वैसे ही उसने भी बोला।

"हाँ! promise." और मैंने उसे अपना मोबाइल नंबर दे दिया।

उसने तुरंत अपने बैग से मोबाइल निकाल के एक forwarded message भेजा

"SMS: life is like a garden, love is like a rose."

उस दिन, दिन भर मैं उसकी कॉल का wait करता रहा लेकिन कोई कॉल नहीं आई। खीज के मैंने ही sms किया।

"U there" उसका कोई रिप्लाई नहीं आया।

जब मैं रात का खाना खा रहा था, तभी फोन बजा। मैंने उसका नंबर सेव नहीं किया था, लेकिन मुझे नंबर याद हो गया था। मैं फटाफट खाना छोड़ के फोन लेकर अपने कमरे में भागा। मम्मी ने बहुत डाँटा लेकिन मैंने बहाना बना दिया। मम्मी को डाँटते सुनकर वो बहुत हँसी।

"वाह बच्चू, अभी भी मम्मी डाँटती हैं!"

मुझे बहुत चिढ़ लगी, लेकिन उससे पहली बार फोन पर बात करने के आगे मैं सब भूल गया।

"क्यों तुम्हारी मम्मी नहीं डाँटती?"

"नहीं, कभी नहीं डाँटती।"

"वाह बहुत अच्छी बच्ची हो न तुम!"

"नहीं, मेरी मम्मी नहीं हैं।"

मुझे समझ ही नहीं आया कैसे react करूँ। मैंने सॉरी बोला और फोन रख दिया। फिर सॉरी का एक sms भी कर दिया। उसने कोई reply नहीं किया।

अगले दिन ट्यूशन के बाद उसने मुझसे कहा कि मैं उसके घर आऊँ। मैंने सुन रखा था कि जिस लड़के ने लोलिता को pregnant किया था उसके भइया पूरी नजर रखते हैं कि लोलिता के घर कौन आता जाता है। एक-दो लड़कों को तो तोड़ भी चुके हैं। मैंने मना कर दिया लेकिन मन नहीं माना और SMS करके मैंने एड्रेस लिया और पूछा कब आऊँ। उसने रिप्लाई किया कि दिन में कोई नहीं रहता घर में। आई रहती है, वो भी सो जाती है, तब आ जाओ। घंटी मत बजाना। उसने जैसे-जैसे बताया था, मैं वैसा-वैसा करके उसके घर आ गया। वो मुझे लेकर अपने कमरे में गई और पता नहीं क्यों थोड़ी देर तक हम कुछ

नहीं बोले। इसके बाद वह अपनी मम्मी की फोटो दिखाने लगी। उसकी आँखें बिल्कुल अपनी मम्मी जैसी थीं, बाल उन्हीं की तरह काले। वह छोटे बच्चे की तरह खुश थी। कभी-कभी वो मेरे इतने करीब आ जाती कि बस...। इधर मेरे मन में जाने क्या-क्या चल रहा था। मेरी धड़कनें तेज हो गई थीं और घबराहट में मेरा गला सूख रहा था और मैं बार-बार थूक निगलकर normal होने की कोशिश कर रहा था। मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। मैं सोच रहा था कि कब ये सब खतम हो। उसने मेरी तरफ देखा। शायद उसे मेरी हालत का अंदाजा हो गया था। उसने मुझसे पूछा- "कोल्ड ड्रिंक पियोगे?" मुझे इंग्लिश के सर वाली कहानी याद आ गई। मुझे लगा कि वही सब मेरे साथ भी होगा।

"हाँ! पीऊँगा।"

"2 मिनट रुको।"

उसके जाते ही मैंने अपने बैग में कंडोम चेक किया। कितनी मुश्किल से खरीद के लाया था। दो दुकान वालों ने तो दिया ही नहीं था। ये भला हो बिग बाजार वालों का, शैम्पू, नमकीन वगैरह के साथ ये भी डाल लिया था।

उसने कोल्ड ड्रिंक मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा-

"आज पूरी बात बताओ।"

"कौन-सी बात?"

"मुझे गंदी लड़की क्यों बोला था तुमने?"

"सब बोलते हैं।"

"क्यों बोलते हैं?"

"क्योंकि तुम्हारा चक्कर इंग्लिश वाले सर के साथ है। तुमने abortion भी कराया है और..."

लोलिता की सारी कहानियाँ जो मैंने सुनी थीं लोलिता को फटाफट सुना दीं। वह सुनती रही, कुछ भी नहीं बोली। ये सब बोलने के बाद मुझे लगा कि अब वह और कितने हिंट देगी। मुझे ही कुछ करना होगा। मैं उठा और उसको जोर से पकड़कर उसके होंठों पर kiss करने लगा। वह चिल्लाई कि मैं ये क्या कर रहा हूँ और अपने-आप को छुड़ाने की कोशिश करने लगी। मैंने कहा- "वही जो इंग्लिश वाले सर ने किया है, उस लड़के ने जो किया है वही सब करना है मुझे तुम्हारे साथ, और अब तुम अच्छा बनने का नाटक मत चालू करो समझी।"

उसने अपना हाथ छुड़ाकर अपनी कोल्ड ड्रिंक मेरे मुँह पर फेंक दी। मुझे लगा ऐसे ही शायद उसने इंग्लिश वाले सर के साथ पहले किया होगा। अब वो मुझे कपड़े change करने के लिए बोलकर excite करेगी।

"मैं कंडोम भी लाया हूँ।"- मैंने जैसे ही यह कहा वह गुस्से से एकदम लाल हो गई। इतना गुस्सा, जिसमें आँखों में पानी आने लगता है और बोली-

"उस टीचर ने मुझ पर कोल्ड ड्रिंक गिराई थी और मैंने उसको ऐसा मारा कि वह जब यहाँ से गया तो चल भी नहीं पा रहा था और उस लड़के ने भी यही कोशिश की थी उसको भी मैंने ठीक कर दिया।"

फिर वो पता नहीं किस-किस को माँ-बहन की गाली देने लगी। कुछ नाम वही थे जिनकी कहानियाँ मैंने सुन रखीं थी। वह कहते-कहते रोने लगी और मेरे मुँह पर ग्लास दे

मारा। मेरे होंठों से खून आने लगा। मैं बहुत देर तक मार खाता रहा, भागा नहीं। वो मुझे मारते-मारते थक गई और मैं एक पर्ची पर सॉरी लिख कर चल दिया। इसके बाद 4-5 दिन मैं कोचिंग नहीं गया और मैंने टाइम बदलवा कर शाम को कोचिंग जाना शुरू कर दिया था।

3 महीने बाद एक और कहानी जुड़ गई थी लोलिता की कहानियों में। सब लड़के मुझे दिखा के बताते थे- “मयंक ने भी मजे लिए हैं साली से, इतना wild थी कि उसने इसके होंठ काट लिए।”

“साले की किस्मत बहुत फाड़ू है” किसी ने मेरे पीछे मेरे बारे में कहा और मैंने बाइक भगा ली।

Monkey-Man

नाम : दिनेश
उम्र : 23 साल
रंग : गेहुँआ
कद काठी : सामान्य
29 फरवरी 1999 से धनबाद से लापता है।
नाम : सुनीता
उम्र : 19 साल
रंग : गोरा
कद काठी : सामान्य
15 मार्च 1999 से गाजियाबाद से लापता है।
कोई भी जानकारी मिलने पर गुमशुदा तलाश केंद्र, नयी कोतवाली, दरियागंज, नयी दिल्ली, पिन-110002 पर संपर्क करें।

“इतने बड़े लोग कैसे खो जाते हैं मम्मी?” टीवी से नजर हटा कर बच्चे ने अपनी मम्मी से पूछा और गुमशुदा तलाश केंद्र का पता अपनी पेंसिल से कॉपी में नोट करने की कोशिश करने लगा।

लड़का पूरा पता नोट ही नहीं कर पाता था, पता बहुत ही जल्दी हट जाता था जैसे कि टीवी वाले चाहते ही नहीं थे कि अगर कहीं कभी, कोई गुमशुदा मिल जाए तो उन्हें बताया जाए।

“इतने बड़े लोग खो जाते हैं, तभी कहती हूँ कभी भी बिना बताए बाहर नहीं जाना। monkey-man ले जाता है बच्चों को, समझे?” मम्मी ने किचन में कुकर को गैस पर चढ़ाते हुए कहा।

“समझ गया। भूख लग रही है बहुत जोर से।” लड़के ने मम्मी की साड़ी में लिपटते हुए कहा।

“किस चीज की भूख लग रही है, बेटे को?”

“मैगी की।”

“रोज-रोज मैगी नुकसान करती है बेटा।” और लड़के के हाथ में दूध का ग्लास पकड़ाते हुए कहा-

“लो हॉर्लिक्स फटाफट पी जाओ, पता है ना, जो बच्चे हॉर्लिक्स नहीं पीते उन्हें

monkey-man पकड़ के ले जाता है?"

"monkey-man हॉर्लिक्स नहीं पीता न मम्मी?"

"नहीं पीता, तभी तो हॉर्लिक्स पीने वाले बच्चों से डरता है।" यह कहकर मम्मी खाना बनाने में busy हो गई और लड़का अपनी कॉपी में गुमशुदा तलाश केंद्र का अधूरा पता, याद करके पूरा करने की कोशिश में लग गया।

जैसा कि अमूमन होता है, वो सारी कहानियाँ, राजा की, रानी की, सुपरमैन की, ही-मैन की, डराने वाले भूतों की, सबसे खूबसूरत परियों की...सारी कहानियों की असलियत बच्चों को समझ आने लगती है और बच्चे बड़े होने लगते हैं। यही इस लड़के के साथ भी हुआ। लड़के का जैसे-जैसे monkey-man से डरना कम होता जा रहा था, वैसे-वैसे लड़का बड़ा होता जा रहा था। भीड़ में कई बार उसे कुछ चेहरों को देखकर लगता था कि शायद ये वही गुमशुदा लोग हैं जिनकी फोटो वह टीवी पर देखा करता था। गुमशुदा तलाश केंद्र का पता कॉपी में अभी भी अधूरा था।

लड़के का जिक्र बार-बार आ रहा है, तो अपनी सुविधा से उसका नाम राहुल रख लेते हैं। बार-बार लड़का बुलाना अच्छा नहीं लगता, ऐसा लगता है जैसे उसकी कोई पहचान ही नहीं है।

राहुल अब करीब 18 साल का हो चुका है। पढ़ने में बहुत अच्छा तो नहीं, पर ठीक-ठाक है। इंजीनियरिंग की तैयारी के चक्कर में इस साल ड्रॉप किया है। क्लास के सारे लड़कों की तरह IIT की तैयारी कर रहा है। ऐसा बिलकुल भी नहीं है कि IIT जाना राहुल का कोई सपना है, क्लास के बाकी बहुत से लड़कों की तरह। जो अपने मम्मी-पापा के सपने को पूरा करना ही अपना सबसे बड़ा सपना समझते हैं और ऐसा करके जिंदगी भर खुश रहते हैं। उनका लड़का भी यही करता और फिर उनका लड़का भी यही करता है। यह सिलसिला उतना ही पुराना है, जितनी कि दुनिया। हजारों लड़के हर साल ऐसे ही अपने मम्मी-पापा का सपना पूरा करते जाते है। पेपर में छपते हैं। कोचिंग के बाहर लगी बड़ी-सी hoarding में टँगते हैं। ये सपना पूरा करने वाले लड़के, कुछ लड़कों के लिए inspiration के काम आते हैं, तो कुछ कोचिंग वालों के लिए अगले बैच से फीस बढ़ाने के।

राहुल थोड़ा अलग है। जब बाकी लड़के फिजिक्स के फंडे समझने लगे हैं, तब राहुल मम्मी की पापा से लड़ने की वजह समझने लगा है। उसको पता है कि उन तीनों के बीच कोई चौथा भी है।

गलती से उसने एक दिन पापा का मोबाइल किसी काम से उठाया तो उसमें शगुन महरोत्रा के कुछ sms दिखे। शगुन और पापा के सारे sms पढ़ने से वह अपने आप को रोक नहीं पाया। वे sms ऐसे नहीं थे कि वह अपनी मम्मी को इसके बारे में कुछ बता पता। इस बात के बारे में उसने अपनी मम्मी से कभी कुछ बोला नहीं, इसकी वजह से पापा से जितनी नफरत होनी चाहिए थी उतनी नफरत भी नहीं हुई उसे। एक-दो बार उसे यह खयाल आया कि एक दिन अपने पापा से वो खुद ही बात कर ले, लेकिन यह उसने ठीक नहीं समझा। उसको यही लगता था कि जब वह अपने हिसाब से जीना चाहता है, तो अपने पापा को कैसे बोले कि मम्मी के हिसाब से चलें। यह शगुन से affair वाली बात इतनी बुरी लगती नहीं थी राहुल को। वह शगुन से मिला था एक-दो बार, पापा के

ऑफिस की पार्टी में। एक-दो बार शगुन घर भी आई थी। राहुल की मम्मी को वह दीदी बोलती थी। शगुन महरोत्रा, दिल्ली की रहने वाली, दिखने में एकदम राहुल की क्लास टीचर जैसी। राहुल को उससे बात करना अच्छा लगता था। क्यों अच्छा लगता था यह तो राहुल को भी नहीं पता था, बस अच्छा लगता था।

जब शगुन घर आई थी, तो राहुल से उसकी लंबी बातचीत हुई थी-

"कैसी तैयारी चल रही हैं dude?"

"Dude?"

"हाँ, IIT में सारे dude ही तो जाते हैं।" शगुन ने कहा।

"किसने बोला आपको?" राहुल ने हँसते हुए पूछा।

"तुम्हारे पापा ने कहा, my son is dude, he will go to IIT"

यह सुनकर राहुल बहुत देर तक हँसता रहा। यह देखकर राहुल की मम्मी को अच्छा नहीं लग रहा था, फिर भी राहुल शगुन के पास रहा।

"जो IIT नहीं जाते, वे dude नहीं होते ना?" राहुल पूछकर फिर हँसने लगा। फिर अपने पापा को दिखाकर शगुन से बोला-

"पापा को देखो, वो IIT से पढ़े हैं... कहीं से भी dude लगते हैं क्या वो?"

यह सुनकर शगुन बहुत देर तक हँसती रही और राहुल की तरफ हाथ बढ़ाकर बोली-

"Friends?"

राहुल ने अपनी मम्मी की तरफ देखा और शगुन के हाथ को पकड़कर बोला-

"Friends, बस ये dude वाली बात पापा को मत बोलना।"

"अरे कभी नहीं, बोला न friends"

फिर दोनों बहुत देर तक हँसते रहे, मम्मी बहुत देर तक गुस्सा होती रहीं, पापा बहुत देर तक खुश होते रहे। शगुन के जाने से पहले राहुल उसे अपना कमरा दिखाने ले गया और कमरे में जाते ही उससे पूछा-

"एक बात बताओ आप?"

"क्या, पूछो?"

"Do you love papa?, आप सच बोल सकती हैं। मुझे बुरा नहीं लगेगा।"

"राहुल, ये सब बहुत complicated है मेरे लिए।"

"Do you love papa or not, this is very plain and simple question" राहुल ने थोड़ा गुस्से में कहा।

"हाँ करती हूँ।"

"और वो, पापा भी?"

"पता नहीं...सारी गलती मेरी ही है..." शगुन अभी कुछ बोल ही रही थी लेकिन राहुल ने उसको रोक दिया और बोला कि उसको कोई justification, कोई जवाब नहीं चाहिए बस वह अब जा सकती है। यह सुनकर शगुन की आँखों में आँसू आ गए। जिनको छिपाकर वह तुरंत राहुल के कमरे से चल दी।

राहुल ने अपने पापा से बोलना, बात करना करीब-करीब बंद ही कर दिया था जैसा कि इस उम्र में होता ही है। इसकी वजह शगुन बिलकुल भी नहीं थी। राहुल के लिए इंजीनियरिंग का यही मतलब था कि बस कहीं एडमिशन हो और वह ये शहर छोड़ के

चला जाए कहीं। अपने मम्मी और पापा दोनों को ही झेलने में उसको दिक्कत होने लगी थी। अभी भी कई बार उसे लगता था कि उसकी शक्ल गुमशुदा हुए लड़के से मिलती है, जिसको टीवी पर दिखाया गया था, जब वह 9 साल का था।

झगड़ा इस कदर बढ़ चुका था कि राहुल के मम्मी और पापा ने सोच लिया था कि अब साथ नहीं रहा जा सकता। वकील ने ज्यादा-से-ज्यादा alimony निकलवाने के लिए राहुल की मम्मी से काफी फीस ली थी। वकील, राहुल की मम्मी और राहुल के पापा ने मिलकर ये सब तो निपटा लिया था कि हर महीने कितना पैसा राहुल की मम्मी को मिलेगा। वैसे भी राहुल के पापा के पास इतना टाइम waste करने के लिए था नहीं कि वे कोर्ट जाएँ, इसलिए वो out of court ही सबकुछ जल्दी-जल्दी settle करना चाहते थे। बाकी सारे सामान, गहने, प्रॉपर्टी बँटने के बाद अब झगड़ा इस बात पर हो रहा था कि राहुल किसके साथ रहेगा।

“तुम क्या खयाल रखोगे राहुल का, कुछ फिक्र नहीं की तुमने। लड़का बड़ा हो रहा है, क्या सोचेगा?” राहुल की मम्मी ने कहा।

“Enough is enough, मैं रख लूँगा खयाल उसका। He is my son, he is brave, रह लेगा।”

जब राहुल से पूछा गया तो राहुल ने अपनी मम्मी के साथ रहने को मना कर दिया। पापा ने राहुल को खुशी से गले लगा लिया और शगुन से कहा-

“I told you, my son is brave like me.”

शगुन भी वहीं थी, लेकिन वो कुछ नहीं बोली। मम्मी राहुल से इतना गुस्सा थीं कि जाने से पहले राहुल से मिली भी नहीं।

थोड़ी देर बाद शगुन राहुल के कमरे में गई। उसको लगा था राहुल रो रहा होगा, शगुन को देखकर राहुल बहुत देर तक कुछ नहीं बोला, न ही शगुन ने कुछ कहा।

“मुझे पापा के साथ भी नहीं रहना है, I don’t want to disturb you and papa” राहुल इतना बोला लेकिन यह सुनकर शगुन फफक कर रो पड़ी।

राहुल IIT की तैयारी से बहुत आगे निकल चुका था। IIT का result 10-june-2012 को आना था, उसने result पहले ही तय कर लिया था। 10-june को अपने टाइम से IIT का result भी आ गया। क्लास के कई लड़कों का हो गया था।

“dam it, हुआ कैसे नहीं तुम्हारा?, you can’t be my son” ऐसा कहकर पापा चिल्ला ही रहे थे कि इतने में उनके ऑफिस के subordinate का फोन यह बताने के लिए आया कि उसके लड़के का तो हो गया, राहुल का क्या हुआ।

पापा को इतना बुरा कभी नहीं लगा। उन्होंने फोन काट दिया। शगुन ने कुछ समझाने की कोशिश की। लेकिन राहुल के पापा बहुत देर तक राहुल को डाँटते ही रहे। तभी राहुल की मम्मी का फोन आया। राहुल के पास-

“नहीं हुआ।” राहुल ने बस इतना बोलकर फोन काट दिया।

मम्मी का फोन दोबारा आया, तिबारा आया, बहुत देर तक आता रहा। पापा से ये बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने फोन उठाकर राहुल की मम्मी से कहा-

“ये मेरा लड़का नहीं हो सकता, ले जाओ इसको यहाँ से।” और फोन रखने के बाद पापा बहुत जोर से चिल्लाए-

“हट जाओ सामने से।”

राहुल वहाँ से मम्मी के घर जाने लगा, तो शगुन ने पीछे से कहा- “पहुँच के कॉल देना राहुल।”

उसके बाद राहुल पापा के घर से, मम्मी के घर जाने के लिए चल दिया। दोनों घरों की दूरी कोई ज्यादा नहीं थी, लेकिन दोनों के बीच फासला बहुत हो चुका था। जब शाम तक राहुल का फोन नहीं आया तो शगुन ने राहुल के पापा को कहा कि पता करें कि वो अभी पहुँचा कि नहीं। राहुल के पापा का गुस्सा अभी भी कम नहीं हुआ था। उन्होंने कुछ नहीं किया। थोड़ी देर बाद शगुन से रहा नहीं गया उसने ही राहुल की मम्मी को, राहुल के पापा वाले नंबर से खुद ही कॉल किया। पता चला राहुल अभी तक नहीं पहुँचा। अक्सर कम दूरी तय करने में ज्यादा समय लग ही जाता है। जैसे ट्रेन में एसी वाले डिब्बे की जनरल वाले डिब्बे के बीच की दूरी केवल कुछ डिब्बों की नहीं होती, कुछ सौ पचास मीटर की नहीं होती, कई सालों की होती है।

थोड़े दिन बाद राहुल की मम्मी ने case कर दिया कि राहुल के पापा के साथ मिलकर उस डायन शगुन ने राहुल को गायब कर दिया है। राहुल कहाँ गया, किसी को भी पता नहीं। 3-4 महीने बाद सामान पलटते हुए शगुन को राहुल की टेबल पर गुमशुदा तलाश केंद्र का पूरा पता लिखा हुआ मिला। उसने तुरंत ही राहुल की एक फोटो और बाकी डिटेल्स नोट करके गुमशुदा तलाश केंद्र पर भेज दिया। शगुन को उम्मीद थी कि शायद उसका दोस्त उसको वापस मिल जाए। कई बार प्यार और दोस्ती में से एक ही चीज बच पाती है।

“नाम : राहुल

उम्र : 21 साल

रंग : साँवला

कद काठी : सामान्य

नीली जींस और लाल T-शर्ट पहना हुआ। 10 जून 2012 से दिल्ली से लापता है।

कोई भी जानकारी मिलने पर गुमशुदा तलाश केंद्र, नयी कोतवाली, दरियागंज, नयी दिल्ली, पिन-110002 पर संपर्क करें।”

दिल्ली के किसी घर में एक 10 साल का लड़का टीवी देखकर, हॉर्लिक्स पीते हुए-

“हॉर्लिक्स नहीं पीता होगा मम्मी, तभी monkey-man पकड़ के ले गया होगा।”

उधर दिल्ली दूरदर्शन के ऑफिस में एक दिन-

“भोजपुरी फिल्म के प्रमोशन के लिए आया है सर, distributor अच्छा पैसे देने को तैयार है। वो भी ‘ऑफलाइन’। गुमशुदा वाले स्लॉट में चला दूँ, वैसे भी आज तक कोई गुमशुदा मिला तो नहीं।”

लिखे जाने तक राहुल का कुछ पता नहीं चल पाया है।

Sangam Caterer

बहुत ही अजीब हो जाता है जब भी कभी आपको सांत्वना व्यक्त करनी पड़े, sympathy दिखानी पड़े। कई ऐसे मौके आते हैं जब आपको किसी के बाप के मरने पर कोई दुख नहीं होता। न ही किसी की लड़की के घर से भाग जाने पर ढेला भी फर्क पड़ता है। लेकिन समाज की रघुकुल रीत ही कुछ ऐसी है कि सांत्वना दर्ज करानी ही पड़ती है। कुछ लोग इसके expert होते हैं। दूसरे के दुख में दुखी होने से जो सुख उन्हें मिलता है, उस परमानंद का आप पूछिए ही मत। वे तो जैसे इस इंतजार में ही साँस लेते हैं कि किसी पर कोई दुख पड़े और सांत्वना प्रकट करने पहुँच जाएँ। ऐसे ही एक अंकल थे हमारे मुहल्ले में, पांडे अंकल। retired थे लेकिन tired नहीं थे। दूसरे का कुछ अच्छा सुन लेते थे तो उस दिन खा नहीं पाते थे बेचारे। कब कौन मरा, किसकी लड़की किसके साथ भागी, किसका तलाक का मुकद्दमा चल रहा है, किसके लड़के का दो साल की तैयारी के बाद भी IIT में selection नहीं हो पाया, कौन suspend हुआ वगैरह-वगैरह। दुख को इतना आत्मसात कर लेते थे कि आँसू भी चुटकी बजाते ही बहा देते। ऐसे जैसे कोई अपनी मर्जी से थूकना चाहता है तो थूक लेता है, कोई अपनी मर्जी से कान खुजाना चाहता है तो खुजा लेता है। तेरहवीं के खाने से कुछ विशेष लगाव था उन्हें, जिस दिन तेरहवीं खाकर लौटते थे तो मूड अच्छा रहता। उस दिन घर पर किसी भी बात से नाराज नहीं होते थे।

कुछ लोग सुख में ज्यादा खा लेते हैं और दुख में खा नहीं पाते। पांडे जी आदत से एकदम कम्युनिस्ट थे। inter-caste शादी हो या तेरहवीं दोनों में समान भाव से खाते थे।

एक शादी में, पास से गुजरे किसी को सुनाते हुए जा रहे थे-

“मिश्रा जी के लड़के ने तेरहवीं का जो खाना बनवाया था, बहुत ही अच्छा था। अच्छा खाना तो साहब आजकल तेरहवीं में ही मिलता है। बारात का खाना बस खानापूर्ति ही हो गया है।”

मुझे बड़ा अजीब लगा कि शादी में भी कोई तेरहवीं के खाने की बात करता है।

पांडे जी को एक दिन सुबह-सुबह खबर मिली कि मुहल्ले वाले बबलू के पिताजी नहीं रहे। बस तुरंत अपनी बीवी को चमकाते हुए बोले-

“अरी सुनती हो, जल्दी नाश्ता बना दो। बबलू के यहाँ जाना है, वहाँ टाइम लग जाएगा और इसी बहाने से सबसे मुलाकात भी हो जाएगी।”

जल्दी-जल्दी नाश्ता-वाश्ता निपटाकर पांडे अंकल बबलू के यहाँ पहुँचे। बबलू बैठा हुआ पराठे खा रहा था। पूरे तीन आलू के पराठे खाने के बाद उसने अंकल की तरफ देखा और अंकल को देखते ही अपनी बहन से बोला-

"दीदी प्लेट हटा लो, अब खाया नहीं जा रहा।"

इधर बबलू को देखते ही पांडे जी ने पहले से ही अपने आँसू पोंछने शुरू कर दिये। खैर थोड़ी देर में दो आँसू आ भी गए।

"बड़ा कष्ट हुआ बबलू बेटा, अभी मिश्रा जी की तेरहवीं पर मुलाकात हुई थी पिताजी से, diabetes थी क्या पिताजी को?"

"नहीं अंकल।"

पांडे जी सांत्वना का अगला बाण चलाते हुए पूछते हैं-

"तो फिर एकदम से कैसे?"

"बस अंकल, ब्लड प्रेशर का थोड़ा प्रॉब्लम था।" बबलू ने सांत्वना का बाण लेते हुए बताया। इतना सुनकर अंकल जीवन-दर्शन का वो अध्याय दोहराए, जो केवल जीवन के बाद ही दोहराया जाता है।

"बस बेटा आजकल ब्लड प्रेशर तो सबको हो ही जाता है। प्राइवेट नौकरी वाले चूस लेते हैं आदमी को। तनख्वाह के साथ ब्लड प्रेशर तो जैसे हर महीने बोनस में मिलता है।"

बबलू को समझ नहीं आ रहा था क्या बोले, पचास लोगों से और मिलना था। अंकल चिपक गए थे।

"चलो बेटा, पिताजी की आत्मा को शांति मिले। पूजा-पाठ, खाने-पीने के इंतजाम में कोई कसर न छोड़ना, वैसे तेरहवीं कब की पड़ी है?"

"चौदह तारीख को।" बबलू ने थोड़ा झुँझलाते हुए कहा।

"ठीक है बेटा, वैसे संगम कैटरिंग वाले के खाने का इंतजाम बहुत अच्छा रहता है। बाकी तुम देख लेना डिस्काउंट भी अच्छा दे देता है... मिश्रा जी वाले में उसी का इंतजाम था। तुम्हारे पिताजी को मिश्रा जी की तेरहवीं का खाना बहुत पसंद भी आया था।"

"नमस्ते अंकल," बबलू ने बीच ही में बात काट दी।

पांडे जी को बीच ही में बात कटने की आदत थी, सो इन छोटी-छोटी बातों का ज्यादा बुरा नहीं मानते थे। चलने से पहले बबलू के कान में फुसफुसा दिए-

"थाली के हिसाब से सही रहता है बेटा।"

बबलू के पिताजी का क्रिया-कर्म करके जब शाम को घर पहुँचे तो पड़ाइन ने जानना चाहा-

"क्या हुआ था बबलू के पिताजी को?"

"कुछ नहीं, उम्र हो गई थी।" पांडे जी ने चेहरे पर बिना कोई भाव लाए कहा।

"कौन-कौन आया था?"

"आए तो कम ही लोग थे, लेकिन जितने भी आए थे, सबसे मुलाकात हो गई। वैसे भी बबलू के पिताजी का व्यवहार कोई ऐसा तो था नहीं कि सड़क पर जाम लग जाए।"

"अरे मरने के बाद किसी की बुराई क्यों करते हो?" पड़ाइन ने सलाह देते हुए कहा।

"जो जैसा था, वैसा ही कहेंगे न? अपने मन से अच्छा थोड़े बना देंगे।"

एक चीज और पांडे जी में अलग और अच्छी थी कि घर पर आकर आदमी जैसा था

वैसा ही बोलते थे। ये नहीं सोचते थे आदमी जिंदा है या मर गया। वरना समाज में आम चलन यही है कि मरने के बाद किसी की बुराई नहीं की जाती।

इधर कई दिनों से मुहल्ले अथवा रिश्तेदारी में ऐसा कुछ हुआ नहीं था जिससे पांडे जी का मन कुछ रमे अर्थात वो दुखरूपी सर्दी में सांत्वना रूपी गर्मी का एहसास किसी को करा पाएँ।

तभी दरवाजे की घंटी बजी, श्रीवास्तव जी अपनी लड़की की शादी का कार्ड देने आए थे। श्रीवास्तव जी ऑफिस में पांडे जी के जूनियर हुआ करते थे।

"बहुत-बहुत बधाई हो श्रीवास्तव जी! कैसे हैं?"

"सब आपका आशीर्वाद है पांडे साहब।"

"क्या करता है लड़का?"

"सॉफ्टवेर इंजीनियर है।"

"बहुत अच्छा... सॉफ्टवेर में है तो विदेश भी गया ही होगा?" पांडे जी ने कंफर्म करने के लिए पूछा। बकौल पांडे जी, जो भी सॉफ्टवेर इंजीनियर विदेश नहीं गया। वो असल सॉफ्टवेर इंजीनियर ही नहीं।

"हाँ वहीं था, अभी 2 महीने के लिए गया था, बता रहा था कि शादी के बाद पूरे एक साल के लिए जाना है। बेटी को साथ लेकर जाना चाहता है; तो शादी एकदम से करनी पड़ रही है।" श्रीवास्तव जी ने सीना थोड़ा-सा और चौड़ा करते हुए बताया।

तभी कार्ड पर पांडे जी ने लड़के का नाम पढ़ा, 'विशाल गुप्ता' और उन्हें मन-ही-मन उस सुख की प्राप्ति हुई जो इधर कई दिनों से नहीं हुई थी।

"लड़का गुप्ता है?" पांडे जी ने कंफर्म करने के लिए पूछा। कहीं ऐसा तो नहीं कार्ड पर गलत छप गया हो। श्रीवास्तव जी थोड़ा झेंपे, लेकिन पांडे जी कहाँ छोड़ने वाले थे। फिर भी हिम्मत करके श्रीवास्तव जी बोले-

"अब पांडे साहब, वो जमाना कहाँ रहा जब घरवाले शादी ढूँढ़ते थे। अब तो सब अपने-आप..."

इतना कहकर श्रीवास्तव जी रुक गए और पांडे जी की तरफ से नजर हटा कर झेंपने लगे।

श्रीवास्तव जी के झेंपने में जितना आनंद पांडे जी को आ रहा था, उसमें कमी न हो इसलिए तुरंत पड़ाइन को दो कप चाय बनाने को बोल दिए और धीमे से इशारा भी कर दिए कि चाय आराम से ही लाना।

चाय पी के आना और चाय पिलाना दोनों ही पांडे जी की स्वभावगत कमजोरियाँ थीं। खैर पांडे जी जब भरपूर आनंद ले चुके थे, तो श्रीवास्तव जी से पूछा-

"ये बताइए कैटरिंग किसकी है?"

"संगम वाला।"

पांडे जी की जान में जान आई।

"हाँ ये काम आपने सही किया, संगम वाले का इंतजाम बड़ा अच्छा रहता है। थाली के हिसाब से ही किया है ना?"

"नहीं, हमने कहा हम सामान दे देंगे।"

"अरे ये गलत कर दिया न आपने, सामान में हमेशा ऊँच-नीच रहेगी और लड़की की

शादी है। इतनी जिम्मेदारी से देख भी नहीं पाएँगे। आप एक काम करिए इसको थाली के हिसाब से कर दीजिए।"

"अच्छा, करते हैं। लेकिन अब दिन भी कम बचे हैं, संगम वाला मानेगा?" श्रीवास्तव जी ने आशंका व्यक्त की।

"अरे मानेगा कैसे नहीं, अगर न माने तो आप हमसे बात करवा दीजिएगा। हमारा पुराना जानने वाला है। मिश्रा जी की तेरहवीं पर, बबलू के पिता जी की तेरहवीं पर सब में इसी का इंतजाम था। बबलू को तो मैंने ही बताया था थाली के हिसाब से करना। केवल 55 हजार में निपट गया।" पांडे जी ने आशंका का निवारण करते हुए कहा।

इतने में चाय आ गई। ऑफिस में अपने एक-दो विरोधियों के प्रमोशन न पाने की खुशखबरी जब पांडे जी ने सुनी, तो श्रीवास्तव जी को ये सुनाने के लिए, धन्यवाद व्यक्त करने के अंदाज में पांडे जी बोले-

"शादी में हमारे लायक कोई भी काम हो तो, हमें बताइएगा जरूर।"

"जरूर पांडे साहब।" इतना कहकर श्रीवास्तव जी चलते बने।

शाम को पड़ाइन की रिश्तेदारी से खबर आई कि पांडे जी के साढ़ू भाई की लड़की अपने मन से शादी कर ली है और जुग-जमाने में कोई बात ज्यादा न फैले इसलिए साढ़ू भाई ने पांडे जी को बुलाया है ताकि एक हफ्ते के अंदर ही शादी धूम-धाम से कर दी जाए। लड़की ने मजबूरी में जो किया, सो किया, लेकिन जमाने में मजबूरी का पता न चले।

खबर सुनते ही पांडे जी को 'मोक्षानंद' जैसा कुछ प्राप्त हो गया। 'मोक्षानंद'- जब आदमी आनंद की पराकाष्ठा जीते जी प्राप्त कर लेता है। ठीक वैसा आनंद जैसा दुर्योधन को पांडवों को चौपड़ में हरा कर प्राप्त हुआ था और दुस्सासन को द्रोपदी का चीर हर कर प्राप्त होने वाला ही था। कुछ ऐसे ही आनंद की पराकाष्ठा पांडे जी को उपलब्ध हो गई। 5-10 मिनट उसी अवस्था में रहने के पश्चात पांडे जी होश में लौटे। हालाँकि पड़ाइन परेशान थीं, लेकिन पांडे जी बिलकुल भी परेशान नहीं थे। साढ़ू भाई के यहाँ पहुँचते ही बोले-

"देखिए, वो जमाना अब नहीं है जब घरवाले शादी ढूँढ़ते थे। अब तो सब अपने-आप होता है और सही भी यही है।" पांडे जी ने सांत्वना का पहला बाण निकालते हुए कहा।

"आपकी लड़की ने किया होता, तब पूछते क्या सही है क्या गलत, क्या बताएँ अब... पांडे जी बस नाक कटा दी लड़की ने। सब आप पर है, सारा इंतजाम हो गया है लेकिन कोई कैटरिंग वाला तैयार नहीं हो पा रहा है एक हफ्ते में।" साढ़ू भाई गुस्से और परेशानी के मिले-जुले असर के साथ करीब-करीब चिल्लाए।

"एक कैटरिंग वाला है तो, संगम वाला। बड़ा ही सही खाना बनाता है। हमारे मुहल्ले में पहले संस्कार से लेकर अंतिम संस्कार तक, A to Z सारा काम वही देखता है।"

"हाँ तो बात करिए उससे, पांडे जी।"

पांडे जी ने बात करके सारा मामला सेट कर दिया। संगम वाले ने कहा भी- "पांडे अंकल आपकी बात थी, वरना आजकल लगन का सीजन चल रहा है। मरने की भी फुर्सत नहीं है।"

खैर शादी साढ़ू भाई के हिसाब से धूमधाम से संपन्न हो गई। बारात में 500 लोगों ने

खाना खाया और संगम वाले ने बाकियों से 5% डिस्काउंट भी ज्यादा दिया। संगम वाले को पेमेंट थाली के हिसाब से ही हुआ। लड़की ने जो नाक कटाई थी। पांडे जी ने फटाफट इंतजाम कराकर थोड़ी सी नाक बचा ली।

दूसरे के दुख में सुखी और दूसरे के सुख में दुखी, इसी भाव से दिन और पांडे जी दोनों यूँ ही बीतते रहे। आखिरकार एक दिन रिटायर्ड पांडे जी टायर्ड हो ही गए। पांडे जी अंदर से चाहे किसी के बारे में जो भी सोचते हों, लेकिन सभी के यहाँ तेरहवीं में सांत्वना व्यक्त करने के कारण सब लोग समझते यही थे कि दुख में कोई आए, न आए पांडे जी जरूर आते हैं। और शायद यही बात रही हो जब पांडे जी की अर्थी चली तो सही में सड़क पर जाम लग गया।

पांडे जी की तेरहवीं के बाद उनका लड़का हिसाब-किताब निपटाने संगम वाले के यहाँ पहुँचा।

“मैं इतनी भीड़भाड़ में रहा कि आपका हिसाब होने में थोड़ी देर हो गई। पापा की तेरहवीं वाले दिन का कितना हुआ है?”

ये सुन कर संगम वाला बहुत देर कुछ नहीं बोला। लड़के को लगा चूँकि खाने वाले लोग बहुत हो गए थे। इसलिए इसको जोड़ने में टाइम लग रहा है। थोड़ी देर बाद लड़के ने दोबारा पूछा-

“पापा की तेरहवीं वाले दिन का कितना हुआ है भइया?”

“पांडे जी के बड़े एहसान हैं मुझ पर भइया, इसका पैसा मैं नहीं ले पाऊँगा। हाँ अपने बच्चे का कभी कोई function करिएगा तो जरूर याद कीजिएगा।”

इतना कहकर संगम वाले ने हाथ जोड़ा और अपनी दोनों आँखों पर एक बार रुमाल फेरा।

*Terms & Conditions Apply

“हर चीज पर लिखा रहता है Terms and Conditions apply. समझ नहीं आता अगर कोई Condition है तो सही-सही बता क्यों नहीं देते, ये स्टार बना देते हैं। बहुत ही irritating लगता है” बिग बाजार से आकर सामान निकालते हुए मैंने पारुल से खीजते हुए कहा।

“इतना मत सोचा करो। फालतू में ज्यादा टेंशन लेते हो और इतने ध्यान से कोई इन्हें पढ़ता भी नहीं होगा।”

“अरे लिखा है तो; कुछ तो मतलब होता होगा ना? ये escape route है कंपनी वालों के लिए ताकि कभी किसी को कुछ देना न पड़े। ऑफर तो इतने बड़े-बड़े करते हैं और लोग इसी लालच में ज्यादा शॉपिंग कर लेते हैं। यहाँ तक कि वो भी खरीद लेते हैं जिसकी जरूरत भी नहीं होती, लेकिन finally *Terms and Condition apply बोल के छूट जाते हैं ये लोग।” मैंने सारी भड़ास एक साँस में निकाल दी।

“खैर छोड़ो, कॉफी पियोगे?” पारुल ने किचन की तरफ जाते हुए पूछा।

“हाँ, कोल्ड।”

पारुल को मैं पिछले 1 साल से जानता हूँ। तब मैं मुंबई में नया था। इस शहर और इसके लोगों से दोस्ती कर रहा था। एक फ्रेंड के यहाँ पार्टी पर मिले थे। मेरे और उसके ऑफिस के रास्ते साथ थे। बस कभी कॉफी तो कभी मूवी तो कभी पानी-पूरी के लिए हम मिलने लगे। चाट की दुकान पर हमारी जरूर एक बार लड़ाई होती। मैं चाट वाले से ‘पानी-बताशे’ माँगता तो वह तुरंत मुझे टोकती कि ‘पानी-पूरी’ बोलते हैं। इसका नाम मत बिगाड़ा करो।

“भइया आप बताओ पानी-पूरी हैं कि पानी-बताशे?” ठेले वाले से भी हामी भरवाती।

ठेले वाला बेचारा क्या बोलता पारुल के आगे। डर के मारे वह भी पानी-पूरी ही कहता।

ऐसा कुछ प्यार जैसा नहीं था हमारे बीच। कभी भी नहीं, अभी भी नहीं। बस पिछले दो महीने से हम साथ ही रह रहे हैं। यह बात न मेरे घर वालों को पता है न उसके। हाँ मेरे सभी bachelor friends को इसमें कोई दिक्कत नहीं लगती, लेकिन कुछ एक

शादीशुदा लोगों ने घर आना छोड़ दिया है। खैर मुंबई में घर मिलने की दिक्कत है। ऐसा लगता है कि कोई bachelor यहाँ रहता ही नहीं, सड़कों पर ट्रेन में जो लोग दिखते हैं सब फैमिली वाले हैं।

पारुल को भी पीजी कभी भी पसंद नहीं थे। मैं घर ढूँढ़-ढूँढ़ कर परेशान हो चुका था। एक घर मुझे बहुत पसंद आया था लेकिन मकान मालिक किसी फैमिली वाले को ही घर देना चाहता था। एक दिन ऐसे ही ऑफिस के बाद पारुल को कहा-

“इतनी मुश्किल से एक घर पसंद आया है लेकिन मकान मालिक को किसी फैमिली वाले को ही देना है घर।”

“इतनी-सी प्रॉब्लम है, एक काम करो।”

“क्या?”

“शादी कर लो।”

“किससे, तुमसे?”

“हाँ और क्या!” पारुल ने बड़े ही आराम से पर्स से chocolate निकाल कर मुझे देते हुए कहा।

“क्या यार; एक तो घर नहीं मिल रहा और तुम्हें मजाक सूझ रहा है!”

“नहीं, I’m serious.” पारुल ने सही में एकदम serious होकर कहा और मेरी तरफ देखने लगी। मुझे अभी तक सब मजाक ही लग रहा था पर पारुल को serious देख कर मैं कुछ बोलने ही वाला था इतने में वो जोर-जोर से हँसने लगी। एक पल को मेरा मन सीरियस रहने का किया, लेकिन फिर हँसते हुए मैंने पारुल से कहा-

“यार झूठ-मूठ की ही बीवी बन जा मेरी।”

“झूठ-मूठ की बीवी तो नहीं बन सकती तुम्हारी, हाँ फ्लैट लेने के लिए सचमुच की बीवी होने का ड्रामा कर सकती हूँ। तुम बोल देना कि मैं दिल्ली में जॉब करती हूँ कभी-कभी आऊँगी।”

“are you sure?”

“हाँ बाबा, इतने से झूठ से क्या फर्क पड़ता है।”

वह इतनी आसानी से मान जाएगी, यह मैंने सोचा ही नहीं था। मैंने मजाक की तरह ही बोला था। बात सेट हो गई। मुझे हमारा घर मिल गया, मकान मालिक को फैमिली वाला किरायेदार और 3 महीने का एडवांस। मुझसे और मकान मालिक दोनों से ब्रोकर को आधा महीने का किराया।

सामान shift करने के बाद एक Saturday मैंने अपने क्लोज फ्रेंड्स का एक get-together रखा। पारुल पता नहीं क्यों एक दिन पहले आ गई और बोली- “चलो तुम्हारा सामान लगवा देती हूँ, आखिर झूठ-मूठ की बीवी हूँ तुम्हारी। मेरा भी इस घर पर आधा हक है।”

बहुत रात तक पारुल सारा सामान ऐसे लगाती रही जैसे कल से रहने आ जाएगी। मुझे अजीब भी लगा और अच्छा भी।

सामान लगाते-लगाते देर हो गई इतने में मकान मालिक आ गया और जाना जैसे भूल ही गया। पारुल को पीजी में जाने में देर हो गई। वहाँ तो कोई बहाना बना दिया उसने लेकिन उसका मेरे साथ ऐसे रुकने का सोचना भी कुछ अजीब था। शायद सही या शायद

बिलकुल गलत। मैंने कहा भी, चलो किसी और फ्रेंड के यहाँ छोड़ देता हूँ तुम्हें तो बोली-

"chill मारो यार, तुम्हारी इज्जत नहीं लूटूँगी रात में।"

जितनी मेहनत से पारुल ने घर सजाया था, मेरा भी मन था कि वो रुक जाए लेकिन मैं कभी उसको बोल नहीं पाता। पहली बार मुझे घर का मकान मालिक अच्छा लगा कि चलो कोई बात नहीं उसने एक घंटा खराब किया लेकिन इसी बहाने पारुल रुक रही है।

डिनर ऑर्डर करके मैं नहाने चला गया। मैं नहा ही रहा था, इतने में पारुल ने बाथरूम का दरवाजा खटखटाया-

"sorry to disturb you." पारुल बिना सॉरी फील करते हुए बोली।

"क्या हुआ?" मैं बाथरूम के अंदर से ही बोला।

"मुझे तुम्हारा कोई short और t-shirt चाहिए पहनने के लिए, मैं कपड़े नहीं लाई ना। कहाँ रखा है बता दो, मैं ले लूँगी।"

मैंने उसको बता दिया; जहाँ मेरे कपड़े रखे थे। उसने थैंक्स बोला और कमरे में चली गई।

कमरे से उसकी आवाज आई-

"कितने बोरिंग कपड़े पहनते हो तुम?"

बाहर निकला तो उसने सबसे colourful t-shirt और shorts पहने हुए थे। वो इतने colourful थे कि मैं उनको पहनने की हिम्मत ही नहीं कर पाया था, उसका टैग भी नहीं निकाल पाया था।

"इतने अच्छे कपड़े खोले भी नहीं हैं, बस जो सबसे बोरिंग कपड़े हैं वही पहनते हो तुम।"

मैं कुछ बोल ही नहीं पाया। कभी लाइफ में कोई बंदी रही नहीं थी जो रंग-बिरंगे कपड़े पहनना सिखा पाए। ऑफिस में कौन शादीशुदा है या किसकी गर्लफ्रेंड है, ये पता करना हो तो बस उनके कपड़े देख लीजिए। जो लोग कभी-न-कभी रंग-बिरंगे पहनते हों बस समझ लीजिए ये जनाब एक से दो हो चुके हैं।

तभी सामने नजर गई। अगले दिन की पार्टी के लिए जो वोड्का आई थी उसके दो पेग बने रखे थे।

"cheers for new house!" पारुल ने मेरा ग्लास मुझे देते हुए कहा

"cheers for झूठ-मूठ की बीवी!"

फिर वह पता नहीं क्या-क्या सुनाती रही। उसने मेरे कपड़ों को लेकर कुछ भयंकर शॉपिंग के प्लान बना लिए थे। पारुल से बात करने में एक आराम ये था कि सारी बातें वही करती थी मुझको कुछ बोलना नहीं पड़ता था। ऐसा ही मुझे अपनी माँ से बात करते हुए हमेशा लगता था। जब मैं ऑफिस से आता था तो वो दस मिनट में दुनिया भर का हाल सुना देती थीं, मुझे कुछ बोलना नहीं पड़ता था।

नींद पता नहीं कब आई और वादे के मुताबिक पारुल ने इज्जत भी नहीं लूटी। हाँ! बस जब सुबह उठा तो मैंने चादर ओढ़ रखी थी और चश्मा सामने टेबल पर रखा था। पता नहीं क्यों माँ कि याद आ गई और मैंने माँ को फोन लगा के बस हैलो ही बोला, बाकी माँ ने दस मिनट में पूरी दुनिया का हाल सुना दिया और मेरा हाल पूछने लगीं-

"नया घर कैसा है, सारा सामान सेट हो गया, खाने का कैसे करोगे, धोबी आता है

वहाँ?"

न जाने कितने सवाल एक ही साँस में पूछ डाले माँ ने और मैंने बस इतना कहा-

"सब सेट हो गया है, तुम आ जाओ थोड़े दिन के लिए।"

"मैं तो आ जाऊँगी, बस अब बहू ले आ।"

मैं हमेशा की तरह irritate हो गया और बाद में बात करने का बोल कर फोन रख दिया।

दूसरे कमरे में पारुल अभी भी सो रही थी। मैंने आवाज लगा के उठाने की कोशिश की, लेकिन महारानी उठी ही नहीं। पारुल को उठाने के लिए मैं कमरे में आया। वह गहरी नींद में थी। खिड़की खोली तो उसकी शक्ल साफ-साफ दिखी। वह इतनी सुंदर लग रही थी, ऐसा लग रहा था कि किसी नयी पारुल को देख रहा हूँ। कुछ देर तो मेरा उसको उठाने का मन ही नहीं हुआ, कुछ देर मैं उसको बस देखता रहा। बिखरे बाल बिना मेकअप में पारुल पहली बार मुझे खूबसूरत लगी। शायद इतनी देर और इतने ध्यान से मैंने उसे पहले कभी देखा ही नहीं था।

कभी-कभी लगता है जब दुनिया की सारी लड़कियाँ सोते हुए इतनी सुंदर लगती हैं तो वह उठती ही क्यों हैं? उठती भी हैं तो अपने बाल क्यों बनाती हैं, बाल भी बना लेती हैं तो मेकअप क्यों करती हैं?

पारुल को जी भर देख लेने के बाद मैंने झिझकते हुए उसके कंधे को पकड़ के हिलाया-

"उठो।"

"कॉफी चाहिए।" वो आधी नींद में बोली

"कॉफी नहीं है, न दूध है। उठो।"

"जाओ लेके आओ।" वो अभी भी नींद में थी

पास की दुकान से मैं थोड़ा-बहुत सामान लेकर आया, जिससे कॉफी बन जाए।

"तुमने तो मुझे सचमुच का husband बना लिया है मैडम" मैंने उसकी तरफ कॉफी बढ़ाते हुए कहा।

"तो क्या हुआ, एक कॉफी बनाने में इतना ड्रामा करते हो तुम ...गुड कॉफी, by the way" कॉफी का पहला सिप लेकर वह आँखें मीचते हुए बोली-

"घर के लिए बहुत-सा सामान लेना है।"

"अरे इतना है तो, और क्या चाहिए?" मैंने घर में सलीके से फैले हुए सामान की तरफ देखते हुए कहा।

"घर को घर जैसे रखा करो, हॉस्टल में नहीं हो तुम... चलो फटाफट तैयार हो जाओ।"

फिर पता नहीं वो कौन से मार्केट में लेकर गई। मैं भी उसी रास्ते से गुजरता था लेकिन कभी मार्केट को इतने ध्यान से नहीं देखा था। पहली बार लगा कि ये मार्केट अपने-आप में कितने घर छुपाए हुए है जिसको केवल पारुल और पारुल जैसी सैकड़ों लड़कियाँ तो ढूँढ़ पाती हैं पर मेरे जैसे लड़के नहीं देख पाते। पता नहीं कौन-कौन से पर्दे और तरह-तरह के नाइट लैंप खरीदने के बाद उसको फटाफट लगवा भी दिया। मुझे बार-बार माँ की बात याद आने लगी- "अब जल्दी से बहू ले आ।"

शाम को जितने भी फ्रेंड आए, सबने मुझे इस बात से बहुत चिढ़ाया कि मेरा घर इतना ठीक-ठाक कैसे था।

“साले, चक्कर क्या है? प्यार-व्यार तो नही हो गया न तुझे?”

“मैंने पारुल को झूठ-मूठ की बीवी जो बना लिया है, सब उसका कमाल है।”

सबके सामने जैसे ही यह बोला, वह पहली बार बहुत ही थोड़ी-सी शरमाई। इतनी थोड़ी कि बस मैं ही देख पाया।

“Cheers for new house, everyone!” बात काटते हुए पारुल ने ग्लास आगे बढ़ाया।

पार्टी खतम हो गई। कई दिन बाद हम सारे मिले थे वरना कॉलेज के बाद से ऐसे get-together बहुत ही कम हो पाते थे। सब के जाने के बाद मैं अंदर कमरे में सोने आया था। अभी भी सुबह वाला कॉफी का कप पड़ा था। मैं बहुत देर तक उस कप को देखता रहा।

फिर फोन उठा के पारुल को SMS किया।

“Thanks, for not looting my izzat.”

“Shut up!” झट से उसका reply आ गया।

अगले दिन सुबह उठा। कॉफी बना के संडे टाइम्स पढ़ ही रहा था तभी पता नहीं क्या याद आया और मैंने फिर SMS किया-

“Coffee is ready.”

उसका कोई जवाब नहीं आया तो मुझे लगा मैं कुछ ज्यादा ही सोच रहा हूँ जैसे कि नॉर्मल लड़के नयी-नयी जान-पहचान के बाद ज्यादा सोचने लगते हैं और नॉर्मल लड़कियाँ ये सब सोचती ही नहीं शायद। जो नंबर मोबाइल में पारुल नाम से सेव था उसका नाम बदलने का मन भी किया। सोचा नाम बदल के बीवी लिख देता हूँ, लेकिन फिर मुझे बहुत ही kiddish लगा। और अपने इस नये बचकानेपन पर हँसी आ गई।

खैर मुझे 20-25 दिन के लिए एक assignment के सिलसिले में दिल्ली जाना पड़ा। जाने से पहले पारुल को बताने के लिए फोन किया तो वो एयरपोर्ट आने के लिए कहने लगी और बोली-

“मुझे घर की keys दे के जाना। पीजी बहुत ही बोरिंग लगता है।”

मुझे आने में 20-25 से ज्यादा दिन लग गए। इस बीच हमारी ज्यादा बात नहीं हुई। हाँ! मकान मालिक एक बार आया था। पारुल ने उसे पैसे दे दिए, जिसके लिए मैं बहुत गुस्सा भी हुआ। तो वह मजाक में बोली- “अरे झूठ-मूठ की बीवी हूँ तुम्हारी, मेरा भी इस घर पर आधा हक है।”

दिल्ली से आने से पहले मैंने पूछा-

“कुछ लाना है तुम्हारे लिए यहाँ से?”

“Ooh God! Please don’t behave like a faithful husband ...बस वोड्का ले आना। We’ll celebrate.”

मैं एयरपोर्ट से वोड्का लेकर घर पहुँचा तो वहाँ ताला लगा था, मैंने कॉल किया तो वो बोली कि उसे कुछ जरूरी काम आ गया था, घर की एक चाबी वहीं गमले में छुपा दी है और दूसरी अपने पास रख ली है। मैंने जानने की कोशिश भी की कि कब आएगी, तो

उसने फटाफट फोन रखवा दिया।

मैं घर जैसा छोड़ के गया था घर वैसा बिलकुल भी नहीं था, यह बात भी मुझे बहुत irritate करती थी। मुझे जो चीज जहाँ है वैसे ही चाहिए होती है, इस बात को लेके माँ से न जाने कितनी बार कहा-सुनी हो जाती थी। लेकिन इस बार मुझे गुस्सा नहीं आया। बेड पर एक नयी t-shirt भी रखी हुई थी, वो भी लाल रंग की।

रात के 2 बजे पारुल का कॉल आया। वो शायद रो रही थी।

"Can I come to your place?" मैं पूछता रहा कॉल पर लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

आधे घंटे बाद वह घर पहुँची। बिना घंटी बजाए दूसरी चाबी से उसने घर खोला और अंदर आ गई। मैं जागा हुआ था। मुझे देख के कुछ नहीं बोली। Washroom में गई और जोर-जोर से रोने लगी। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन उसने दरवाजा नहीं खोला। तकरीबन 20-25 मिनट बाद बाहर आई। मुस्कुराने की कोशिश करते हुए बोली-

"I'm extremely sorry for this."

5 मिनट तक चुप रही। उसका लाया हुआ लैंप जल रहा था।

"वोड्का है?"

"हाँ!"

2 पेग पीने तक वह कुछ नहीं बोली और मैंने भी कुछ नहीं पूछा। तभी एक दम से रोने लगी।

"I fucked up many things, I had an affair with my boss and he is taking divorce from her wife. His daughter is so pretty... I can't ruin her life for fucking love and all."

बहुत देर तक वह पता नहीं क्या-क्या बोलती रही।

"ऐसे ही पापा हमें छोड़ के चले गए थे, मैं 12 साल की थी..."

इतना बोल के वह चुप हो गई। मुझे इतना गुस्सा कभी किसी पर नहीं आया था। मन किया उसको बोलूँ- यहाँ से अभी चली जाए और कभी अपनी शक्ल नहीं दिखाए।

"इतनी देर तक तुम कहाँ थी?" मैंने गुस्से में पूछा

"लोकल स्टेशन पर।"

"तुमने मुझे आज तक कभी कुछ बताया क्यों नहीं?" पूरी ग्लास वोड्का एक बार में पीते हुए मैंने उससे पूछा।

वो कुछ नहीं बोली और थोड़ी देर बाद दूसरे कमरे में जाकर सो गई और मैं कई दिन तक नहीं सो पाया। मेरे अंदर कुछ टूट गया था। मैंने छुट्टी ली और माँ के पास चला आया। घर आकर कुछ नहीं बोला लेकिन मेरे बोलने से फर्क नहीं पड़ता, माँ से बिना बोले ढेर सारी बातें हुई।

मैं मुंबई लौटने से पहले पारुल को फोन करके बोला- "मैं शाम को आ रहा हूँ और मैं तुमको अपने घर पर देखना नहीं चाहता। मेरे आने से पहले तुम चली जाओ।" वह कुछ नहीं बोली।

मैं शाम को अपनी चाबी से दरवाजा खोल के अंदर पहुँचा, तो वह वहीं थी। मैं कुछ नहीं बोला, नहाने चला गया। आया, तो दो कॉफी मग सामने रखे हुए थे।

“I want to start a fresh, a new life.”

“Are you sure?” मैंने खीजते हुए पूछा।

“हाँ.... But I’ll take some time. By the way I’m extremely sorry... I put you in awkward situation.”

फिर पता नहीं बहुत देर तक क्या-क्या बोलती रही। मैं उसको बहुत देर तक देखता रहा। बाल एकदम सही से बने हुए, थोड़ा-सा मेकअप। वह मुझे बिलकुल भी अच्छी नहीं लग रही थी।

यह कभी तय नहीं हुआ था कि हम साथ रहेंगे। वह पीजी जाती लेकिन फिर 2-3 दिन बाद आ जाती। हम वोड्का साथ पीते। वह दुनिया भर का हाल सुनाती। एक दिन अचानक ही पूछ बैठी-

“तुम मेरी दी हुई t-shirt कभी नहीं पहनते?”

इस बात का कोई जवाब नहीं दिया मैंने। बहुत दिनों तक मैं उससे गुस्सा था, इसलिए नहीं पहन रहा था लेकिन टाइम के साथ मेरा गुस्सा जा चुका था और अब उसका पीजी जाना कम होने लगा। वो अक्सर मेरे यहाँ ही रुकने लगी थी। सब कुछ नॉर्मल होने लगा। उसको घर सजाने का बहुत शौक था। उसका घर सजाना अच्छा ही लगता था। गलती और शुरुआत दोनों का मौका सबको मिलना चाहिए।

उस दिन मैंने उसकी दी हुई t-shirt पहनी और पूछा-

“कैसी लग रही है?”

“एकदम sexy, पहना करो थोड़े happening colours.”

“बस-बस केवल घर पर पहनूँगा समझी।” मैंने हँसते हुए कहा

“पहना करो यार, कोई भी बंदी flat हो जाएगी तुम पर।” पारुल ने मेरी t-shirt का कॉलर सही करते हुए कहा। वह अभी कॉलर सही कर ही रही थी इतने में मैंने उससे पूछा-

“ऐ झूठ-मूठ की बीवी, सच-मुच की बीवी बन जा मेरी।” मैंने झूठ-मूठ की बीवी बोलना छोड़ ही दिया था पता नहीं कैसे मेरे मुँह से निकल आया।

“सब कुछ पता होने के बाद भी?” पारुल ने पूछा

“हाँ, मुझे उससे फर्क नहीं पड़ता।”

और यह सुनते ही उसने मुझे गले लगा लिया। बहुत देर तक कुछ नहीं बोली। उसके आँसुओं को अपने होंठों से पोंछकर वापस उसके माथे पर लगा दिया मैंने, ठीक वहाँ जहाँ बिंदी लगाई जाती है। जहाँ से सिंदूर शुरू होता है।

“You are an amazing human being... लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगी। कुछ ऐसी situation और conditions हैं मेरी कि... छोड़ो ये सब।”

“क्या conditions?”

“मैं बता नहीं सकती।”

मुझे बहुत गुस्सा आया। उस दिन हमारी कोई बात नहीं हुई। अगले दिन कॉफी बनाकर उसने मुझे उठाया और बोली चलो बिग-बाजार चलना है। ऐसे behave कर रही थी जैसे कल रात कुछ हुआ ही नहीं था।

“हर चीज पर लिखा रहता है, *Terms and conditions apply. समझ नहीं

आता अगर कोई condition है, तो सही-सही बता क्यों नहीं देते ये स्टार बना देते हैं बहुत ही irritating लगता है।" बिग बाजार से आकर सामान निकालते हुए मैंने पारुल से खीजते हुए कहा।

"इतना मत सोचा करो फालतू में ज्यादा टेंशन लेते हो और इतने ध्यान से कोई इन्हें पढ़ता भी नहीं होगा।"

"अरे लिखा है तो, कुछ तो मतलब होता होगा ना। ये escape route है कंपनी वालों के लिए ताकि कभी किसी को कुछ देना न पड़े। ऑफर तो इतने बड़े-बड़े करते हैं और लोग इसी लालच में ज्यादा शॉपिंग कर लेते हैं। यहाँ तक कि वह भी खरीद लेते हैं जिसकी जरूरत भी नहीं होती लेकिन finally *terms and condition apply बोल के छूट जाते हैं ये लोग।" मैंने सारी भड़ास एक साँस में निकाल दी।

"खैर छोड़ो, कॉफी पियोगे?" पारुल ने किचन की तरफ जाते हुए पूछा।

खैर 2-3 महीने ऐसे ही चलता रहा। इन 2-3 महीनों में मैंने कभी उसको दोबारा शादी के लिए नहीं पूछा। मुझे लगा कि वैसे भी अभी वह बॉस वाले चक्कर से बाहर निकल रही है थोड़ा टाइम देना चाहिए। मुझे इस बात का गुस्सा भी अब नहीं था कि उसने मुझे कुछ बताया नहीं था। लड़के अक्सर ज्यादा सोच लेते हैं, मुझे ऐसा ही लगा। बात चाहे जो भी हो, मैं चाहता यही था कि मेरा घर जो पारुल ने अपने हिसाब से सजाया था, उसमें आकर वही रहे भी। घर को भी मेरी तरह पारुल की आदत हो चुकी थी। पारुल 2-3 दिनों के लिए दिल्ली गई थी। जब 2-3 दिन बाद भी वह नहीं आई तो मैंने ही कॉल करके पूछा कब आ रही हो तो उसने बताया कुछ काम आ गया है, अगले वीक तक ही आ पाएगी।

पिछले एक साल में ऐसा पहली बार हुआ था कि पूरा हफ्ता पारुल नहीं आई थी।

आज सुबह ही उसका फोन आया। वह मुंबई वापस आ गई है और शाम को घर आएगी। उसी दिन मेरा प्रमोशन लेटर भी आ गया। मैंने सबसे पहले कॉल करके पारुल को बताया और बोला शाम को टाइम पर आ जाना।

माँ को फोन किया तो उन्होंने वही दोहराया जो हिंदुस्तान की सारी माँएँ लड़के के प्रमोशन के बाद करती हैं-

"अब तो प्रमोशन भी हो गया, अब तो बहू ले आ!"

घर पहुँच कर फोन पर सबसे बधाई लेते-लेते 9 बज गए, लेकिन तब तक पारुल नहीं आई।

मैंने कॉल किया।

"क्या surprise देने वाली हो इतना टाइम लगा रही हो?"

"I'm extremely sorry, लेकिन अब मैं नहीं आ पाऊँगी, मेरे बॉस की बेटी अब उसके साथ ही रहेगी। उसने दिल्ली ट्रांसफर ले लिया है, हम तीनों अब साथ रहेंगे।" पारुल ये बोलकर रोने लगी।

"तुम दिल्ली इसलिए गई थी... तुमने कभी बताया नहीं?" मैं गुस्से में चिल्लाया।

"मैंने बताया था न कि मैं नहीं बता सकती..." ये बोलकर पारुल और जोर-जोर से रोने लगी।

फिर वह बहुत देर तक पता नहीं क्या-क्या बोलती रही। मैंने फोन बिना काटे ही सामने टेबल पर रख दिया, जहाँ उसका जूठा कॉफी का कप रखा हुआ था। मैं बहुत देर

तक कॉफी का कप देखता रहा ....बहुत देर तक। कप के नीचे बिग बाजार का lucky draw coupon पड़ा था, *Terms and Conditions apply वाला।

हर एक चीज जो बाजार में मिलती है वो किसी-न-किसी condition के साथ है, थोड़ा गौर से देखेंगे तो एक छोटा-सा * बना दिख जाएगा और लिखा होगा *Terms and Conditions apply, पारुल से मेरे रिश्ते का यही सच था। उन सैकड़ों कहानियों जैसा जो अधूरी छूट जाती हैं।

पारुल का बहुत सारा सामान अभी भी मेरे पास पड़ा है। न वह कभी लेने आ पाई, न मैं देने जा पाया। घर मुझसे झेला नहीं जाता। बहुत दिनों से सोच रहा हूँ घर बदल दूँ। कई घर देखे भी, लेकिन जो भी घर पसंद आता है वहाँ वही फैमिली वाली condition है।

Room Number 303

यह हमारी दूसरी ही मुलाकात थी। जुलाई का महीना। उस दिन बारिश बहुत ही ज्यादा हुई थी। मैंने अभी घर नहीं लिया था मुंबई में। मुंबई आए अभी 4 दिन ही हुए थे, तो कंपनी ने 14 दिन के लिए होटल दे रखा था। होटल बहुत ही अच्छा था। 303 नंबर कमरे का view भी होटल में सबसे अच्छा था। अच्छे होटल का यही मतलब था जिसमें रिसेप्शन वाला स्टाफ ज्यादा सवाल-जवाब न करे।

कल ही मैं उससे पहली बार मिला था। वो भी मेरी ही कंपनी में थी। मैं उसका नाम नहीं बताना चाहता किसी को भी। इसलिए भी नहीं कि कल को उसको कोई दिक्कत न हो और न ही मुझे कोई दिक्कत हो। फालतू में ऑफिस में कोई Gossip बनाए। इसलिए मैंने उसका नाम मोबाइल में नम्रता नाम से सेव किया था और मैं अपने ऑफिस के बाहर के दोस्तों को भी उसका यही नाम बताता था। लड़कियाँ अक्सर फील्ड वाला काम नहीं लेतीं, लेकिन ये लड़की थोड़ी अलग थी। अपने काम में एकदम perfect। थोड़ा चिल्लाना पड़े तो चिल्ला भी लेती थी। कभी नीचे वाले को गाली देनी पड़े तो गाली भी दे लेती थी। पार्किंग में बिना जगह में कार निकाल लेती थी। कई बार तो ऐसा होता, मैं बोलता- “इतनी जगह में नहीं निकल पाएगी कार”, तो चिल्ला के बोलती- “लाओ चाबी मुझे दो। मैं निकाल के देती हूँ।”

मुझे शुरू से कार ड्राइव करने वाली और गाली देने वाली लड़कियाँ बहुत पसंद थीं। ऐसा लगता था कि कम-से-कम ये तो कुछ भी सहती नहीं होंगी। सब अपनी मर्जी से करती होंगी।

हम आज थोड़ा जल्दी ही फ्री हो गए। बारिश में भीग चुके थे। होटल पास ही था। नम्रता बोली- “चलो होटल पकौड़े खिलाओ और चाय पीनी है।” मुझे थोड़ा ताज्जुब हुआ और मुंबई में ये सब चीजें गलत या सही नहीं होतीं, बस होती हैं। फटाफट हम होटल के रूम में आ गए। मुझे थोड़ा अजीब-सा जरूर लगा जब मैंने रिसेप्शन के सामने से लिफ्ट ली और सारा स्टाफ जैसे मुझे ही देख रहा था।

खैर, कमरे में आए।

“मैं बाथरूम से आई, तब तक तुम पकौड़े का ऑर्डर दे दो।” नम्रता ने कमरे में घुसते ही कहा।

मुझे कहीं भी मेनू में पकौड़ा दिखा ही नहीं। होटल कुछ ज्यादा ही बड़ा था।

“पकौड़े ऑर्डर किए?” उसने निकलते ही पूछा।

“मेनू में मिला ही नहीं।”

“क्या Roy, पकौड़े ऑर्डर करने के लिए मेनू देखने की क्या जरूरत है यार?”

उसने झट से फोन लिया और पकौड़े और 2 चाय का ऑर्डर कर दिया। मैं अभी भी मेनू में पकौड़े ढूँढ़ रहा था और सोच रहा था कि अगर मिलता है, तो लिखा क्यों नहीं है।

“जाओ तुम भी change कर लो। रूप तेरा मस्ताना वाले राजेश खन्ना जैसे लग रहे हो।” इतना कह के वह बहुत जोर से हँसने लगी। मुझे उसका हँसना बहुत ही बुरा लगा। आखिर हमारी जान-पहचान इतनी पुरानी भी नहीं थी कि वह मुझसे मजाक करे और ऑफिस में भी वह designation-wise मेरी जूनियर ही थी।

पकौड़े खाते-खाते उसने ऑफिस के सारे लोगों के बारे में बताना शुरू किया। कौन काम करता है, कौन नहीं करता, कौन उसके पीछे पड़ा है।

“You know Roy, All men in office are bastard, सब नाड़े के ढीले हैं। इनका कोई दीन-ईमान, कोई character नहीं है।”

“ये सब तुम मुझे क्यों बता रही हो, हो सकता है मैं भी वैसा ही निकलूँ?” मेरे इस सवाल से वो थोड़ा चौंकी।

“तुम लगते तो नहीं और तुम्हारी शादी भी नहीं हुई है। ये साले सारे शादीशुदा लोगों के ही चोचले हैं, तुम अगर वैसे निकले तो तुम्हें भी ठीक कर दूँगी।” नम्रता ने बेड पर रखे कंबल को थोड़ा-सा अपने पैर पर और गुस्सा आँखों में ओढ़ते हुए कहा।

“तुम्हें भी ठीक कर दूँगी,” बहुत देर तक मेरे कानों में गूँजता रहा।

“कल सुबह मैं तुम्हें यहीं से ले लूँगी।” नम्रता के पास scooty थी और जिस मार्केट में हमें जाना था उसका रास्ता होटल से होकर ही जाता था।

उसके जाने के बाद मैंने वही कंबल ओढ़ा जिसको उसने पैर लगाया था। हालाँकि मेरी गर्लफ्रेंड थी, जो मुझ पर शादी का बहुत ही प्रेशर बना रही थी। मैं अभी शादी नहीं करना चाहता था और उसके लिए जैसे दुनिया में एक ही काम बचा था शादी करना। मैंने उसको बताया भी, नम्रता नाम की लड़की है। अभी आई थी रूम पर तो वो इसी बात पर नाराज हो गई कि मुझे ये सब नहीं करना चाहिए। मेरी intention ही खराब होगी, मैं ही उसे जबरदस्ती लाया होऊँगा। खैर मेरी उस दिन नम्रता के रूम पर आने वाली बात की वजह से बहुत लड़ाई हुई। उसने फोन फेंक दिया और मेरा भी कुछ बात करने का मन नहीं था। बारिश में भीगने पर ज्यादा थकावट हो ही जाती है। मैं भी रोज-रोज शादी वाली बात से ज्यादा ही खीज चुका था। तभी नम्रता का sms आया-

“Hi, सो गए रॉय?”

“अभी नहीं नम्रता।”

“मेरा, होटल में रूम पर आना, ज्यादा तो नहीं हो गया न?”

“नहीं-नहीं, ऐसे क्यों पूछ रही हो?”

“ऐसे ही यार, मैं ये सब ज्यादा नहीं सोचती और लोग गलत आइडिया लगाने लगते हैं।”

“हम्म सो तो है, लेकिन कोई बात नहीं।”

“Thanks, there are so many people in office but you are different,

Roy"

"Thanks, Bye, good night Namrata, it was nice meeting with you, indeed."

"Good night!"

मैं सोने से पहले नम्रता के बारे में बहुत देर तक, पता नहीं क्या-क्या सोचता रहा।

अगले दिन सुबह मैं जल्दी तैयार होकर नम्रता का इंतजार करने लगा, तभी उसका फोन आया कि वो नहीं आ रही है घर में कुछ काम है। ऑफिस पहुँचा तो boss ने चुटकी ली- "फिर कैसा रहा कल पूरा दिन नम्रता के साथ।" मैंने किसी को भी कोई जवाब देना ठीक नहीं समझा। खैर वो पूरा दिन बहुत ही सूना लगा। शाम को मेरी गर्लफ्रेंड का फोन आया कि मैं मान जाऊँ जबकि हमेशा गुस्सा वो होती थी। उसके फोन के बीच में ही नम्रता का 2-3 बार कॉल आया। मैंने कॉल बैक किया तो उसने फट से कहा-

"अपनी वाली से बात कर रहे थे रॉय?"

मुझे उसका ये एकदम से मुँहफट होकर बोलना बिलकुल अच्छा नहीं लगा।

"हाँ, रुचि से बात हो रही थी।"

"Ooh nice name, how's she, कहाँ है वो? जॉब करती है वो भी? शादी कब है?"

न जाने कितने सवाल उसने एक साँस में पूछ लिए। जैसे कि अक्सर लड़कियाँ करती हैं। बस सवाल पूछती हैं जवाब नहीं चाहतीं।

"वो सब छोड़ो, ये बताओ आज आई क्यों नहीं?"

"आज मेरी बेटी की parents-teacher meeting थी ना?"

मेरे होश ही उड़ गए कि नम्रता की लड़की भी है। उसको देखने से लगता ही नहीं। मैंने अपने आप को संभालते हुए पूछा-

"कितनी बड़ी बच्ची है तुम्हारी?"

"बच्ची, बच्चियाँ बोलो। 2 बेटियाँ हैं मेरी, अर्चि और पूनम।"

"कभी मिलवाओ अपनी फैमिली से।"

"हाँ! पक्का मिलवाऊँगी।"

"husband क्या करते हैं तुम्हारे?"

"उनका business है, लेकिन मेरा divorce का केस चल रहा है।"

वह पता नहीं कैसे सब इतनी आसानी से बोल लेती थी। मुझे कुछ समझ नहीं आया क्या बोलूँ। मैंने बहाना बना दिया कि रुचि का फोन आ रहा है, बाद में बात करूँगा।

अगले दिन वह अपनी scooty लेकर टाइम से आ गई। चूँकि हम दोनों का ही काम फील्ड वाला था तो कई बार ऐसा होता था 2-3 दिनों तक ऑफिस जाना होता ही नहीं था, बस मार्केट से वापिस आ जाते थे। मुंबई की बारिश जब शुरू होती है तो रुकने का नाम ही नहीं लेती। इसके अपने फायदे और नुकसान हैं। जब वह आई तो पानी रुका था, जैसे ही वह आई पानी बरसना शुरू हो गया। उसने कहा थोड़ी देर तक रुक के देखते हैं। फिर हम कमरे में आ गए। आते ही उसने अपना मोबाइल मेरी तरफ बढ़ाया और अपनी दोनों बच्चियों की फोटो दिखाई।

"पक्का तुम्हारी ही बेटियाँ हैं, आपकी त्वचा से तो आपकी उम्र का पता ही नहीं

चलता मैडम। संतूर के ad में try करो तुम।"

"थैंक्स, पंजाबियों में शादी जल्दी ही होती है। मेरी उम्र ज्यादा नहीं है। मेरी शादी 19 की उम्र में ही हो गयी थी। बड़ी वाली अभी 7 साल की है और छोटी वाली 5 की है। मेरी उम्र तुम्हारे बराबर ही है रॉय।"

फिर हमारी बहुत सारी बातें हुईं। उसके पति के बारे में भी हालाँकि मैंने कुछ पूछा नहीं था। बस वही बताने लगी कि दोनों लड़कियाँ हुईं न तभी उसकी सास चाहती है कि उसके पति की दूसरी शादी हो जाए। तभी वह उठी, पर्दा हटाकर बाहर देखा, तो अभी भी पानी बहुत जोर से बरस रहा था।

उसने कहा- "मैं लाइट ऑफ कर दूँ? मुझे नैचुरल लाइट बहुत पसंद है।"

अब कमरे में केवल खिड़की से उजाला आ रहा था। मैं बेड पर आधा लेटा हुआ था। वह बेड पर दूसरी साइड आ के बैठ गई और खिड़की की ओर देखने लगी। बादल छँट ही नहीं रहे थे। बहुत देर तक मैं चुप रहा। मैंने टीवी भी बंद कर दिया। जैसे टीवी हमें खामोश रहने में डिस्टर्ब कर रहा था।

"रुचि मुझ पर शादी के लिए बहुत प्रेशर डाल रही है और मैं पक गया हूँ। मेरा अभी शादी का मन नहीं है। मैं थोड़ा फ्री रहना चाहता हूँ।" फिर बहुत देर तक मैं नम्रता से रुचि की बुराई करता रहा। वह सब सुनती रही और बहुत देर बाद बस इतना बोली-

"सारी गलती रुचि की नहीं होगी roy"

पता नहीं कैसे उसने ये बात पकड़ ली। उसकी एक बात ने मुझे इतना झकझोर दिया कि मैं फूट-फूटकर रोने लगा।

"मुझसे बहुत सारी गलतियाँ हुई हैं नम्रता। लेकिन अब मैं सब सही नहीं कर सकता।"

नम्रता ने आगे बढ़कर मेरे आँसुओं को अपने होंठों से लगा लिया। मैंने बहुत दिनों से किसी को इतनी जोर से गले नहीं लगाया था, जैसे ही नम्रता ने मुझे गले लगाया था। पता नहीं क्या-क्या सोचकर मैं रोता ही रहा। खिड़की से चुटकी भर बादल अंदर घुस गए थे। वो बहुत देर तक मुझे गले लगाए रही। मैंने उसे वैसे ही पकड़ा जैसे मैं रुचि को पकड़ा करता था। तभी रुचि का फोन बजा। नम्रता ने फोन उठाकर मुझे दिया लेकिन मैंने उठाया नहीं। उसने पता नहीं क्या सोचा। उसने अपने सीने से मेरा सर उठाकर अपने होंठों पर रख दिया। फोन की घंटी बजती रही। बादल बरसते रहे, खिड़की से थोड़ा उजाला अंदर आता रहा।

उस दिन शाम को हमने कोई भी sms एक-दूसरे को नहीं भेजा। अगले 2-3 दिनों तक ऑफिस में भी एक-दूसरे को avoid करते रहे।

Sunday को मैं अपने लिए किराए का घर ढूँढ़ने के लिए दिन भर यहाँ से वहाँ भटकता रहा। नम्रता का फोन आया कि शाम को मैं क्या कर रहा हूँ। मेरा भी ऐसा कोई खास प्लान था नहीं कहीं का। उसने पूछा ड्रिंक का मूड है, तो मैंने भी 'हाँ' कर दी। उसने कहा कि वह ड्रिंक्स लेके आ रही है। मुझे बहुत ही अजीब लगा। मैंने कहा भी कि अरे मैं ले आऊँगा। उसने कहा कि पिछली बार की नयी वाली वोड्का बच गई है और उसे वही flavor पसंद है, वह ले आएगी। शाम को वह जैसे ही कमरे में आई तो मैंने उसे झट से गले लगाया।

मुझसे ज्यादा पेग उसने पिये और फिर अपने सास, ससुर, पति और ऑफिस में जो बड़े बॉस थे उन सभी को माँ-बहन की लाखों गालियाँ सुनाईं।

“You know Roy, everyone in my life is a bastard, अपनी बेटियों को मैं कभी इनको हाथ भी नहीं लगाने दूँगी। उनको मैं दूर ले जाऊँगी इन सबसे।”

सास-ससुर, पति तक ठीक था लेकिन मुझे ये समझ नहीं आया कि वो ऑफिस वालों को क्यों गाली दे रही थी। खैर आधी बोतल खतम करने के बाद वह चल दी और घर पहुँचकर उसने sms कर दिया-

“I reached and I’m fine, sorry for the evening, I spoiled it.”

मैंने कुछ जवाब नहीं भेजा और मैंने उस दिन रुचि का फोन नहीं उठाया। मैं शायद अब नम्रता की तरह आजाद होना चाहता था। पुराना कुछ भी आगे नहीं ले जाना चाहता था।

इधर अगले दिन रुचि मेरे ऑफिस आ गई। मुझे इतना गुस्सा कभी किसी पर नहीं आया था। आकर जब उसने फूल दिया, तब मुझे याद आया कि आज तो Birthday है मेरा। खैर मैंने ऑफिस से half day लिया और हम दोनों मुंबई घूमे। खाए-पिए और शाम को रुचि को फ्लाइट पकड़ाकर मैं होटल में आ गया। इधर कई दिनों बाद मुझे इतना अच्छा लगा। उस दिन मुझे नम्रता का खयाल ही नहीं आया। हालाँकि उसका एक-दो बार फोन भी आया, तो मैंने रुचि के सामने होने की वजह से उठाया नहीं।

रात में 11.59 पर एक sms आया-

“Happy b’day Roy!” मैंने कोई जवाब नहीं दिया और फिर मैं बहुत देर तक सो नहीं पाया।

अगले दो-तीन दिन तक मुझे नम्रता से बात करने का खयाल भी नहीं आया। फिर एक दिन ऐसे ही मैंने नम्रता को ऑफिस के काम की वजह से कॉल किया तो उसने बोला कि वह कोर्ट में है। उसके divorce वाले केस की hearing है। मैंने sms डाल कर छोड़ दिया कि जब भी फ्री हो कॉल करे, अगले वीक में marketing head आने वाले थे और उनकी सबके साथ मीटिंग होनी थी।

खैर अगले हफ्ते marketing head आए तो उन्होंने सभी के साथ meeting की और जैसाकि हमेशा होता है, एक-दो लोगों को बहुत ही ज्यादा हड़काया गया। उन्होंने नम्रता को मीटिंग के बाद रुकने को कहा। बाकी सभी फील्ड वाले लोगों को फील्ड में भेज दिया गया कि वह किसी भी मार्केट में अचानक आ सकते हैं, मार्केट में सब सही होना चाहिए। कोई भी दुकान ऐसी नहीं होनी चाहिए जिसमें कोई competition का माल बेच रहा हो। हम सभी फील्ड वाले बंदे दिन भर मार्केट में जमे रहे और marketing head का इंतजार करते रहे। ऑफिस के चपरासी से पता चला कि वह नम्रता मैडम को लेकर मार्केट निकले हैं। मैंने नम्रता को sms डाला कि अगर मेरे मार्केट में आने वाले हो तो पहले ही बोल देना। उसका ‘ओके’ का जवाब आया।

अगले दिन भी marketing head का इंतजार फील्ड के सारे लड़के करते रहे, लेकिन वह आज फिर नम्रता के साथ निकले थे और आधा दिन ऑफिस करने के बाद पुणे निकल गए। Friday का दिन था, तो corporate में सभी लोग weekend वाले मूड में आ गए थे। दारू और पार्टी जैसे Friday के लिए ही बनी हैं। शाम को 8 बजे

नम्रता रोते हुए मेरे होटल के कमरे में बिना बताए आ गई। मैं बहुत देर तक पूछता रहा, वह कुछ नहीं बोली। मुझे लगा उसके divorce वाले केस में कुछ problem हो गई है। बहुत देर के बाद उसने अपना मोबाइल मुझे दिखाया और कहा कि marketing head के sms हैं, पढ़ो।

"Call when free"

"Dear Namrta, why not picking up my call? did anything happen?"

"Room number 303 Hayatte"

"What's ur zodiac sign?"

"Kahan ho aur kya plan? me in Mumbai office."

"wanna meet."

"ur dinner is here."

"let me know if ur not coming."

"call"

"will call u at night. let us have a long chat. it has been long time we have not talked."

"whr r u?"

"kahan ho ...no talking?"

"ur lipstick color was ....inviting"

"Stay in touch"

"missing ur ....."

मुझे बहुत देर तक कुछ समझ ही नहीं आया। Marketing head जैसा बड़ा आदमी ऐसी हरकत कर सकता है! वह भी उससे इतनी जूनियर लड़की से, यह जानते हुए कि उसकी पर्सनल लाइफ में प्रॉब्लम चल रही हैं!

मुझे इतना गुस्सा आया कि लगा बस marketing head को पकड़ कर इतना मारूँ, इतनी गाली दूँ कि वह मर जाए। ऐसा मेरे दिमाग में क्यों आया यह मुझे नहीं पता, लेकिन यह प्यार तो नहीं था...शायद।

मैं जान-बूझ कर marketing head का नाम नहीं ले रहा क्योंकि ऐसे लोगों की बहुत पहुँच होती है और उनके आगे मेरी औकात कुछ भी नहीं है। कोई भी नाम खुले, कोई सनसनी हो, ऐसा कम-से-कम मेरे career के लिए खतरनाक हो सकता है। आखिर मुझे रुचि से शादी भी करनी थी।

मैंने बहुत सोचा और नम्रता को कहा-

"एक काम करो, ईमेल लिखो।"

"इन सब से कुछ नहीं होगा और मुझे कोई पंगा नहीं लेना है। मैं ही resign कर दूँगी, वैसे भी मुझे अपना business शुरू करना है।"

मैं बहुत देर तक उसको समझाता रहा, कुछ नहीं होगा लेकिन सच बताऊँ तो मुझे खुद भी नहीं पता था कि आगे क्या होगा। लेकिन मैं बस marketing head को परेशान

देखना चाहता था, तो मैंने अपने ही लैपटाप पर एक मेल लिखा-

Respected Sir,

I am Namrta. With my request of confidentiality initiating my request for necessary action against Marketing head. He is regularly HARASSING me socially, mentally and professionally and making unnecessary advancements of sexual harassment.

On his visit at Mumbai all the time he tried to spend time with me on the name of review and he never talked about business and my performance rather he always tried to get personal with me.

During our review at Mumbai, he called me in his cabin and told me that I pushed your promotion but HR denied it. All limits were crossed on his last visit during his market visit along with me, When he asked me to take him for Lunch and I could not resist it and I had to take him to restaurant for Lunch and what he said there was too disturbing that I cannot even mention here in this mail.

I've always tried giving my 100% to my job and in future I'll always try to do my best in my job but certainly I cannot face all this HARRASMENT anymore. I was silent due to the fact that He is big in hierarchy and take my job anytime. I believe there is nobody above the dignity of a woman. I sincerely ask and expect justice.

Please help.

Regards,
Namrata

यह ईमेल लिखने के बाद मुझे भी बहुत डर लगा कि कहीं किसी को यह पता न चल जाए कि यह मैंने लिखा है। तो मैंने खुद ही नम्रता को भेजने से मना कर दिया। लेकिन अगले दिन नम्रता का सुबह ही फोन आया कि उसने वो मेल सारे बड़े Bosses को भेज दिया है। उस पूरे दिन मुझे डर लगता रहा। मैंने इसीलिए रुचि से लंबी बात की और उसको बोला कि हम पक्का शादी करेंगे। हालाँकि ईमेल लिखने वाली बात मैंने रुचि को भी नहीं बताई। शाम को नम्रता का फोन आया कि उसको कल पुणे head office बुलाया गया है। वहाँ एक panel बैठेगा जो सवाल-जवाब करेगा।

वह वहाँ गई। panel में कुल चार लोग थे। एक बंदी और तीन बंदे। उन्होंने वो सब कुछ फिर से पूछा जो कुछ हुआ था। उनको शक था कि ये लड़की जिसका पति भी इसको छोड़ना चाहता है, वो कहीं marketing head को फँसाना तो नहीं चाहती। कभी तुमने उनको provoke करने की कोई कोशिश की है। जब वे आपको लंच पर लेकर गए तो आपने क्या पहना था? आप lipstick किस रंग की लगाती हैं? आपके पति से आपका divorce कब से चल रहा है? ऑफिस में किसी और के साथ कभी आपके

संबंध बने हैं? आप शराब पीती हैं? मुश्किल सवाल पूछे गए। उसको ऐसा भी लगा कि marketing head के sms उसे आए हैं यह उसकी ही गलती है। एक सरकारी कचहरी झेल रही नम्रता ने private कचहरी के सामने अपनी सारी दलीलें रखी। Panel वाले लोग यह जानना चाहते थे कि कहीं ऐसा तो नहीं, नम्रता मीडिया के पास गई हो। खैर सुनवाई हुई और फैसला सुरक्षित रख लिया गया।

अगले दिन सभी को एक ईमेल आया कि marketing head का ट्रांसफर उसी कंपनी के विदेश वाले ऑफिस में कर दिया गया है। नम्रता को मुंबई ऑफिस के head ने बुलाकर कहा कि अब हम उसकी वाली जगह खत्म कर रहे हैं, तो उसकी फिलहाल कोई जरूरत नहीं है। नम्रता को बहुत गुस्सा आया लेकिन वह एक और नया मुकदमा नहीं चाहती थी। मुकदमा लड़ना मुकदमा हारने जैसा ही होता है, ऐसा वह अक्सर कहा करती थी। फैसला हो गया था लेकिन हर बार की तरह justice रह गया था।

उसके बाद वह कभी दिखी नहीं। मैं उसके touch में रहना चाहता था, लेकिन उसने अपना नंबर change कर दिया था। ऑफिस भी कभी अपना full and final करने नहीं आई। मैं रुचि से शादी को नहीं रोक पाया और वह अपने पति से divorce को। हम दोनों ही अधूरे रह गए। कुछ लोग खो जाते हैं बिना बताए। वह भी पता नहीं कहाँ खो गई मुझसे!

मैंने किराए का घर ले लिया है। आज बहुत बरसात हो रही है और रुचि किचन में पकौड़े बना रही है। खिड़की से चुटकी भर बादल अंदर घुस गए हैं। फोन की घंटी बज रही है, बादल बरस रहे हैं, खिड़की से थोड़ा उजाला अंदर आ रहा है।

समोसा

पुत्तन भाई, यही नाम जानते थे सब उनका। ये उनकी बीवी को भी अब याद नहीं था कि उनके पति का नाम पुरुषोत्तम है। सबको पुत्तन भाई का घर तो पता था लेकिन पुरुषोत्तम को कोई नहीं जानता था। यह तो उनका नाम हुआ। क्या इंसान हैं अपने पुत्तन भाई! पूरे LIC के ऑफिस में एक पुत्तन भाई थे जिनका दिल था, चाहे चपरासी हो या बड़े अफसर सब बस यही जानते थे कि कोई भी काम हो, पुत्तन भाई कभी मना नहीं करते। हालाँकि इसका गलत फायदा कभी-न-कभी सभी ने उठाया था। जब किसी का कुछ भी खाने का मन करता तो तुरंत सब पुत्तन भाई को याद करते। पुत्तन भाई न सिर्फ समोसे और चाय के पैसे देते बल्कि कई बार तो खुद ही लेने भी चले जाते, 50 रुपये का पेट्रोल जला कर ताकि सब गरम-गरम समोसा खा सकें। वो बात अलग है कि खाने के बाद सब पुत्तन भाई का मजाक ही उड़ाते।

थोड़े दिन पहले की ही बात है। ऑफिस के चपरासी की बेटी की शादी के लिए पुत्तन भाई इतना परेशान थे जैसे उनकी अपनी बेटी की शादी हो। पता नहीं कितने ही ऐसे काम थे जो पुत्तन भाई कर लेते थे और हमारे पास उन सब फालतू के कामों को करने का न वक्त होता है न ही जज्बा। मैं कभी समझ नहीं पाया कि क्या motivation था उनका इन सबके पीछे। क्यों ये आदमी, आदमी बनने पर तुला हुआ था?

मैंने एक बार पूछा भी-

“यार पुत्तन! ये बताओ, अपना काम पूरा होता नहीं है और तुम दूसरे के काम को कैसे पहले कर लेते हो? कभी अपना भी सोचा करो?”

पुत्तन भाई बोले- “यार, अपना क्या है, अपना तो गधा भी सोच लेता हैं। ज्यादा लोड न लिया करो। बाकी बताओ घर पर सब ठीक?”

“हाँ! सब बढ़िया है।”

“चलो चलते हैं, अभी जरा अपने शर्मा जी की पेंशन के काम से निकल रहे हैं, साला आदमी एक बार retire हो जाए तो कोई पूछता ही नहीं। 6 महीने से पेंशन नहीं चालू हुई है। बताओ!”

“हाँ! सही बात है। आपको कहाँ मिल गए? बड़े सही आदमी हैं।”

“अरे कल मार्केट में मिल गए। बहुत परेशान थे। हमने कहा एक बार हम भी कोशिश करके देख लेते हैं साले को, इतना-सा करने में कोई घिस थोड़े जाएँगे।”

इतना कहते-कहते पुत्तन भाई चल दिए। दूसरे के काम के लिए इतनी जल्दी में होते थे, ये देखकर मुझे अकसर बहुत हैरानी होती थी।

अगले दिन सुबह-सुबह ऑफिस में जैसे ही दिखे, मैंने पूछा-

“हो गया शर्मा जी की पेंशन वाला काम?”

“नहीं हुआ यार, वहाँ का बाबू पेंशन क्लियर करने के लिए 10 हजार रुपये माँग रहा है।”

“तो ये बात शर्मा जी को बता दो न आप, इसमें सोचना क्या है?” मैंने समझदारी दिखाने की कोशिश करते हुए कहा।

“अरे मियाँ कमाल करते हो, रिटायर्ड आदमी से क्या पैसे माँगें! कोई और ही जुगाड़ करते हैं।”

“कैसे करेंगे, पैसा तो देना ही पड़ेगा ना?”

“देखते हैं, सुना है वहाँ के बड़े अधिकारी बड़े सही आदमी हैं, उन्हीं से सिफारिश लगाते हैं।”

“हाँ! बड़े अधिकारी से उस बाबू की क्लास भी लगवा देना, जो पैसा माँग रहा है।” मैंने फिर से दिन की दूसरी बड़ी समझदारी वाली बात सामने रखी।

“नहीं यार ये हमसे नहीं होगा, कोई पैसा लेता है, ले, हम रोकेंगे नहीं। जानते ही हो आज कल पढ़ाई कितनी महँगी है। साला अपने लड़के को अच्छे स्कूल भेजता होगा, कोई अपने लिए पैसा थोड़े ही लेता है यार।”

इतने में किसी ने पीछे से बोल दिया- “पुत्तन भाई सिविल लाइंस वाले समोसे नहीं खिलाएँगे क्या?” इतना सुनना था कि पुत्तन भाई ने पलट के चपरासी को आवाज लगाई और 100 रुपये का नोट देते हुए बोले-

“जा भाई, समोसे ले आ, गरम ही लाना।”

“पुत्तन भाई बाहर बहुत गर्मी है, साइकिल से जाऊँगा तो बहुत टाइम लग जाएगा।”

“अबे तो ये लो चाबी। हमारे स्कूटर से चले जाओ यार, स्कूटर चला लेते हो न?”

इतना कहके पुत्तन भाई किसी काम के लिए चल दिए और जिन भाई साहब ने समोसे के लिए पुत्तन भाई को बोला था, हँसते हुए अपने साथ वाले से बोले-

“देखा कैसे काट दिया, निपट चूतिया आदमी है भाई जी।” और ऑफिस में एक जोरदार ठहाका गूँज उठा। पुत्तन भाई ऑफिस में अक्सर यूँ ही ठहाकों की वजह बनते रहे। समझ नहीं आता था कौन किस पर ठहाके लगा रहा है, ऑफिस, पुत्तन भाई पर या पुत्तन भाई, ऑफिस पर।

इधर कई दिनों से पुत्तन भाई दिखे नहीं तो मैंने फोन लगाया-

“भाई कहाँ हो, कई दिनों से ऑफिस में समोसे नहीं आए?”

“यहीं हैं यार, थोड़ा फँस गए हैं। तुम सुनाओ सब बढ़िया चल रहा है?” पुत्तन भाई ने बड़े ही इत्मीनान से कहा।

“हाँ! मैं सही हूँ। आप ही नहीं दिखे, तो हमने सोचा हाल-चाल ले लें। कहाँ फँस गए हो?”

“अरे यार क्या बताएँ, ऑफिस में किसी को बोलना नहीं, हमारी बीवी हमें छोड़ के चली गई हैं और आज ही सरकारी कागज आया है तलाक के लिए... कोई दिक्कत नहीं है

जरूर कोई गलतफहमी हुई है... हम संभाल लेंगे।"

इतना बोलकर पुत्तन भाई चुप हो गए। मुझे समझ ही नहीं आया क्या कहूँ, मैंने ये बोल के फोन काट दिया कि साहब का फोन आ रहा है।

फिर कई दिनों तक पुत्तन भाई दिखे नहीं और मैंने भी उनकी बात रखते हुए किसी से कुछ नहीं कहा। जब मुझसे नहीं रहा गया तो एक दिन मैं उनके घर पहुँचा।

"आओ मियाँ, क्या हाल हैं, ऑफिस में कैसा चल रहा है?"

"ऑफिस में सब सही चल रहा है। आप बताओ कैसे हो आप, कुछ मामला सुलटा कि नहीं?"

"सुलट ही जाएगा, उन्होंने जब मन बना ही लिया है तो हम दे ही देंगे तलाक। फालतू झगड़ के क्या फायदा।"

"बड़ा पैसा लग रहा होगा फिर तो?"

"हाँ यार, बस वही दिक्कत है। एक बहन बची थी शादी के लिए, पिताजी पहले ही retire हो गए थे और बेगम ने ज्यादा ही पैसा माँग लिया है। जबकि जो भी गहने थे वो पहले ही ले जा चुकी हैं।"

"वैसी बात थी क्या पुत्तन भाई, आपसे कोई कैसे लड़ सकता है?"

"बात-वात कुछ नहीं थी यार, हम ही थोड़ा कम ध्यान देते थे घर पर। उनकी बस एक ही शिकायत थी कि अपना भी सोचोगे कभी?"

"शिकायत तो सही थी भाभी की।" मैंने भी शिकायत के लहजे में कहा तो पुत्तन भाई जोर देते हुए बोले-

"कैसी बात करते हो यार, खैर छोड़ो।"

"आप मना क्यों नहीं लेते भाभी को?"

"वो नहीं मानेंगी। उनके एक जीजा हैं, वही जो कानपुर में बेसिक शिक्षा अधिकारी हैं। उनके साथ कुछ था हमारी शादी के पहले से।" इतना कहते-कहते पुत्तन भाई रुक गए। एक ग्लास पानी पिया और कुछ सोच कर खिड़की की तरफ देखते हुए बोले-

"सरकारी नौकरी का टशन अलग ही होता है यार।"

मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था क्या बोलूँ। फिर भी चलने से पहले मैंने पुत्तन भाई से कहा- "मेरे लायक कुछ भी हो तो बोलिएगा और बेफिक्र रहिए, ये बात मुझ तक ही रहेगी।"

मैं घर आ गया और उस दिन खाना नहीं खाया गया। सोने से पहले अपनी बीवी को गले लगा के बहुत देर तक कुछ नहीं बोला।

"क्या हुआ है आपको?"

"कुछ नहीं, तुम छोड़ के तो नहीं चली जाओगी ना?"

"क्या हुआ है आपको, ऐसा क्यों बोलते हैं?"

इतना कहकर बीवी ने मुझे और भी जोर से पकड़ लिया।

अगले दिन ऑफिस पहुँचा तो एक अजीब ही खुसर-फुसर चल रही थी ऑफिस में।

हर बात जैसे इसी बात से शुरू हो रही थी।

"अरे पता चला?"

"अरे पता चला, पुत्तन की बीवी भाग गई।"

“काहे satisfy नहीं कर पाता था का?” पीछे कोई बहुत जोर से फुसफुसाया।

“ये साले तो यहाँ चाय-समोसे में ही रह गए, घर पर खीर कोई और ही खा गया।” कोई फिर बहुत जोर से फुसफुसाया।

ऑफिस में फिर वही ठहाके की आवाज गूँजी और गूँजती रही एक-दो हफ्ते तक।

एक दिन पुत्तन भाई दिखे ऑफिस में अपनी table पर बैठ कर पुराना काम निपटाते हुए। मैं उनकी सीट पर गया। मुझे देखते ही बोले-

“कहो मियाँ क्या हाल?”

“बस बढ़िया, आप सुनाओ।”

“सही हैं, हाँ एक काम सही हो गया।”

“क्या?”

“कल शर्मा जी की पेंशन वाला काम हो गया।”

मुझे लगा था वो अपने मुकदमे से जुड़ी किसी बात को लेकर खुश हैं।

“सही है, कैसे हुआ, बोल दिया अधिकारी को?”

“हाँ! अधिकारी बढ़िया आदमी था। जहाँ 10 हजार लगने थे वहाँ 2 हजार में ही करा दिया काम।”

“अरे आप तो कह रहे थे अच्छा अधिकारी है, काम ऐसे ही हो जाएगा!” मैंने चौंकते हुए पूछा

“हाँ! यार अधिकारी तो अच्छा ही था। काम करने के बाद बोलने लगा कि आजकल आपको पता ही है अपने लिए नहीं ले रहे, ऊपर साहब लोगों को भेजना पड़ता है। आप नहीं देंगे तो अपनी जेब से देना पड़ेगा। वो हिसाब-किताब गड़बड़ न हो जाए। बाकी नीचे वालों को मैं देख लूँगा।” पुत्तन भाई एक साँस में सब बोल गए।

“तो आपने शर्मा जी को बता दिया कि 2 हजार में काम हुआ है?”

“नहीं यार, यही नहीं कर पाते हम। समझ लिया बीवी के लिए साड़ी खरीद दी। हर महीने का उतना खर्चा तो बच ही रहा है।”

ये बोलकर पुत्तन भाई मेरी आँखों में देखकर मुस्कुरा दिए। तभी पीछे से कोई पुत्तन भाई से बोला-

“महाराज! इतने दिनों बाद आए हैं। समोसा खाए बहुत दिन हो गए।”

आव देखा न ताव, पुत्तन भाई ने तुरंत चपरासी को बुला के 100 रुपए थमा दिए और समोसा लाने के लिए भेजा। जब सब समोसे खा रहे थे तो साहब वहाँ से गुजरे और पूछा- “वाह भाई! समोसे किस खुशी में?” तो किसी ने जवाब दिया-

“पुत्तन भाई की बीवी की शादी का है सर। आप भी लीजिए।” ऑफिस में फिर वही ठहाके की आवाज गूँजी और उस पूरे दिन ऑफिस में अजीब खुसर-फुसर चलती रही।

ऐसे ही समोसे आते रहे। लोग और पुत्तन भाई दोनों ही नहीं बदले। एक दिन पुत्तन भाई मिठाई का डिब्बा लेके आए और सबसे पहले मुझे बुलाकर मिठाई देते हुए बोले-

“लो मियाँ, खुशखबरी है।”

“वाह, क्या बात?”

“बस यार एक बोझ था सर पे कई दिनों से, बहन की शादी तय हो गई है।”

“बहुत-बहुत बधाई।” मैंने भी उस दिन बहुत हल्का महसूस किया जैसे सही में कोई

बोझ मुझ पर भी था। मैं आकर अपनी सीट पर काम करने लगा।

चपरासी ऑफिस में पुत्तन भाई वाली मिठाई बाँटते-बाँटते दोबारा मेरी सीट से गुजरा तो पीछे से किसी की आवाज आई-

"लो भइया खाओ, पुत्तन की बीवी को लड़का हुआ है।"

अब मुझे ठहाके की आवाज से बेचैनी होने लगी थी। मैंने शाम को पुत्तन भाई को घर पर बुलाया और सोच लिया कि आज इनको बता दूँगा कि ऑफिस में सब क्या बोलते हैं और वो अब कहीं और ट्रांसफर ले लें। मैंने जैसे ही उनको घर आने के लिए कहा, वो बोले-

"नहीं यार, सही नहीं रहेगा। अब तुम्हारी भाभी हैं नहीं, अकेले आना अच्छा नहीं लगेगा।"

"आपको पता है कि सब आपकी पीठ पीछे क्या बोलते हैं?" मुझे पता नहीं क्यों लेकिन पुत्तन भाई पर बहुत गुस्सा आया।

"हाँ! मुझे पता है, बोलने दो न यार।"

"आप क्यों करते हो सबके काम?" मैंने गुस्से में खीजते हुए पूछा।

"मियाँ आदमी हो कि गधे हो! किसी का थोड़ा-सा काम करने में कोई घिसता थोड़े है!"

पुत्तन भाई पहली बार थोड़े गुस्से से बोले। इस जवाब से मुझे और भी गुस्सा आ गया। जाते-जाते मैंने उनसे बस इतना कहा कि आप चले जाओ ये ऑफिस छोड़कर, कहीं और ट्रांसफर ले लो।

खैर बात आई गई हो गई। अपनी बहन की शादी को उन्होंने बड़ी ही धूमधाम से किया। उन्होंने मुझे नहीं बताया लेकिन साहब ने बताया कि 5 लाख का पर्सनल लोन भी लिया है, जिसको चुकाने में कम-से-कम 4 साल लगेंगे।

2007 में मेरा प्रमोशन हुआ और उसके साथ ही भोपाल से ट्रांसफर हो गया। यहाँ लखनऊ के ऑफिस में सब कुछ बिलकुल पहले जैसा ही था वैसे ही लोग थे वैसे ही ठहाके की आवाज आती थी लेकिन बहुत दिनों तक पुत्तन भाई जैसे जिंदादिल इंसान की कमी खलती रही। शुरू में कुछ दिन बात भी होती थी लेकिन इधर बच्चों और काम के चक्कर में पुत्तन भाई से बात होनी लगभग बंद ही हो गयी। पूरे दो साल बाद एक शादी के सिलसिले में फिर से भोपाल जाना हुआ तो ऑफिस के सभी लोग शादी में मिल गए। वहाँ शर्मा जी भी मिले, वही शर्मा जी जिनकी पेंशन के लिए पुत्तन भाई ने अपनी जेब से पैसे दिए थे। चूँकि शादी पुराने वाले साहब की बेटी की थी तो सभी लोग आए हुए थे। लेकिन पुत्तन भाई कहीं दिखे नहीं तो मैंने शर्मा जी से पूछा- "कहाँ हैं पुत्तन भाई दिख नहीं रहे?"

"अरे आपको नहीं पता?"

"क्या?"

"पुत्तन भाई नहीं रहे।"

"अरे, कैसे और कब?" मुझे बहुत ही बेचैनी हुई।

"उसका कुछ पर्सनल लोन चल रहा था, अपनी बहन की शादी के लिए लिया था। साले की सेविंग कुछ थी नहीं बस दुनिया भर में घूम-घूम कर पैसे फालतू में लुटाता फिरता था। बस अपनी गाँव वाली जमीन बेचकर लोन चुकाया। जिस दिन आखिरी किश्त

दी उसी दिन फाँसी लगा ली साले ने।"

मैं बहुत देर तक कुछ नहीं बोल पाया। फिर भी शर्मा जी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा-

"Hero तो इतना बनता था कि अपना स्कूटर भी ऑफिस वाले चपरासी को देके गया।"

"देके गया मतलब?" मुझे समझ नहीं आया।

"मतलब कि अपने सुसाइड नोट में लिखा था पुत्तन ने।"

"और क्या लिखा था?" मुझसे रहा नहीं गया।

"बहुत कुछ लिखा था वो सब तो याद नहीं।" शर्मा जी ने याद न आने पर अपनी बढ़ती उम्र को कोसा।

इतने में वही सज्जन जो ऑफिस में बहुत जोर से फुसफुसाकर ठहाके लगाते थे, मेरे पास आकर बोले-

"निपट चूतिया आदमी था भाई जी, आप भी कहाँ उसको लेके बैठ गए। लो पेग लो, साहब, शादी धूम-धाम से कर रहे हैं।"

मुझे ऐसी बेचैनी इधर कई सालों में नहीं हुई थी। मैं बहुत देर तक पुत्तन भाई के बारे में सोचता रहा। भोपाल के ऑफिस में एक ही तो आदमी था वो भी नहीं रहा। ये भी हिसाब लगाने की कोशिश करता रहा कि पुत्तन भाई मरे थे या मारे गए थे।

लखनऊ लौटकर ऑफिस आया तो देखा शाम को किसी ने समोसे मँगाए हैं, चपरासी मेरी सीट पर समोसा लेकर आया तो मैंने पूछा-

"क्या हुआ है, किस खुशी में किसने मँगाए हैं?"

इससे पहले कि चपरासी कुछ बोलता, ऑफिस में ठहाके की आवाज गूँजने लगी।

Ask Expert

सवाल : मैं दसवीं में पढ़ने वाला एक लड़का हूँ। मुझे अपनी क्लास की लड़की से प्यार हो गया है, वो भी मुझसे प्यार करती है लेकिन ये बात वो कभी मानती नहीं। हम साथ में एक ही बस से आते हैं, साथ में लंच करते हैं और क्लास में भी कई बार साथ ही बैठते हैं। वैसे तो उसे कुछ भी बनाना पसंद नहीं लेकिन फिर भी वो कभी-कभी मेरे लिए मैगी बना के लाती है। सब कुछ सही चल रहा था। मुझे मालूम था एक दिन वो खुद भी मान लेगी कि वो भी उतना ही प्यार करती है मुझसे, जितना कि मैं उससे। स्कूल के tour पर हम साथ ही रहते थे दिन भर। हम दोनों को आगरा का ताजमहल देख के कुछ लगा जिसे मैं बता नहीं पाया, लेकिन वो समझ गई थी। रात में लौटते हुए बस में जब अंत्याक्षरी खत्म हो गई और सब सो गए। बस में अंधेरा था पूरा, करीब 2 से 3 बजे के बीच में मैंने उसे kiss किया। वो थोड़ा झिझकी लेकिन मुझे वैसा लगा जैसा कभी लगा ही नहीं था। राजा हिंदुस्तानी का आमिर समझने लगा था मैं अपने आप को, लेकिन तभी इंग्लिश वाली मैडम ने हमें देख लिया। मैंने धीरे से उन्हें सॉरी भी बोला लेकिन वो मानीं नहीं और हमें अलग-अलग बैठा दिया और कहा कि वो हमारी शिकायत प्रिंसिपल मैडम से करेंगी और हमारे parents को भी बुलाया जाएगा। वो भी मैडम को बहुत बार सॉरी बोलती रही। अगले दिन स्कूल में जब वो मुझे मिली तो उसने मुझसे कुछ बात नहीं की। पास भी नहीं बैठी एकदम नाराज रहने लगी। मैं मैडम के पास गया और कम-से-कम 20 बार सॉरी बोला और ये भी कहा कि अगर आपको शिकायत करनी ही है तो आप मेरी कर दीजिए, नेहा को इन सब में involve मत कीजिए। मैडम कुछ नहीं बोलीं और मुझसे कहा- "शाम को मेरे घर आ जाना। वहाँ बात करेंगे इस बारे में और ये किसी से कुछ भी बोलने की जरूरत नहीं है, वरना सबको बता दूँगी वो रात वाली बात।" मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। नेहा ने बात करना बंद कर दिया था और अब मैडम घर पे बुला रही थीं। मुझे लग रहा था कहीं वहाँ पर वो मेरे parents को पहले से ही न बुला लें। खैर मैं चुपचाप खेलने के बहाने से घर से निकल के मैडम के यहाँ पहुँचा। मैडम का घर बहुत ही अच्छा था। सब कुछ बहुत ही सलीके से रखा हुआ था। सामने अलमारी में केवल CDs और किताबें रखी हुई थीं। मैडम की कुछ फोटो भी लगी हुई थीं दीवार पर, सारी फोटो में एक बंदा भी साथ में था। उनके पति जैसा लगता था।

पूछने पर पता चला कि वो उनके husband ही हैं। मैडम ने मुझे कोल्ड ड्रिंक के

लिए पूछा। मैंने बार-बार कहा- “मैडम मुझे माफ कर दीजिए।” लेकिन मैडम ने कहा वो प्रिंसिपल से शिकायत करके रहेंगी। मैं रोने लगा। फिर मैडम ने कहा चुप हो जाओ और जा के मुँह धो लो। उन्होंने बाथरूम का रास्ता दिखा दिया। मैं अपना मुँह धोने बाथरूम में पहुँचा तो देखा, वहाँ उसका दरवाजा बंद ही नहीं होता। बहुत बड़ा एक शीशा लगा हुआ था वहाँ। खैर मैं जैसे ही घुसा मैडम भी आ गईं और तौलिया दिया। कहा सही से पोंछ लो और वहीं खड़ी हो गईं। मैंने फिर सॉरी बोला उनको तो उन्होंने शीशे की तरफ देखते हुए कहा वैसे ही करो जैसे नेहा के साथ कर रहे थे। मुझे कुछ समझ नहीं आया और बहुत डर भी लगा। मैंने मना कर दिया तो ‘वो’ उन्होंने जबरदस्ती मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिए। कुछ देर तो मैंने मना किया लेकिन मुझे वैसा लगा, जैसा उन दिन नेहा के साथ भी नहीं लगा था। फिर उन्होंने मेरे सारे कपड़े उतार दिए। और एक-एक करके अपने भी कपड़े उतरवाए। ब्रा खोलने में मुझे खासी दिक्कत हुई। जैसे-जैसे मुझे अच्छा लग रहा था, मैडम बार-बार मुझे बोल रही थी कि “love u बोलो मुझे”। मेरे मुँह से कुछ नहीं निकला तो गुस्से में वो बोलीं कि सबको बोल दूँगी, बोलो love u! मैंने बोला भी “love u madam।” तो वो बोलीं- “नाम लो मेरा, बोलो love u शीतल, बोलो....”

पता नहीं सही या गलत। लेकिन वो सब मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। सब हम जो अपने मोबाइल के फोल्डर में लॉक करके रखते थे, ऐसे लगा ऐसे ही किसी 10-15 मिनट वाली पिक्चर का हीरो हो गया हूँ। हाँ! सब कुछ वैसा नहीं था जैसा मैंने देखा था, लेकिन फिर भी बहुत अच्छा था।

लौटने से पहले उन्होंने फिर से मेरे होंठों को ऐसे छुआ जैसे नेहा ने छुआ हो। मैंने फिर सॉरी बोला तो कहने लगीं- “Don’t worry, किसी को नहीं बोलूँगी। take care.”

मेरी समस्या यह है कि मैं नेहा से प्यार करता हूँ और मैडम मुझे हफ्ते में एक बार अपने घर आने के लिए कहती हैं। कई बार बुला के कुछ नहीं करतीं, बस ‘love u शीतल’ बोलने को कहती हैं बार-बार।

ये सब गलत है। लेकिन मुझे गलत लगता नहीं है। मैं ये सब नेहा को नहीं बता सकता और मैं नेहा को खोना भी नहीं चाहता। कृपया मेरी मदद कीजिए। GP, गाजियाबाद से।

जवाब : ऐसी उम्र में ये होना सामान्य है। अपने मन में बिलकुल भी ये भावना न लाइए कि आपने कोई गलती की है। आपका मैडम के साथ का अनुभव आगे भी काम आएगा। नेहा को ये सब बता दीजिए और मैडम को अच्छा सपना समझ के भूल जाइए।

“वाह मजा आ गया। मैं तो पेपर खोलकर सबसे पहले ask-expert कॉलम ही पढ़ता हूँ। यार अपने स्कूल की तनाज मैडम भी मुझे ऐसी ही लगती हैं। मैंने ट्यूशन की बात की है मैडम से। तू भी चलेगा तो बोल। क्या पता तनाज मैडम का बाथरूम भी बंद न होता हो।”

दिल्ली के एक स्कूल में दसवीं का एक लड़का अपने दोस्त को कुछ फुसफुसाते हुए न्यूज पेपर का कॉलम पढ़ के सुना रहा है। दोनों ही ask-expert कॉलम के रेगुलर reader और listener हैं।

जो लड़का सुनाता है, उसका नाम प्रतीक है और जो सुनता है उसका नाम मोहित है। प्रतीक ने ही अपने स्कूल की तनाज मैडम से ट्यूशन की बात की है। तनाज मैडम की शादी 1-2 साल पहले ही हुई थी। अभी उनका कोई बच्चा भी नहीं था। वैसे तो वो ट्यूशन

पढ़ाती नहीं थीं, लेकिन प्रतीक ने कई बार request किया कि वो पढ़ाई और अपनी अँग्रेजी को लेकर सीरियस है। मैडम के पास भी शाम को टाइम था। husband 8 बजे के बाद ही आ पाते थे। प्रतीक जब मैडम के यहाँ पहले दिन गया तो उसने देखा drawing room में मैडम की भी वैसी ही फोटो अपने husband के साथ लगी हुई थी जैसी कि ask-expert वाले कॉलम में जो कहानी निकली थी उसमें लिखा था। प्रतीक न्यूज पेपर से ask-expert वाला कॉलम निकाल के रख लिया करता था जो भी उसको अच्छा लगता था। उसने न्यूज पेपर वाली शीतल मैडम वाला कॉलम काट के अपने बैग में रख लिया था।

तनाज मैडम ने प्रतीक को पानी के लिए पूछा और फिर पढ़ाने के लिए 2-3 एक्स्ट्रा बुक्स लिखवा दीं और बोलीं कि कल से वो ये बुक्स लेके आए। प्रतीक ने मोहित की भी बात की ट्यूशन के लिए और मैडम ने ये कह कर मना कर दिया कि स्कूल में ज्यादा लोगों को पता नहीं चलना चाहिए और प्रतीक को ये भी समझाया कि मोहित से भी वो यही बोल दे कि मैं उसको भी नहीं पढ़ा रही हूँ। बस कभी-कभी तुम कुछ प्रॉब्लम होती है तो पूछने आ जाते हो। प्रतीक इस बात से खुश हुआ कि मोहित आता तो वो सब शायद कभी न हो पाता और उसने अगले दिन मोहित को बोल दिया कि मैडम ने ट्यूशन के लिए मना कर दिया है।

प्रतीक का ट्यूशन जाने का सिलसिला शुरू हो चुका था। कई बार मोहित उसे ट्यूशन वाले टाइम पर ही खेलने के लिए बुलाता तो हर बार प्रतीक कोई-न-कोई बहाना बना देता। प्रतीक मैडम से बहुत सारी बातें करता कि कौन-सी टीचर को बच्चे किस नाम से बुलाते हैं। मैडम भी मजाक में ये सब सुन लेतीं। कई दिनों तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जैसा सोच के प्रतीक ट्यूशन आया था। उसने खुद ही अपनी तरफ से एक दिन बहुत हिम्मत की कि आज वो कुछ-न-कुछ करेगा। लेकिन उसको डर भी था कि मैडम कहीं कुछ बोल न दें किसी से।

बहुत सोचा उसको कुछ समझ नहीं आया तो एक दिन उसने न्यूज पेपर के ask-expert वाले कॉलम की कटिंग वहीं किताब में आधी बाहर करके टेबल पर छोड़ दी। ताकि मैडम उसके जाने के बाद उसको पढ़ पाएँ।

अगले दिन वो इस उम्मीद से पहुँचा कि मैडम ने शायद वो पढ़ लिया होगा तो आज वो सब कुछ होगा जिसके लिए वो पिछले 2-3 महीने से रोज ट्यूशन आ रहा था और अपनी अँग्रेजी पर इतनी मेहनत कर रहा था।

मैडम ने जाते ही वो किताब उसको दे दी और कहा-

“अपना सामान देख लिया करो जाने से पहले। कल तुम्हारी book भी यहीं छूट गई थी।”

प्रतीक को कुछ समझ नहीं आया कि मैडम ने ऐसा कुछ बोला ही नहीं जिससे वो आगे बढ़े।

“सॉरी मैडम, book के अलावा कुछ और तो नहीं छूटा था न?” प्रतीक ने पूछा।

“नहीं बस book थी।”

बात आई गई हो गई। इधर प्रतीक परेशान था कि मैडम पढ़ने में इतनी मेहनत करवा रही हैं और जिस काम से ट्यूशन आता है, वो कभी हो ही नहीं पाता और न ही बात कुछ

आगे बढ़ रही है।

प्रतीक को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उसने सोचा ask expert कॉलम वाली कहानी में वो लड़का इसलिए सब कुछ कर पाया क्योंकि उसकी गलफ्रेंड थी जिसको बचाने के चक्कर में शीतल मैडम ने लड़के को वो सब करने दिया होगा। बस इसके बाद प्रतीक जब ट्यूशन गया तो जाते ही बोला-

"आज मन नहीं है मैडम पढ़ने का।"

"क्यों क्या हुआ?" तनाज मैडम ने पूछा

"मैडम, मैं बहुत परेशान हूँ।"

"what happened, बोलो मुझे, I'd love to help."

ये सुनकर प्रतीक को लगा कि प्लान सही फिट हो रहा है। एक बार मैडम थोड़ा इमोशनल होकर कहानी सुनेंगी तो बात बन जाएगी। प्रतीक ने बताया कि उसकी एक गर्लफ्रेंड है नेहा नाम की और उसके फ्रेंड ने उसको नेहा के साथ kiss करते देख लिया था, अब वो फ्रेंड नेहा और प्रतीक दोनों को परेशान कर रहा है कि सबको बता देगा और इस वजह से उसका आजकल पढ़ने में मन नहीं लगता। ये बोलकर प्रतीक रोने लगा। उसको रोता देख मैडम चुप कराने के लिए उठकर उसके पास आ गईं। प्रतीक के आँसू पोंछने के लिए उन्होंने अपना hanky प्रतीक को दिया। वो बिलकुल प्रतीक के पास थीं। बस प्रतीक ने बैठे-बैठे ही उनको जोर से पकड़ लिया और ज्यादा जोर से रोने का नाटक करने लगा। मैडम को भी बड़ा अजीब-सा लगा, लेकिन प्रतीक को इतना रोता देखकर उन्होंने कुछ नहीं कहा। 5 मिनट तक प्रतीक बस रोने का नाटक करता रहा और उसके बाद बोला-

"बाथरूम किधर है, मुँह धोना है।"

मैडम ने रास्ता दिखा दिया। प्रतीक अपनी आँखें काफी मसल चुका था और बाथरूम में जाते ही उसने उन पर पानी डाल लिया। उसने शीशे में देखा शक्ल से बिलकुल बुरी तरह से रोया हुआ लग रहा था। बस इसके बाद उसने अंदर से आवाज लगा कर तौलिया माँगा। मन-ही-मन प्रतीक बस यही सोच रहा था कि आज बात बन गई। उसे मैडम को गले लगाकर बहुत ही अच्छा लगा था।

मैडम तुरंत ही एक तौलिया लेकर आ गईं जैसे ही वो आईं प्रतीक फिर रोने का नाटक करने लगा। मैडम को बाथरूम में आना पड़ा। मैडम ने तौलिया प्रतीक के मुँह पर डाल दिया और कहा-

"प्रतीक you are a brave boy, don't worry, I'll surely help you out, अब फटाफट मुँह पोंछ लो।"

जैसे ही मैडम ने तौलिया मुँह पर डाला, प्रतीक को लगा कि कॉलम वाली शीतल ने भी यही किया था। उसने मैडम को जोर से पकड़ लिया और तौलिया मुँह से हटाकर मैडम को और जोर से अपनी तरफ खींचा और बोला- "love you Sheetal"

मैडम ने प्रतीक को जोर से थप्पड़ लगाया और अपने से दूर धक्का दिया। प्रतीक का सर शीशे से टकराया।

इसके बाद पता नहीं क्या हुआ। अगले दिन प्रतीक ने ask-expert वाला कॉलम मोहित को नहीं सुनाया। मोहित ने कई बार जिद भी की। अपने सर पर जो चोट लगी थी

उसके बारे में भी सबको बस यही पता चला कि ट्यूशन से लौटते हुए फिसल कर गिर गया था। उस दिन से प्रतीक ट्यूशन नहीं गया।

Let’s go home

घर में तैयारी जोर-शोर से चल रही थी। अगले हफ्ते निक्की की सगाई जो थी। पूरे खानदान में 20 साल बाद किसी लड़की की सगाई हो रही थी। निक्की अपने पापा के चारों भाइयों में इकलौती लड़की थी। रक्षा बंधन पर लड़ाई ही हो जाती थी सबमें। निक्की को कौन क्या दे रहा है। घर में भाई ज्यादा हों तो पूरी दुनिया में घर के लड़कों के अलावा सारे लड़के आवारा ही होते हैं। इसीलिए निक्की को शुरू से ही कोई न कोई भाई छोड़ने जाता था। कोई भाई लेने जाता था। all in all बहुत ही protected माहौल में निक्की बड़ी हुई थी। ये तो बढ़िया हुआ कि 12th के बाद निक्की का admission दिल्ली यूनिवर्सिटी में हो गया। हालांकि कोई भी भाई और चाचा इसके लिए तैयार नहीं था लेकिन इस बार निक्की तैयार थी। ज्यादा protection के अपने नुकसान हैं और कम protection के अपने। निक्की ने सोच लिया था बहुत हुआ और दादी से जिद्द करके निक्की दिल्ली निकल ली।

दिल्ली आकर निक्की की दोस्ती हुई शेफाली से, जोकि हॉस्टल में उसकी roommate थी। वैसे तो शेफाली दिल्ली की ही रहने वाली थी, लेकिन उसके मम्मी और पापा दोनों ही working थे और उनकी रोज की लड़ाई से बोर हो गयी थी, तो उसका अपने घर पे रहने का बिलकुल मन नहीं था।

कई लड़कियों के लिए आजादी का मतलब hostel में रहना होता है। ऐसा ही इन दोनों के साथ हुआ। हॉस्टल में दोनों आजाद फील करती थीं। शेफाली अकसर अपने घर से अपने पापा के cigarette के pack से एक दो cigarette उठा लाती थी और धुआँ अंदर लेकर style से बाहर निकालने की कोशिश करती थी, निक्की को ये सब बिलकुल पसंद नहीं था।

“मुझे allergy है smoking से and it’s injurious to health, डिब्बे पर भी लिखा होता है।” निक्की ने गुस्से में कहा।

“I know it is injurious, but एक-दो पीने से कुछ नहीं होता है और मैं कौन-सा रोज पीती हूँ and you know nikki, you are so dam caring at times...हा हा हा” शेफाली कहने के बाद फिर से धुआँ अंदर लेकर style से बाहर निकालने की कोशिश करने लगी।

“anyways ये बता इस weekend घर जा रही है?”

“हाँ जाना पड़ेगा यार।”

“जाना पड़ेगा... क्यों?”

“cigarette का स्टॉक भी खतम हो गया है न .. ये वाली आखिरी है।”

“मुझे तेरे घर पे बोलना पड़ेगा।” निक्की ने थोड़ा भाव खाते हुए कहा।

“अर्रे यार! एक बार बस वो सही से धुआँ आने लगे तो छोड़ दूँगी, पक्के से ... अभी खाँसी आ जाती है...”

“तू रहने दे, घर क्यों जा रही है?”

“मम्मी और dad का divorce हो रहा है, तो कोर्ट जाना है saturday को।”

निक्की को समझ ही नहीं आया, क्या हुआ। उसे लगा शेफाली मजाक कर रही है, लेकिन उसे बहुत ही अजीब लगा कि अपने parents के divorce की बात कोई ऐसे कैसे कर सकता है!

“don’t feel awkward ... इनके लड़ने से बहुत बोर हो गई थी मैं।”

“bore हो गयी थी, ये क्या बात हुई यार, तू किसके साथ रहेगी... मम्मी के साथ?” निक्की ने थोड़ा झिझक कर पूछा।

“नहीं, पापा के साथ... मम्मी का affair संजय के साथ था, पापा के फ्रेंड and I hate him.”

“तेरे पापा को इसके बारे में पता था?”

“नहीं, मुझे पता था, लेकिन मैंने पापा को कभी बताया नहीं ...वैसे भी इतना लड़ते थे दोनों।”

इतना कहकर शेफाली फिर से धुआँ निकालने की कोशिश करने लगी। निक्की का मन भी किया कि वो बहुत जोर से चिल्लाये और शेफाली की सिगरेट को उससे छीन कर फेंक दे, लेकिन वो ऐसा कुछ भी नहीं कर पायी और फिर कई दिनों तक उसने शेफाली से उसके घर के बारे में कोई बात नहीं की। एक दिन शेफाली ही बोली-

“यार, पापा-मम्मी के divorce से मैं बहुत खुश हूँ।”

निक्की को समझ ही नहीं आया कि क्या बोले फिर भी थोड़ा सोचकर बोली-

“अच्छा है न यार, तू खुश रह बस!”

“हाँ, कम-से-कम अब ये लड़ते तो नहीं हैं, मम्मी बहुत इमोशनल हो रही थीं कोर्ट में कि मैं उनके साथ रहूँ।”

“तो, तूने क्या बोला?”

“यही कि मैं तुम्हें संजय के साथ share नहीं कर सकती।”

“मम्मी बोलीं कुछ?”

“हाँ!”

“क्या?”

“यही कि संजय is very nice person, तुम्हारे पापा जैसा नहीं है ब्लाः ब्लाः ..... बस इसके बाद मैंने उनसे कोई बात नहीं की।”

इतना कहकर शेफाली चुप हो गयी और निक्की को भी समझ नहीं आया क्या बात करे। निक्की ने मूड थोड़ा हल्का करने के लिए पूछा-

“तू सिगरेट तभी पीती है न, जब रोने का मन करता है?”

शेफाली ने कभी ऐसे सोचा नहीं था और वो इस सवाल से चौंकी भी बहुत, क्योंकि सही बात तो यही थी।

फिर भी शेफाली ने अपने आप को संभालते हुए कहा-

“सिगरेट छोड़, एक दिन दारू पीते हैं यार, डिस्क जाना है, बोल कब चलेगी?”

“मुझे घर पर पूछना पड़ेगा।”

“और तुझे वो लोग जाने देंगे! बोलेंगे हाँ, बेटी बड़ा अच्छा किया बता दिया, हमें भी फोटो भेजना... अरे घर पे पूछेगी तो कौन जाने देगा?”

“फिर तो मुश्किल होगा मेरे लिए।”

“कुछ मुश्किल नहीं होगा, समझी ना, next weekend चलते हैं मेरे स्कूल के फ्रेंड्स भी आ जाएँगे।”

निक्की ने ‘हाँ’ नहीं किया लेकिन ‘ना’ भी नहीं किया।

जितने टाइम में next weekend आता है, इस बार उससे जल्दी आ गया। एक उम्र में जो कुछ भी मना किया जाता है केवल वही करने का मन करता है और उसी उम्र में हमेशा ऐसा लगता है कि हर चीज के लिए तो मना किया जाता है।

डिस्क में शेफाली के 2 फ्रेंड्स आए हुए थे काशिका और साथ में एक बंदा भी था यश। वहाँ जाके निक्की को पता चला ये पार्टी शेफाली की तरफ से है अपने parents की marriage anniversary की, हालांकि वहाँ शायद काशिका और यश को ये बात नहीं पता थी कि दोनों का divorce हो चुका है। ये केवल निक्की को पता था।

काशिका ने पूछा भी-

“लास्ट इयर तो तुमने सरप्राइज पार्टी घर पे ही organize की थी। सभी ने बहुत enjoy किया था। अंकल-आंटी की anniversary पर, इस बार तुमने डिस्क में पार्टी कैसे रख ली और अंकल आंटी कहाँ हैं?”

“वो दोनों इस बार आउट ऑफ स्टेशन गए हैं? कभी-कभी parents को भी अकेले छोड़ना चाहिए न!”

ये बोल कर शेफाली बहुत जोर से हँसी और धुआँ निकालने की कोशिश करने लगी और बहुत देर तक पीती रही, निक्की से लाख जिद्द करने के बावजूद भी उसने वोड्का तक को हाथ नहीं लगाया।

लौटते हुए यश ने पहले स्वाति और काशिका को छोड़ा और निक्की पीछे की सीट पर बैठी हुई थी, शेफाली आगे बैठ कर अभी भी सिगरेट पीने की कोशिश कर रही थी।

“तुझसे पी नहीं जाती, तो पीती क्यों है?” यश ने हँसते हुए पूछा।

“नहीं पी जाती तो क्या हुआ, कभी तो सीखूँगी!” शेफाली ने पीछे घूम कर निक्की की तरफ देखते हुए कहा।

रास्ते में यश की थोड़ी-बहुत बात निक्की से भी हुई लेकिन सब शेफाली के बारे में ही। हॉस्टल में उतारने से पहले यश शेफाली से बोला-

“जब झूठ नहीं बोल पाती तो इतना नाटक क्यों करती है?” यश ने बहुत ही आराम से निक्की की तरफ देखते हुए शेफाली से पूछा।

शेफाली को अचानक इस सवाल की उम्मीद नहीं थी... पता नहीं क्या हुआ और शेफाली ने वहीं यश को गले लगा लिया। निक्की को थोड़ा अजीब लगा और फिर निक्की

ने पहली बार शेफाली को रोते हुए देखा बहुत जोर से। सबसे जोर से। यश कुछ नहीं बोला बस निक्की को बोला-

"शेफाली का खयाल रखना, निक्की।"

निक्की कुछ नहीं बोली बस शेफाली को लेकर कमरे पर आ गयी।

"निक्की, मैं रोते हुए बहुत गंदी लगती हूँ ना?"

"हाँ! बहुत, दो-चार सिगरेट ज्यादा पी लो, लेकिन रोना मत" इतना कहकर निक्की सोने जाने लगी।

"I love mummy more than papa."

निक्की को सोने के लिए देर हो चुकी थी फिर भी शेफाली बोले जा रही थी ...

"I loved mummy more than papa."

"चुप हो जाओ और सो जाओ, इतना ही था तो छोड़ क्यों दिया उनको?"

"मैं मम्मी को share नहीं कर सकती थी किसी के साथ।"

फिर शेफाली पता नहीं क्या-क्या बड़बड़ाती रही। एक-दो बार यश का नाम भी लिया। उस दिन पहली बार निक्की को लगा कि जिस कमरे में दो लोग रह रहे हों वहाँ पर एक इंसान कितना अकेला हो सकता है। कई बार अकेलापन भीड़ देखकर टूट पड़ता है। इतने दिनों से दोनों साथ रह रहे थे और उस दिन पहली बार शेफाली अकेली लगी, बिलकुल अनाथ जैसी अकेली।

निक्की कमरे से उठ कर हॉस्टल की गैलरी में आ गयी और अपने घर फोन किया। मम्मी से बात करते-करते रोने लगी और शेफाली के घर की सारी बात मम्मी को बता के पूछने लगी-

"तुम तो कभी नहीं चली जाओगी न?"

"नहीं बेटा, कैसी बात करती है? तू एक काम कर, अपना कमरा बदल दे, बोल तो मैं बात कर लेती हूँ warden से।"

"नहीं... मम्मी ... शेफाली मेरी बहुत अच्छी फ्रेंड है। उसको अकेले नहीं छोड़ सकती। आप परेशान मत हो, मैं संभाल लूँगी।"

"परेशान मत होना बेटे।"

"नहीं होऊँगी, चलो कल बात करती हूँ।"

निक्की मम्मी से बात करने के बाद बहुत देर तक गैलरी में टहलती रही। उसको बहुत बुरा लगा था, मम्मी की कमरा बदलने वाली बात से।

अगले दिन सुबह यश का फोन निक्की के पास आया-

"कल बहुत रोयी क्या वो?"

"हाँ! बहुत।"

"कब हुआ ये सब? I mean अंकल-आंटी वाला... ये सब?"

"थोड़े ही दिन पहले।"

"ओके, जब उठे तो उसको बोलना मुझसे बात करे... उसका फोन बंद आ रहा, तभी तुम्हारे नंबर पर कॉल किया... I hope you don't mind."

"No.. no.. not at all, but तुम्हारे पास नंबर आया कैसे?"

"शेफाली ने ही दिया था कि कभी अगर मेरा नंबर न लगे तो मेरी रूम मेट का नंबर

रख लो।"

"चलो सही है। वो उठती है तो बात कराती हूँ।"

"Ok, bbye, Nikki and please take care of her."

"Bye, yeah I'll. Dont worry."

फोन रखने के बाद निक्की को लगा कि यश केवल अच्छा फ्रेंड नहीं है और केवल अच्छा फ्रेंड होने लायक से अच्छा है। जैसे लड़के हिसाब लगाते रहते हैं कि ये गलफ्रेंड लायक है और वो बीवी लायक, ऐसी ही गुणा-गणित लड़कियाँ भी करती हैं अक्सर, बिना शोर मचाए। अपनी सहेली को भी नहीं बतातीं और कई बार उस लड़के को भी नहीं।

शेफाली उठी और रात के लिए sorry बोला।

"क्यों, sorry क्यों यार?" निक्की ने थोड़ा अपनापन दिखाते हुए पूछा।

"अरे बस ऐसे ही यार, बस बोलने का मन है। सुन ले sorry और भाव मत खा। रोज-रोज नहीं बोलूँगी।"

"मत बोलना, ये बता यश का क्या चक्कर है?"

"क्या चक्कर, कोई चक्कर नहीं है, अच्छा फ्रेंड है बस।"

"अच्छा फ्रेंड... ooh हो..., ऐसा लग तो नहीं रहा था कल!"

"अरे यार, अच्छा फ्रेंड है बस ...." शेफाली ने जोर देते हुए कहा।

"ठीक है अच्छा फ्रेंड है तो..." निक्की कुछ कहना चाह रही थी लेकिन पता नहीं क्या सोच के रुक गयी। तभी शेफाली बोली-

"तुझे पसंद है क्या? बोल, बात चला लेती हूँ।"

"तू सो रही थी तो यश का फोन आया था उससे बात कर लेना" इतना बोल कर निक्की नहाने के लिए कमरे से चली गयी।

किसी लड़के की बात दोनों के बीच अभी तक हुई नहीं थी कभी और निक्की को ये समझा के दिल्ली पढ़ने भेजा गया था कि पूरे-पूरे खानदान की इज्जत वो लेकर जा रही है। घर की इज्जत और लड़की के प्यार में कितना गहरा संबंध होता है, ये पहाड़ा हर उस लड़की को रटाया जाता है जो पढ़ने के लिए अपने घर से दूर जा रही होती है।

खैर ये डिस्क जाने का सिलसिला कुछ दिन चला। निक्की को भी डिस्क जाना बुरा नहीं लगता था और वो भी बहुत ही आजाद फील करती थी। शेफाली दारू पी कर आजाद हो जाती थी और निक्की डिस्क जा कर। हर बार शेफाली बहुत पीती और लौटते हुए यश को पकड़ के खूब रोती। निक्की और यश दोनों को ही इसकी आदत हो चुकी थी। एक बार शेफाली ने बहुत ही ज्यादा पी ली तो उसको पीछे वाली सीट पर लेटाना पड़ा। निक्की को आगे वाली सीट पर बैठना पड़ा। उसको समझ नहीं आ रहा था क्या बात करे।

"I feel bad about शेफाली" निक्की ने थोड़ा झिझकते हुए कहा।

"क्यों, वो ठीक है, थोड़े दिन में इसकी आदत हो जाएगी" यश ने बहुत ही आराम से ज्यादा ध्यान न देते हुए कहा।

"मैं बहुत दिनों से शेफाली से पूछना चाहती थी।"

"क्या?"

"यही कि, तुम उसके बॉय फ्रेंड हो न?"

यश ने पलटकर शेफाली की तरफ देखा बहुत ध्यान से और बोला-

“नहीं... तुम्हें ऐसा लगता है क्या?”

“पता नहीं... वो केवल तुम्हें देख के ही रोती है इसीलिए लगा।”

“जिसको देख के रोना आ जाए, तो प्यार होता है... क्या फंडा है मैडम! वाह!”

निक्की थोड़ा झेंपी और थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोली। हॉस्टल आने तक भी अभी शेफाली को होश नहीं आया था। दोनों की रास्ते भर क्या-क्या बात होती रही, ये बता पाना बहुत मुश्किल है लेकिन उस रात निक्की सो नहीं पायी। उसको पहली बार थोड़ा और ज्यादा आजाद फील हुआ।

निक्की अक्सर अब आगे बैठने लगी थी, जब भी वो तीनों कहीं घूमने जाते थे। शेफाली अब सही से धुआँ निकालना सीख चुकी थी। देखते-देखते 3 साल खत्म होने को आए। शेफाली आगे पढ़ने के लिए बाहर जा रही थी। निक्की की जॉब वहीं दिल्ली में लग गयी थी। यश को अपना बिजनेस ही संभालना था जो कि वो कॉलेज के साथ में भी कर ही रहा था।

ये सिलसिला यूँ ही चलता रहा। शेफाली बाहर जा चुकी थी और दस महीने बाद May में आने वाली थी। इधर निक्की के घर वालों को निक्की की शादी की जल्दी थी और उन्होंने अपने हिसाब से कई लायक लड़के निक्की को दिखा दिये थे। सभी लड़कों को निक्की देखते ही मना कर देती थी। एक दिन निक्की ने फोन करके अपनी मम्मी को बोला-

“मुझे यश बहुत पसंद है।”

“कौन यश?” मम्मी ने लगभग चिल्लाते हुए पूछा।

“वही! बताया था न पहले! शेफाली का फ्रेंड।”

मम्मी को बहुत गुस्सा आया और वो करीब-करीब पूरे घर को सुनाते हुए बोलीं-

“तुझे मैंने बोला ही था अपना कमरा बदल दे। वैसी बंदी के साथ रहने के कारण ही सब हुआ है।”

इसके बाद मम्मी से फोन छीन के पापा ने लिया और अगले दिन ही मम्मी-पापा और एक-दो भाई दिल्ली आ गए। घर की इज्जत के बारे में भी कुछ एक बातें फोन पर सुनाई निक्की को।

जैसे 3 साल पहले निक्की दिल्ली पढ़ने आने के लिए तैयार थी वैसे ही इस बार वो फिर से तैयार थी। फर्क सिर्फ इतना था इस बार यश उसके साथ था और यश की फैमिली में निक्की को सभी बहुत पसंद करते थे।

यश ने बहुत ही समझदारी से निक्की के घर पर सबको समझा लिया। शादी की तारीख मई में फाइनल की गयी ताकि शेफाली भी शादी में आ सके और ये surprise देने के लिए दोनों, निक्की और यश, शेफाली को लेने एयरपोर्ट गए।

शेफाली ये सुन कर बहुत ही खुश दिखी और उस रात तीनों उसी डिस्क में गए, जहां कॉलेज में जाते थे। वहाँ से जाने के बाद शेफाली ने यश को कहा कि उसको उसकी मम्मी के घर छोड़ दे। वो उनसे मिलना चाहती है। यश ने कई बार पूछा भी इस हाल में, उसने कहा ‘हाँ’ इसी हाल में। जैसे ही निक्की और यश ने शेफाली को उसकी मम्मी के पास छोड़ा तो उनको मिलते ही वो बहुत जोर से रोने लगी, वैसे ही जैसे वो यश को देख के

रोती थी और अपनी मम्मी से बोली-

"चलो मम्मी, घर चलो, बस चलो यहाँ से, let's go home. इतने दिनों से तुम घर नहीं लौटी।"

ये जिद्द बहुत अजीब थी। शेफाली की मम्मी ने संजय की तरफ देखा। संजय को बहुत गुस्सा आ रहा था लेकिन फिर भी अपने को संभालते हुए उसने शेफाली से कहा-

"बेटा ये भी तुम्हारा ही तो घर है। आप यहीं रुक जाओ।"

शेफाली ने चिल्लाते हुए कहा-

"ये तुम्हारा घर है संजय, मेरा नहीं।"

"अंकल को ऐसे नहीं बोलते बेटा" शेफाली की मम्मी ने कहा।

"मुझे मत बताओ क्या बोलते हैं क्या नहीं बोलते। तुम बस घर चलो, please let's go home" ये कहकर शेफाली फिर बहुत जोर से रोने लगी।

ये देख कर निक्की से रहा नहीं गया। उसने भी आंटी को समझाया कि एक दिन के लिए वो जैसे बोल रही है कर दीजिये। शेफाली की मम्मी से भी देखा नहीं गया। वो बच्चों के साथ चल दी।

सब लोग शेफाली के घर आ गए। शेफाली की मम्मी पूरे तीन साल बाद घर आयीं। वो भी तब, जब उनकी बेटी की हालत ऐसी थी। शेफाली के पापा ने दरवाजा खोला। शेफाली की मम्मी को देखकर चौंके भी, लेकिन कुछ नहीं बोले। Divorce के बाद से आज दोनों पहली बार मिल रहे थे। पापा-मम्मी मिलकर शेफाली को उसके कमरे में लेके गए। वो बिलकुल भी होश में नहीं थी कुछ कुछ बड़बड़ाये जा रही थी बस...

"मैं मम्मी को share नहीं कर सकती थी किसी के साथ..."

"मैं यश को share नहीं कर सकती थी किसी के साथ..."

थोड़ी देर रुकने के बाद यश और निक्की वहाँ से चल दिये। मम्मी शेफाली के कमरे में आके बैठ गईं। शेफाली के पापा ने कॉफी के लिए पूछा और किचन में कॉफी बनाने चले गए। शेफाली की मम्मी ने सामने टेबल पर रखी उसकी बचपन की फोटो को अपने हाथों में लिया। फोटो में शेफाली के पापा और मम्मी साथ थे। उनके मसूरी ट्रिप की फोटो थी। शेफाली की मम्मी बहुत देर तक कुछ सोचती रहीं। फिर अपनी साड़ी से फोटो पर लगी धूल को साफ किया और उठकर शेफाली के कमरे में फैले सामान को ऐसे समेटने लगीं, जैसे वो छुट्टी पर कहीं घूमने गई थीं और अब हमेशा के लिए लौट आई हैं।

Welcome

मकान मालिक की उम्र होगी यही कोई 65 साल, अपनी बीवी की बहन के साथ रहता था। बीवी की बहन को सब लोग मौसी बोलते थे और मकान मालिक को अंकल। बीवी बहुत पहले ही मर चुकी थी और इकलौती बेटी बाहर बस गई थी। मौसी की उम्र थी करीब 50 साल और मौसी के पति भी अंकल की बीवी जैसे खर्च हो चुके थे। दोनों लोगों के पास एक चार मंजिला मकान के अलावा एक दुकान भी थी। दोनों बड़े प्रेम से रहते थे। मुझे तो मकान लेने के बहुत दिनों बाद पता चला कि मौसी अंकल की बीवी नहीं बल्कि साली हैं। साली का सुख ऐसा सुख है जो सबको नसीब नहीं होता और अगर किस्मत में साली सुख है तो देर-सबेर नसीब हो ही जाता है। अंकल के छोटे और सुखी परिवार के अलावा 3 किराएदार रहते थे। पहले फ्लोर पर एक भइया जो किसी प्राइवेट कंपनी में काम करते थे। उनका और उनकी बीवी का तलाक का कुछ मामला चल रहा था। भइया का कहना था वो बच्चा पैदा नहीं कर सकती और उनकी बीवी का कहना था कि ये बच्चा नहीं पैदा कर सकते। दोनों कभी मिलते नहीं थे कि ये जान पाएँ कि दोनों मिल के बच्चा पैदा कर सकते हैं या नहीं। दूसरे फ्लोर पर एक बंदी रहती थी पल्लवी नाम की, जो कि किसी बैंक में काम करती थी। काम का pressure बहुत रहता था इसीलिए कूड़े में अक्सर बीयर की बोतलें दिख जाती थीं। सबसे ऊपर वाला फ्लोर मेरा था। अभी-अभी ट्रांसफर होकर मैं इंदौर पहुँचा था। कॉलेज के बाद से ये मेरी पहली ही पोस्टिंग थी। यहाँ करीब 6 महीने तक रुकना था उसके बाद ट्रांसफर फिर से हो जाना था, लेकिन अंकल को मैंने झूठ बोल रखा था कि यहाँ साल भर रुकना है। हाँ! भइया के यहाँ एक नौकरानी भी काम करते हुए दिख जाती थी। तीनों घरों का काम वही करती थी, बस भइया के यहाँ दिखती ज्यादा थी।

एक दिन संडे को भइया ऊपर आए, मेरे फ्लोर पर। आए मिलने के लिए-

“भाई साहब, मैं फर्स्ट फ्लोर पर रहता हूँ। चूँकि आप ऑफिस से देर से आते हैं इसलिए सोचा था कि किसी दिन फुर्सत से रहूँगा तो मिलूँगा।”

“हाँ, आज-कल देर हो ही जाती है। आप बताइए कब से रह रहे हैं यहाँ?”

“बस यार, पिछले 2 साल से। खाने-वाने का हो गया आपका?”

“नहीं हुआ, इसीलिए तो और भी देर लगती है। या तो बाहर से पैक करा के लाता हूँ, या खा के आता हूँ।”

“अरे पहले मिलना चाहिए था न आपको, अकेले आदमी का खाना सही से बन ही नहीं पाता। आपसे पहले जो रहते थे, उनका और मेरा खाना यही सविता बना देती थी।”

“सही है, मैं तो सोच ही रहा था अंकल से बोलूँ कि किसी को खाने के लिए लगवा दें। बाहर खाया नहीं जाता रोज-रोज।” मुझे भी लगा कि बढ़िया है आराम से खाना बन जाया करेगा।

“बढ़िया है, आप भी ब्राह्मण हैं। इसीलिए आपको बोला खाने के लिए।”

हालाँकि भइया की ये बात मुझे उतनी अच्छी नहीं लगी, लेकिन रोज-रोज बाहर खाने वाली समस्या से छुटकारा मिल जाएगा ये सोचकर मैंने भी तपाक से ‘हाँ’ बोल दिया। फिर भइया ने बाकी लोगों के बारे में बताना शुरू किया। एक-एक करके। सबसे पहले पल्लवी के बारे में बोले- “भाई साहब, कभी-कभी एक लड़का भी आता है बैंक वाली मैडम के यहाँ... आ- कल की लड़कियों का आप जानते ही हैं। मैडम बीयर भी पीती हैं।”

भइया बहुत देर तक पल्लवी के बारे में कुछ-न-कुछ चटपटा मसालेदार बोलते रहे। जब थक गए, फिर अंकल के बारे में बोलना शुरू किया-

“अंकल हैं बहुत रंगीन आदमी। बीवी मरी ही इस वजह से, क्योंकि शुरू से इनका चक्कर मौसी के साथ था। इसी चक्कर में इनकी बेटी छोड़ के चली गई। वो भी किसी लड़के के साथ भाग गई। बाप ऐसा होगा तो बेटी भी वैसी ही निकलेगी ना!”

जब अंकल और पल्लवी का चरित्र-चित्रण खत्म हुआ तो भइया ने सविता के बारे में बताना शुरू किया-

“दिन भर यहाँ के तीनों घरों का काम निपटाती है और अगर दिन में ब्वॉयफ्रेंड आता है तो उसको भी निपटा लेती है चौका बर्तन, झाड़ू पोंछे के साथ।”

मैं बहुत देर से केवल सुन ही रहा था, तो मैंने सोचा कहीं भइया ये न सोचें कि मैं चट रहा हूँ तो मैंने भी पूछ लिया-

“ब्वॉयफ्रेंड भी है इसका?”

“हाँ, भाई साहब। लगे रहते हैं दोनों दिन भर।” ये कहकर भइया हँसने लगे।

“अच्छा, तो शादी-वादी क्यों नहीं कर लेती?”

“शादी कैसे करेगी, इसका ब्वॉयफ्रेंड शादीशुदा है, गाड़ी चलाता है और सविता को गाड़ी में चढ़ने का शौक है।”

खैर भइया से बात करते-करते 12 बज गए थे, तो मैंने ही कहा-

“चलिए भइया, मुझे भी निकलना है। घर का सामान वगैरह लाना है।”

“हाँ! बढ़िया है, रात का खाना साथ ही खाते हैं। मैं बोल देता हूँ सविता को और बात भी कर लेता हूँ। आपके यहाँ का काम भी कर दिया करेगी... साफ-सफाई का।”

इतना कहकर भइया ने विदा ली। मैं भी नहाने चला गया। नहा कर मार्केट गया। लौट कर आराम कर रहा था, करीब 5 बज रहे थे। इतने में फिर से किसी ने दरवाजा खटखटाया।

खोला तो देखा सामने अंकल खड़े थे।

“नमस्ते अंकल!”

“नमस्ते, सो तो नहीं रहे थे?”

“नहीं-नहीं, बताइए कैसे आना हुआ? आइए बैठिए।” मैंने कुर्सी की तरफ इशारा

करते हुए कहा

“नहीं, बैठूँगा नहीं। बस देखने आया था, सब सही चल रहा है ना?”

“हाँ! सब अच्छा है।”

“सुना है, आपने नीचे वाले भइया के साथ खाने का कर लिया है, और सविता को काम के लिए कह दिया है?”

“हाँ! वही आए थे, वैसे भी अकेले का खाना बन भी नहीं पाता और मैं बाहर खाना ज्यादा पसंद नहीं करता।”

“ठीक है, थोड़ा संभल के रहना इस सविता से, समझ में आई?”

“क्यों, कोई बात है क्या? तो मना कर देता हूँ वैसे भी अभी काम शुरू नहीं किया उसने।”

“नहीं बोल दिया है तो ठीक है, लड़की अच्छी है बस उसका जो चक्कर है ना।”

मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि अंकल को भी सविता के ब्वॉयफ्रेंड के बारे में पता है।

“हाँ भइया ने बताया था।”

“भइया भी गुरु घंटाल आदमी है, पंडित है। सुबह चार बजे उठ जाता है पूजा के लिए, समझ में आई?”

“हाँ ये तो अच्छा ही है।”

“पूजा करने में बुराई नहीं है, लेकिन बीवी को साथ क्यों नहीं रखता है फिर?”

मैं कुछ नहीं बोला। अंकल ही बोलते रहे-

“कुछ चक्कर है भइया का सविता के साथ समझे न, हम तो पहले से बस बता ही सकते हैं। बाद में, यह मत बोलना कि बताया नहीं था, समझ में आई?”

“हाँ समझ गया।”

“चलो अब चलता हूँ, कोई दिक्कत हो तुरंत बोलना मुझे और उस लड़की से जरा संभल के रहना, समझ में आई?”

“हाँ अंकल।”

“वैसे मैं दूसरी लड़की देख रहा हूँ, जो काम संभाल ले पूरा। सविता वैसे भी 2 साल से काम कर रही है। थोड़े दिनों में बदलते रहना चाहिए इन लोगों को। अच्छा! आज शाम को सबका खाना मेरे घर पर है। इसी बहाने सब लोग मिल भी लेंगे।”

“लेकिन मैंने तो भइया को बोल दिया है कहने के लिए।”

“उसका खाना भी नीचे है, उसको बोल दूँगा मैं।” अंकल ने चलते हुए कहा।

खाना खाने जाने के लिए शाम को मैं नीचे उतर ही रहा था कि सीढ़ी पर पल्लवी दिख गई। उम्र यही कोई 27-28 साल, बाल घुँघराले, आँखों में काजल। वो अपने घर को ताला लगा रही थी।

“आप भी नीचे अंकल के यहाँ डिनर पर जा रही हैं?”

“हाँ।”

“मैं, शिवम। ऊपर वाला घर मैंने ही लिया है।”

“हाँ अंकल बता रहे थे, I’m पल्लवी”

“हाँ अंकल बता रहे थे।” ये बोल कर मैं मुस्कुराया

“अंकल सबके बारे में सब कुछ बताते रहते हैं।” उसने ताला बंद कर लिया था और

हम दोनों एक साथ नीचे पहुँचे। वहाँ भइया, मौसी और सविता पहले से ही मौजूद थे।

पल्लवी और मुझे एक साथ देखते ही अंकल बोले-

"आप दोनों मिल लिए क्या एक-दूसरे से?"

"नहीं, बस अभी नीचे उतरते हुए सीढ़ी पर पहली बार मुलाकात हुई" मैं झट से बोला।

"पल्लवी बेटा, ये शिवम है, यही रहेगा ऊपर अभी-अभी कॉलेज खत्म करके निकला है। इसका भी एक अकाउंट खोल दो अपने बैंक में" अंकल ने टोंट कसते हुए कहा।

इतने में भइया बोले- "मैं भी बोल रहा हूँ इतने दिनों से पल्लवी जी से, लेकिन हमारा अकाउंट ये खोल ही नहीं रही हैं अंकल।"

"हाँ! हाँ! क्यों नहीं पक्का खोल देंगे, अंकल, बाकी बताओ आप कैसे हो? आज सबको डिनर पर कैसे बुला लिया?" पल्लवी ने भइया की बात पर ज्यादा ध्यान न देते हुए पूछा।

"बस बेटा, लगा कि सब एक-दूसरे को जान जाएँ। आखिर पड़ोसी ही पड़ोसी के काम आता है, समझ में आई?"

'समझ में आई' अंकल बार-बार दोहराते थे जैसे हिंदुस्तान के सारे बच्चे दोहराते हैं, अगली बार से अच्छे नंबर ले आएँगे। कई लोग कई बातें बार-बार दोहराते हैं- इस बार विदेशी धरती पर सीरीज जीत लेंगे, इस बार बहुमत में आए तो गुंडागर्दी खत्म कर देंगे इत्यादि।

"सविता, 4-5 रोटी सेंक के बोलो बेटा, सब लोग आ गए हैं" मौसी ने सविता को इशारा करते हुए कहा।

"बन गई है मौसी जी!" सविता ने मौसी जी को बोला और भइया की तरफ कुछ इशारा किया, जो मैं समझ नहीं पाया लेकिन पल्लवी ने सविता को इशारा करते हुए देखा।

"आप लोग जल्दी खा लो, सविता को देर भी हो रही है घर जाने के लिए।" मौसी ने हमें table की तरफ ले जाते हुए कहा।

"मौसी आप परेशान मत होइए, मैं छोड़ आऊँगा न सविता को।" भइया ने कहा

"मैं अकेले चली जाऊँगी मौसी।" सविता ने लगभग चीखते हुए कहा।

खाते वक्त दुनिया भर की बातें हुईं। बातों-बातों में मैंने ही अंकल से पूछ लिया-

"आपकी बेटी कब आती है?"

अंकल ने कोई जवाब नहीं दिया तो मौसी ही बोलीं-

"अरे अमरीका से आना आसान तो है नहीं, साल-दो साल में आ जाती है।"

खाने की टेबल पर अंकल के पड़ोस में मौसी बैठीं। भइया एक तरफ और दूसरी तरफ मैं और पल्लवी बैठे। जैसे-जैसे सविता रोटी लाती जा रही थी, भइया को कुछ इशारा करती जा रही थी।

खाना खाते वक्त इधर-उधर की बहुत सारी बातें होती रहीं। मैंने देखा भइया के होने से पल्लवी थोड़ा uncomfortable थी। लेकिन पल्लवी के होने से भइया बहुत comfortable थे। बातों-बातों में पता चला पल्लवी को मूवी देखने का बहुत शौक है।

मैंने तुरंत ही पल्लवी को बोला-

“मेरे पास movies का बहुत अच्छा कलेक्शन है।”

“wow! वैसे भी मैं बहुत बोर होती हूँ संडे को, मॉल जाने का मन नहीं करता अकेले, मैं movies लेने आती हूँ कभी” पल्लवी ने भइया की तरफ देखते हुए कहा।

खाते, बातें करते देर हो गई। पल्लवी और मैं अपने-अपने फ्लैट में लौट आए। भइया सविता को छोड़ने चले गए।

एक हफ्ते पल्लवी बिलकुल भी नहीं दिखी। भइया रोज खाने के टाइम मिलते रहे और पल्लवी के चरित्र का रोज मसाला लगाकर चित्रण करते रहे। सविता भइया को वैसे ही इशारे करती रही।

अगले संडे करीब 11 बजे पल्लवी अपनी हार्ड-डिस्क और कॉफी के दो मग लेके आई।

“Coffee for you.”

“Coffee की क्या जरूरत थी?”

“मुझे जरूरत थी, तुम नहीं पीते क्या कॉफी?”

“नहीं-नहीं पीता हूँ, मेरा मतलब है कि इतनी formality की क्या जरूरत थी।”

“ऐसे ही यार, पड़ोसी ही पड़ोसी के काम आता है, समझ में आई?”

समझ में आई में ‘आई’ सुनते ही हम दोनों खूब हँसे।

“मैं लैपटाप में लगा देता हूँ, फिर तुम्हें जो पसंद हो ले लेना।”

अभी बात शुरू ही हुई थी कि सविता आ गई रोज का काम करने। जैसे ही वो आयी पल्लवी ने मुझसे कहा-

“देखा, भइया ने भेजा होगा।”

मैं इतना दूर तक सोच ही नहीं पाया था। खैर, मैंने सविता को कहा-

“सविता, मैं शाम को नहीं रहूँगा तब साफ कर देना मुझे dust से allergy है।”

“ठीक है शिवम भइया” ये कह कर सविता बहुत उदास होकर चली गई।

“भइया का पता है न तुम्हें?” पल्लवी ने पूछा

“क्या पता है?”

“यही कि उनका चक्कर है सविता के साथ और इसीलिए उनकी बीवी उनको छोड़ के चली गई”

पल्लवी ने एक साँस में बोल दिया।

“अच्छा, मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता। मुझे तो वो बता रहे थे, ब्वॉयफ्रेंड है इसका।”

“झूठ, वो ब्वॉयफ्रेंड केवल नाटक है, भइया और सविता का। ताकि बाकी लोगों को शक न हो।”

मुझे ये सब बात करना ठीक नहीं लगा तो मैंने ही बात बदलने के लिए पूछा-

“तुम कबसे हो यहाँ पर?”

“1 साल से, बस change करूँगी अब।”

“क्यों?”

“ऐसे ही, बस।”

वो फोल्डर खोल-खोल के मूवी ढूँढ़ रही थी और एक फोल्डर ‘जन्नत’ नाम से था।

उस पर क्लिक करने ही जा रही थी।

"ये कौन-सी है, इमरान हाशमी वाली?"

तो मैंने झट से रोका और बोला- "नहीं इसको रहने दो, ये फोल्डर खाली है।"

कॉलेज में 'जन्नत' नाम के folder मतलब, पॉर्न मूवी हुआ करता था। पल्लवी को शायद ये बात पता थी। वो ये देख कर हँसी और बोली-

"पॉर्न है न जन्नत?"

मैं सीधे ऐसे सवाल के लिए तैयार नहीं था। लेकिन जब मैंने देखा पल्लवी ने पूछ ही लिया है तो मैंने मान लिया।

"मुझे समझ नहीं आता, तुम लड़के लोग ये double स्टैंडर्ड क्यों रखते हो?"

"क्यों, ऐसा तो नहीं है।"

"अगर पॉर्न है तो पॉर्न नाम का फोल्डर बना लो ना, ये फालतू के नाम जन्नत, मोक्ष, heavan, प्राइवेट, new folder... ये सब क्यों रखते हो?"

"मैंने कभी इस बारे में सोचा नहीं, जब कॉपी किया था तो बस ये पूरा फोल्डर ही कॉपी कर लिया था।"

मैं ये सब बात करने में comfortable नहीं था तो मैंने ही दूसरा फोल्डर दिखा के कहा- "ये देख लो, इसमें latest movies हैं।"

मूवी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अचानक से पल्लवी ने एक फोटो खोली, जिसमें मैं एक लड़की के साथ था और पूछा-

"I'm sorry to ask you a personal question लेकिन ये girlfriend है तुम्हारी?"

"हाँ, girlfriend थी। अब नहीं है।"

मेरा मन था कि पल्लवी उसके बारे में पूछे। लेकिन पल्लवी ने कुछ नहीं पूछा। थोड़ी देर बाद मैंने ही पूछा-

"और तुम्हारा ब्वॉयफ्रेंड तो होगा ही ना?"

"था, लेकिन अब नहीं है।" ये कहकर पल्लवी फोल्डर में मूवी ढूँढ़ने लगी और उसने लैपटाप में ही आँख गड़ाए हुए पूछा-

"पूछना नहीं, तुम्हें क्या था क्या हो गया, पहले था अब क्यों नहीं है?"

"हम्म, मेरा मन था तुम मेरी girlfriend के बारे में पूछो।"

"So smart शिवम, चलो बताओ उसके बारे में। ये भी बताओ उसके जाने के बाद तुम कितना emotionally bankrupt हो गए हो, ताकि मैं तुम्हारे क्लोज आ सकूँ।" पल्लवी इतने आराम से ये सब बोल ले गई और मैं केवल सुनता रहा।

"अभी कॉलेज से निकले हो न तुम? इसलिए ये सब शुरू-शुरू में कुछ दिन लगता है। थोड़े दिन बाद सही हो जाओगे समझे?" पल्लवी ने दुनियादारी समझाते हुए मेरा वाला कप ले ली और चलने लगी।

दरवाजा बंद करने से पहले मैंने उसको बोला-

"It was very nice meeting with you."

"Ooh common! कॉलेज से बाहर आओ, कॉलेज में लड़कियों को ये सब सुनना अच्छा लगता है, और हाँ ये movies देख के अगले वीक फिर आती हूँ।"

शुरू में मुझे पल्लवी का ऐसा होना अखरा। लेकिन थोड़े दिन बाद मुझे इसकी आदत हो गई। करीब-करीब हर संडे पल्लवी मूवी लेने आती और उसी टाइम सविता घर की सफाई करने।

एक संडे मैं अपने पुराने कपड़े सही कर रहा था और एक जींस ऐसी थी जो अब मुझे आती नहीं थी, सविता घर की सफाई कर रही थी तो मैंने उसको बुला के कहा-

“सविता ये जींस लेती जाओ, अपने जीजा या ब्वॉयफ्रेंड, किसी को भी दे देना।”

“ठीक है शिवम भइया, जींस तो बहुत अच्छी है।” उसने जींस को हाथ में पकड़ते हुए कहा।

“हाँ! अच्छी है, लेकिन क्या करूँ छोटी हो गई है।”

मैं अभी कमरे का सामान समेट ही रहा था, इतने में सविता पीछे से आई और बोली-

“शिवम भइया, देखो कैसी लग रही है जींस?”

मैं हक्का बक्का रह गया, घर में केवल एक हाल और किचन है, किचन में दरवाजा भी नहीं है। इसने इतनी जल्दी जींस पहनी कैसे? और यह भी नहीं सोचा कि बीच में मैं ही कहीं आ जाता तो? मैं उसको देख कर सोच ही रहा था, इतने में उसने दोबारा पूछा-

“शिवम भइया बताओ न कैसी लग रही है?”

“बहुत अच्छी लग रही है। एक काम करो मेरे लिए एक कप कॉफी बना दो।”

किचन से सविता की आवाज आई-

“कॉफी के साथ कुछ और भी लेंगे?”

“हाँ”

मेरे हाँ बोलते ही सविता किचन से करीब-करीब भागते हुए कमरे में आई और पूछा-

“क्या?”

“बिस्कुट” मैंने कहा, लेकिन उस दिन पहली बार मुझे सविता से डर लगा। मैंने शाम को अंकल को बोला कि ऐसा है कोई और लड़की देख लेते हैं। अंकल ने एक-दो लड़कियाँ भेजी भी। लेकिन भइया किसी और लड़की को रखने के लिए तैयार नहीं हुए। खैर मुझे खाने से मतलब था। सब्जी भी भइया लेके आते थे। सो मैंने फिर ज्यादा दिमाग नहीं लगाया। इन सब में 4 महीने बीत चुके थे और अगले 2 महीने के अंदर ही मेरी दूसरी पोस्टिंग आ ही जानी थी।

इसी बीच पल्लवी ने एक दिन अपने यहाँ डिनर पे बुलाया और पहले ही मुझसे पूछ लिया था वोड्का लेते हो या व्हिस्की या बीयर। उसने जब पूछा तो मैंने कहा मैं लेता आऊँगा तुम बता दो तुम क्या लेती हो। शाम को पल्लवी ने अपने आप डिनर तैयार किया था। मैं उसकी मनपसंद वोड्का लेके पहुँच गया। वह हर बात में यही बोलती थी-

“ये बोलते हो तो लगता है, मैं तुम्हारे कॉलेज में पढ़ती हूँ और तुम्हें मुझसे प्यार हो गया है।”

“क्यों प्यार हो नहीं सकता क्या?”

“क्यों नहीं हो सकता?”

“फिर हर बात में यही क्यों बोलती हो?”

“इसलिए बोलती हूँ, क्योंकि ऐसा है नहीं।”

इतना कहकर उसने दूसरा पेग बनाया और वो बाकी दिनों से ज्यादा खूबसूरत लगने

लगी। मुझे कई दिनों बाद लगा कि सही में girlfriend होनी ही चाहिए।

"ऐसा नहीं है, तुम्हें कैसे पता?" मैंने दोबारा जोर देकर कहा।

"लड़कियों को पता चल जाता है, शिवम।"

"और लड़कों को?"

"लड़कों को भी पता चल जाता है, लेकिन थोड़ी देर में।"

"तुम बहुत अच्छी लग रही हो, बिलकुल मेरी girlfriend जैसी।"

ये सुनकर पल्लवी बहुत जोर से हँसी और मुझे बहुत बुरा लगा।

"देखा, यही तो मैं कह रही थी... कि मैं पल्लवी जैसी अच्छी ही नहीं लग सकती तुम्हें, अच्छी भी लग रही हूँ तो तुम्हारी girlfriend जैसी... यही मेरा प्रॉब्लम है लड़कों से... उन्हें समझ तो आता है लेकिन देर से... Don't sell your emotional bankruptcy for God sake."

पल्लवी बोल तो सही रही थी, लेकिन अभी तक मैं 3 पेग ले चुका था और आज कंपनी भी अच्छी थी इसलिए मैं ज्यादा सोचना-समझना नहीं चाहता था। जब खाना खा के मैं वहाँ से चलने लगा, तो मैंने चलने से पहले फिर से कहा-

"तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो।"

फिर उसने मुझे अपने पास खींचा, मेरी आँखों को अपने हाथों से बंद किया और होंठ कान के पास लाके बोली-

"Grow up, शिवम फ्लर्ट करना बंद करो अब।"

मैं कुछ नहीं बोला और चला आया। उसकी इस बात ने मुझे सोने नहीं दिया। उसके बाद जितने भी दिन मैं इंदौर में रहा, मैं पल्लवी से नहीं मिला। ट्रांसफर इंदौर से लखनऊ हो गया। आने से पहले मैं पल्लवी से आखिरी बार मिलने गया-

"बहुत अच्छी लग रही हो।"

वो हँसी और उसने बोलना शुरू ही किया कि-

"Grow up .." वो बात पूरी कर पाती, इससे पहले ही मैंने उसको कहा- "पल्लवी जैसी अच्छी लग रही हो। मैं जा रहा हूँ और आगे कभी परेशान नहीं करूँगा।"

इतना कहकर मैं चल दिया। मैं उसके कुछ भी बोलने या न बोलने का भी इंतजार करना नहीं चाहता था। इसके बाद भइया के पास गया इससे पहले मैं कुछ बोलता वही बोल पड़े-

"थोड़े दिन और रुक जाते तो पल्लवी चक्कर चला ही लेती आपसे।"

मुझे बुरा बहुत लगा, लेकिन अब चलते-चलते क्या बोलता। नीचे उतरा तो अंकल ने दो टूक कहा-

"शिवम तुमने तो धोखा दे दिया, आपकी जगह जो भी आए उसको ये घर दिला दीजिए, किराया 500 रुपये बढ़ा के, समझ में आई?"

सविता उस दिन छुट्टी पर थी सो उससे मिल नहीं पाया और मैं शायद उससे मिलना चाहता भी नहीं था।

उस घर का कुछ भी याद नहीं आया सिवाय पल्लवी के। और पल्लवी बहुत याद आई। एक बार मैं ऐसे ही एक शाम अकेले घर पर बैठा था। पल्लवी की कॉल आई।

"कैसी हो तुम?"

“तुम कैसे हो?”

“बढ़िया, बस आज लैपटाप देख रही थी। तुम्हारा एक पर्सनल फोल्डर भी आ गया था movies के साथ में।”

“ओह कौन-सा?”

“जिसमें तुम्हारे और तुम्हारी गलफ्रेंड के कुछ फोटो और विडियो थे।”

जैसे ही उसने ये कहा, तब मुझे याद आया कि ये फोटो और विडियो ढूँढ़-ढूँढ़ के कितना परेशान हो चुका था मैं। मिल ही नहीं रहे थे।

“थैंक्स गॉड, ये तुम्हारे पास है।”

“तुमने देखे सारे, मेरे कुछ बहुत ही क्लोज फोटो और विडियो थे?”

“हाँ! सारे।”

मैं कुछ नहीं बोल पाया, फिर वही बोली-

“Don’t worry, मैंने सब delete कर दिया है, और हाँ तुम्हारी गर्लफ्रेंड बिलकुल मेरे जैसी लगती है, मेरी movies खतम हो गई हैं। कभी आ जाओ movies देने।”

पता नहीं क्यों उसके बुलाने के बाद भी, मैं जाने के लिए ‘हाँ’ नहीं कर पाया। फोन रखने के बाद मैंने एक SMS किया पल्लवी को, ‘तुम पल्लवी जैसी ही अच्छी लगती हो’। उसका कोई जवाब नहीं आया। करीब 1 साल बाद भइया का एक दिन फोन आया। उनका भी ट्रांसफर लखनऊ हो गया था और वो चाहते थे कि मैं उनको एक बढ़िया घर दिलवा दूँ। मैंने पूछा-

“कैसा घर चाहिए, अकेले ही रहना है ना?”

“नहीं यार शादी हो गई हमारी, तुम्हें बुला नहीं पाए।”

बात काटने के लिए मैंने ही पूछा-

“और अंकल कैसे हैं, मौसी के क्या हाल हैं?”

“उनका मत पूछो यार, अंकल की लड़की एक दिन आई थी। बहुत बवाल हुआ और उसके बाद मौसी चली गईं। मर जाएँगे अंकल मौसी के बिना, तबीयत सही नहीं रहती।”

“और सविता अभी भी काम कर रही है, उसका ब्वॉयफ्रेंड कैसा है?” पता नहीं कैसे मेरे दिमाग में यह सवाल आया।

“नहीं उसने काम छोड़ दिया और तुम्हें दूसरी बात तो बताई ही नहीं, हमने सविता से शादी कर ली है। इसी बहाने गरीब का भला हो जाएगा।”

भइया बहुत देर तक पता नहीं क्या-क्या बताते रहे, दो-चार बार पल्लवी का भी नाम लिया। फोन रखने से पहले मैंने बस इतना ही कहा-

“भइया आइए कभी घर, भाभी के साथ... Welcome!”

कागज

मुझे यह कहानी सुनानी ही नहीं थी। मैं सुनाता भी नहीं अगर उसकी कहानी मेरी कहानी से आकर ऐसे न टकराती। वह थिएटर का बड़ा एक्टर है और मैं उसके सामने कुछ भी नहीं। कॉलेज के बाद से मैंने स्टेज पर कभी एक्टिंग नहीं की थी। मैं बहुत दिनों से उसके लिए एक कहानी लिखने की कोशिश कर रहा था कि शायद अगर वह मेरी कहानी का प्ले बना ले तो मेरी भी कुछ पहचान बन जाए। मैंने उसके किए हुए सारे प्ले देख लिए हैं। हर प्ले की कहानी अलग होते हुए भी एक थी। उसका हर किरदार अलग होते हुए भी एक था। वह वही किरदार बार-बार करता है। यह बात दुनिया में केवल दो लोगों को पता थी। एक उसे और एक मुझे। वह वही बातें बार-बार इतने अलग तरह से दोहराता था कि उसको भी गलतफहमी हो गई थी कि हर बार वह कुछ नया करता है।

इस बात की वजह से ही न उसको नींद आती न ही मुझे। हम दोनों ही अपना कुछ भी दोहराना नहीं चाहते थे। पुराना जिया हुआ हम रिवाइंड करके इतनी बार जी चुके थे कि उसका स्वाद जीभ से उतर चुका था।

मैं अपनी कहानी लेकर कार्तिक रॉय के पास पहुँचा। कहानी बिलकुल नयी थी। ठीक वैसी कहानी जिसकी तलाश में वह इतनी रातों से था। मैंने बड़ी उम्मीद से अपनी कहानी उसकी तरफ बढ़ाई। उसने कहानी के कुछ पन्ने इधर-उधर पलटे। कार्तिक ने मुझे चाय पिलाई और चलते वक्त बस इतना कहा, मैं अपनी कहानियाँ खुद लिखता हूँ।

मुझे कुछ सूझा नहीं। मैं उसके घर से बाहर निकल आया। लिफ्ट में ग्राउंड का बटन दबाते ही मुझे कुछ खयाल आया। मैं वापिस ऊपर गया, लेकिन दरवाजा नहीं खटखटाया। मैं लौट आया। मुझे वापिस लौटते-लौटते ऐसा लगने लगा कि कार्तिक को अपनी कहानी देकर मैंने गलती कर दी। मैं आधे घंटे बाद फिर से कार्तिक के घर के बाहर खड़ा था। इस बार दरवाजा किसी लड़की ने खोला। मेरी कहानी वहीं सामने टेबल पर घर की तमाम चीजों के साथ पड़ी हुई थी। कहानी के कुछ पन्ने पलटे हुए था। मैंने अपनी कहानी वापिस माँगी। उस लड़की ने कहा भी कि वो कार्तिक को बुला रही है, मैं इंतजार कर लूँ। मैंने बताया कि मेरे पास इंतजार करने का टाइम नहीं हैं। वह बस मेरी कहानी वापिस कर दे। यह लड़की कार्तिक के पुराने प्ले की हीरोइन काया थी। वह टेबल तक गई। मेरी कहानी के खुले हुए पन्ने वापिस बंद किए और कहानी वापिस करने से पहले कहा, मुझे यह कहानी पूरी पढ़नी है।

मैंने बहाना बनाते हुए कहा कि मुझे कुछ चेंज करने हैं। एक बार कहानी फाइनल करने के बाद मैं पक्का उसको कहानी दूँगा।

काया ने मेरी कहानी के पहले पेज पर अपना नंबर लिख दिया और कहा कि पूरी होते ही मैं उसे कहानी भेज दूँ।

मेरी और कार्तिक की कहानी उसी मिनट खतम हो गई होती लेकिन काया ने हम दोनों की कहानी का रास्ता काट दिया। इसके बाद मैंने वह कहानी न चेंज की न ही कभी काया या किसी को ईमेल किया। इस बात के करीब एक महीने बाद मुझे पता चला कि कार्तिक का नया प्ले आने वाला है। काया उस प्ले की हीरोइन है। मैं प्ले देखने पहुँचा। प्ले की कहानी कार्तिक के पुराने प्ले जैसी ही थी। वह जान-बूझकर कहानियाँ घूमा-फिरा कर सुनाता था ताकि देखने वाले को लगे कि उसने कुछ नया देखा है। वह जान-बूझकर प्ले में कुछ लाइनें ऐसी डालता था जिसका प्ले से कोई सीधा मतलब नहीं होता। ऐसा करने से देखने वाला अपने हिसाब से बातों का मतलब निकालता और खुश होता। इधर कार्तिक यह सोचकर खुश होता कि उसकी बेमतलब की लाइनें जिन्हें ऐसे ही वह अपने मोबाइल में लिख दिया करता है उनका कुछ तो यूज हो रहा है। वह अपनी लाइफ में आने वाली, मिलने वाली हर एक चीज को यूज करना चाहता था। इसी वजह से प्ले के बाद वह हीरोइन बदल दिया करता। काया उसकी इकलौती हीरोइन थी जिसने उसके साथ एक से ज्यादा प्ले किए थे।

मैं प्ले देखकर बाहर चाय पी रहा था और फ्रस्टेट भी हो रहा था कि यह जानते हुए कि कार्तिक के पास अब कहने को नया कुछ भी नहीं बचा है फिर भी मैं क्यों प्ले देखने आ गया। भीड़ करीब-करीब जा चुकी थी। इतने में काया मेरे पास आई और बोली,

कैसा लगा प्ले?

अच्छा था।

तुम सच बोल सकते हो।

बहुत बुरा था।

सबसे ज्यादा बुरा क्या था?

तुम।

तुम्हारी वह कहानी पूरी हो गई?

वह कहानी उस दिन भी पूरी ही थी।

मुझे मालूम था। मुझे वह पूरी पढ़नी है।

मैंने पीछा छुड़ाने के लिए कहा, ठीक है, मैं ईमेल कर दूँगा। काया बोली कि उसे वह कहानी आज ही पूरी सुननी है। काया जब यह बोल रही थी, तभी कार्तिक वहाँ आया। उसने काया से चलने के लिए पूछा। कार्तिक ने मेरी तरफ भी देखा लेकिन ठीक वैसा लुक दिया जैसे कोई बड़ा एक्टर अपने फैन को देता है। मुझे मालूम था कि वह मुझे पहचान तो गया लेकिन जान-बूझकर भाव नहीं दे रहा। हालाँकि मुंबई में इतनी सेल्फ रेस्पेक्ट किसी लेखक की बचती नहीं है लेकिन फिर भी यह खयाल कि हम सामने वाले से बढ़िया लिखते हैं- ही कुछ और दिन अंदर के लेखक को जिंदा रखे रहता है। काया ने कार्तिक से कहा कि उसको कुछ काम है, वह अपने घर जा रही है। कार्तिक ने छोड़ने के लिए पूछा भी लेकिन तब तक उसको कुछ लड़कियाँ घेर चुकी थीं। जिन लड़कियों ने कार्तिक को

घेरा हुआ था उन लड़कियों की लाइफ का, अभी तक का, यह सबसे अच्छा प्ले था।

बीच-बीच में लोग काया के पास आकार उसके काम की तारीफ कर रहे थे। इस बात से अब वह थोड़ा परेशान हो रही थी। उसने मुझसे कहा, यहाँ से चलते हैं। न मैंने पूछा कहाँ, न उसने बताया कहाँ जाना है।

हम दोनों सड़क पर रोशनी पकड़कर अँधेरा ढूँढ़ते हुए बढ़ने लगे। थिएटर से थोड़ा-सा आगे निकलकर उसने एक काली पीली टैक्सी को हाथ दिया। कार में बैठते ही वह बोली- मुझे मोबाइल ऐप से कार बुक करना बिलकुल पसंद नहीं।

मैंने इसकी वजह नहीं पूछी लेकिन फिर भी काया ने बताया।

हम हर जगह अपना रेकॉर्ड छोड़ते हुए जाते हैं। कौन-सा ड्राईवर लेने आ रहा है। उसकी रेटिंग क्या है। कितनी देर में वह आ जाएगा। ट्रिप के बाद बिल कितना होगा। ऐसा लगता है कि कोई पीछा कर रहा है।

जब हम टैक्सी से गुजर रहे थे तब रास्ते में एक बड़े से पोस्टर पर काया और कार्तिक दिखे। काया ने मुझे वह पोस्टर देखते हुए देखा और कहा, ये पोस्टर मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं।

मैंने यह नहीं पूछा क्यों नहीं पसंद फिर भी काया ने बताया।

जिस दिन फोटो शूट हुआ था। उस दिन मेरा मूड अच्छा नहीं था।

इस बार मैंने पूछा, मूड से एक्टर को फर्क पड़ता है क्या? वह भी तुम्हारे जैसी एक्टर को! मैं एक्टर बोलने से पहले 'अच्छी' लगाना भूल गया। इस सवाल पर काया ने कुछ देर तक सोचा और कहा, मूड का असर पड़ना तो नहीं चाहिए लेकिन पड़ने लगा है। खैर यह बताओ तुम इतना ही चुपचाप रहते हो?

कभी-कभी।

बीयर पीते हो?

कभी-कभी।

रोज लिखते हो?

कभी-कभी।

हर सवाल का एक ही जवाब देते हो?

कभी-कभी।

ये 'कभी-कभी' हमने साथ बोला था। ड्राईवर ने आगे का रास्ता पूछा। काया ने कहा- बस आप यहीं छोड़ दीजिए। टैक्सी से उतरकर काया ने सिगरेट और दूध का एक पैकेट खरीदा और मुझसे पूछा, कॉफी तो पीते हो न कभी-कभी?

मैंने कहा- कभी-कभी नहीं, रोज।

दस मिनट बाद हम काया के घर में थे। ड्राइंग रूम में उसके किए हुए प्ले के पोस्टर लगे हुए थे। कमरे में सोफा नहीं था। मैं नीचे गद्दे पर बैठ गया। काया ने सामने वाली खिड़की खोल दी और पंखा ऑन करने के बाद अंदर चली गई। घर के अंदर से आने वाली आवाज से लगा कि वह अपना मुँह धो रही है। कमरे से बाहर आने में उसे करीब दस मिनट लगे। अब वह घर वाले कपड़ों में थी। ढीली टी शर्ट ढीले शॉर्ट्स में। घर वाले कपड़े हमारे वे रिश्ते होते हैं जिसमें घुसकर लगता है कि दुनिया को हमारे घर वाले कपड़ों जैसा आरामदायक होना चाहिए।

कॉफी अभी तुरंत लोगे या थोड़ी देर में? काया ने सामने आकर बैठते हुए पूछा।

थोड़ी देर में। अगर मैं थोड़ी देर तक यहाँ रुका तो।

जब तक कहानी चलेगी तब तक तो तुम हो ही।

कहानी कितनी लंबी चलेगी यह लेखक के हाथ में थोड़े होता है! अगर कहानी थोड़ी देर से ज्यादा लंबी हो गई तो?

तो क्या, सुबह की कॉफी पी लेना।

तो पहले कॉफी पिलाओ फिर कहानी शुरू करते हैं।

काया ने जैसी कॉफी बनाई उसको पीकर लगा कि वह रोज कॉफी नहीं बनाती। उसने मेरा पहला सिप लेते ही पूछा, कॉफी कैसी बनी है?

मैंने भी तुरंत जवाब दे दिया, बिलकुल तुम्हारे प्ले जैसी।

यह सुनते ही वह बहुत जोर से हँसी और बोली, चलो एक बात तो अच्छी है तुम्हारी।

क्या?

तुम्हारे लिखने का तो पूरा नहीं पता लेकिन कम-से-कम सच तो बोलते हो। कॉफी दोबारा बना दूँ?

नहीं रहने दो। थोड़ी देर बाद मैं बना दूँगा।

मैंने कहानी सुनाना शुरू किया। काया कहानी सुनते-सुनते बीच-बीच में मुझे रोक देती फिर कुछ देर सोचती और दोबारा कहानी शुरू करने को कहती। शुरू में तो मुझे अजीब लगा लेकिन थोड़ी ही देर में ये सब नॉर्मल हो गया। मैंने बीच में एक-दो बार पूछने की कोशिश भी की कि वह बीच में क्या सोचने लगती है। इस पर काया बोली कि वो कहानी सुनने के साथ-साथ कहानी जीने की कोशिश कर रही है और मैं बीच-बीच में उसे डिस्टर्ब न करूँ।

कहानी खत्म होने से पहले एक बार काया काफी देर तक जब कुछ नहीं बोली तो मैं उठकर कॉफी बनाने चला गया। किचन बहुत बिखरा हुआ था। हमारे किचन हमारे मन का हाल बयाँ करते हैं। मैंने ब्लैक कॉफी बनाई। मुझे कहीं-न-कहीं उम्मीद थी कि यह रात लंबी होने वाली है।

अच्छी कहानियाँ अपने खत्म होने के बाद शुरू होती हैं। कॉफी खत्म हुई। थोड़ी देर बाद कहानी खत्म हुई। काया उठकर खिड़की तक गई। मुझे उसकी खामोशी से परेशानी हो रही थी। वह खिड़की से बाहर देख ही रही थी। मैंने पूछा, कहानी बहुत ही खराब है क्या!

वह पलटी और घड़ी में दो बजकर चालीस मिनट को एक कदम बढ़कर देखने के बाद बोली, कहानी को मेरे अलावा और कोई नहीं कर सकता। मुझे यह कहानी चाहिए।

मैंने कहा, ले लो कहानी। बस एक शर्त है।

क्या?

यही कि मैं चाहता हूँ इसमें कार्तिक रॉय एक्टिंग करे।

भूल जाओ। वह नहीं करेगा।

तब मैं कहानी भी नहीं दूँगा।

काया ने थोड़ी देर सोचा और बोला कि वह कार्तिक से एक बार बात करेगी।

सुबह के करीब 4 बज चुके थे। बातें खत्म हो चुकी थीं। काया ने कार्तिक को फोन

मिलाकर बताया कि उसके पास एक बहुत अच्छी कहानी है। क्या वह अभी आ सकता है। कार्तिक ने पहले थोड़ा टाला लेकिन फिर वह मान गया। बातचीत में काया ने कार्तिक से पूछा कि वह किसी के साथ तो नहीं है। कार्तिक ने बताया कि है कोई लड़की जो प्ले के बाद उसे मिली थी, लेकिन उसका नाम अब कार्तिक को याद नहीं आ रहा। वह सो भी चुकी है। काया ने कहा कि वह कल भी आ सकता है लेकिन यह कहानी ऐसी किसी भी लड़की से ज्यादा इंपॉर्टेंट है।

कार्तिक को लड़कियों से कभी खास प्रॉब्लम नहीं होती थी। उसको प्रॉब्लम तब होती थी जब लड़की सुबह उठकर प्यार से बात करने लगे। कार्तिक को प्यार से नफरत नहीं थी लेकिन उसको प्यार की किसी भी बात से नफरत थी। वह इसलिए एक लड़की के साथ दोबारा सो नहीं पाता था क्योंकि दूसरी बार मिलने पर लड़की के पास बातें होतीं और वह कोई भी बात करने में अपना वक्त जाया नहीं करना चाहता था। वह जिन लड़कियों के साथ सो चुका था उनसे बात करने में उसको अच्छी-खासी दिक्कत आती। एक बार नंगे होने के बाद बातों की कोई जगह बचती नहीं थी। कार्तिक ने बताया कि वह आधे घंटे में आ जाएगा। इस बीच काया ने फिर से एक बार कॉफी बनाई। यह वाली कॉफी बहुत अच्छी थी।

कार्तिक ने घर में घुसते ही काया को गले लगाया। उसका ध्यान मुझ पर बाद में गया। मुझको यहाँ सुबह साढ़े 5 बजे देखने से उसको कुछ परेशानी तो हुई लेकिन उस परेशानी को उसने जाहिर नहीं होने दिया। वह एक अच्छा एक्टर था जो खराब कहानियाँ लिखता था।

इसके बाद काया ने कार्तिक को कहानी सुनाई। मैं खिड़की से बाहर झाँकते हुए सुबह का इंतजार करने लगा। कहानी खत्म होने के बाद, काया ने कार्तिक की तरफ देखा और पूछा, हम कब कर रहे हैं इसे?

कार्तिक बोला, तुम्हें पता तो है कि मैं केवल अपनी लिखी हुई कहानियों पर प्ले करता हूँ!

इस बार मैं बोला, मान लीजिए अगर यह कहानी आपने लिखी होती तो आप करते इसको?

कार्तिक बोला, हाँ! बिलकुल करता। इन्फैक्ट वह ऐसी ही कहानी लिखना चाहता है लेकिन लिख नहीं पा रहा।

मैंने कहा, आप यह कहानी रख लीजिए। मुझे नाम नहीं चाहिए।

काया ने कहा, अरे किसी और की है तो क्या फर्क पड़ता है!

तीनों चुप थे। कार्तिक ने कहानी के आखिरी पन्ने से लेकर पहले पन्ने तक कई बार पलटा और बोला, It’s master piece. लेकिन मैं नहीं कर सकता।

इसके बाद कार्तिक वहाँ से चला गया। काया, मैं और मेरी कहानी उस कमरे में अकेले रह गए। थोड़ी देर बाद मैं उठकर चलने लगा और चलने से पहले मैंने कहानी को टेबल से उठाकर अपने बैग में डाल लिया। काया ने कहा भी कि मैं कहानी वहीं छोड़ जाऊँ लेकिन मेरी जिद्द यही थी कि मैं कहानी तभी दूँगा जब कार्तिक इसे करेगा। काया ने इसके बाद जबरदस्ती नहीं की।

अपने घर में उस शाम जब मैं सोकर उठा तो देखा काया की 6 मिस्ड कॉल पड़ी हैं।

मैंने कॉल बैक किया तो काया ने मुझे कार्तिक के घर आने के लिए कहा। मुझे कार्तिक के घर पहुँचने से पहले ही यह तो समझ आ ही चुका था कि वह इस कहानी पर प्ले करने के लिए तैयार है।

शाम के करीब साढ़े पाँच बजे मैं कार्तिक के घर के बाहर था। दरवाजा काया ने खोला। काया ने वही रात वाले कपड़े पहने हुए थे। काया के बिखरे हुए बालों से मैंने अंदाजा लगाया कि वह शायद अभी सोकर उठी है। कार्तिक के गीले बिखरे बालों को देखकर लग रहा था कि वह थोड़ी देर पहले ही नहाया है।

टेबल पर चार कप कॉफी थी। मैंने पूछा- कोई और भी आ रहा है क्या?

कार्तिक ने बताया कि वह एक बार में दो कप कॉफी पीता है।

मैं कोई और बात ढूँढ़ता उसके पहले ही कार्तिक बोला, मैं ये प्ले कर रहा हूँ।

मैंने कहा, मुझे पता था। मैंने लिखा ही ऐसा था।

इस पर कार्तिक बोला, लेकिन मैं एक्टिंग नहीं करूँगा। मैं केवल डायरेक्ट करूँगा। हीरोइन काया होगी।

और हीरो? मैंने पूछा।

हीरो तुम होगे। कार्तिक ने यह भी जोड़ा कि तुमने जैसा लिखा है, तुम्हारे अलावा कोई और इस कहानी को जी नहीं पाएगा।

मुझे समझ नहीं आया कैसे रिएक्ट करूँ। मैं इस बात के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं था। मैंने टालने के लिए कहा भी, मैं एक्टर नहीं हूँ। आखिरी बार कॉलेज के फालतू से प्ले में एक्टिंग की थी। मुझसे नहीं होगा। मैंने वैसे भी यह तुम्हारे लिए लिखा है।

हम जैसा लिखते हैं हम वैसे ही हो जाते हैं। कार्तिक ने कॉफी का पहला कप खत्म करते हुए कहा।

कार्तिक ने फिर कहा- तुम लिखते-लिखते कार्तिक रॉय हो चुके हो। बस स्टेज पर तुम्हें नाटक करने का नाटक करना है।

अगर कार्तिक ने यह बात न बोली होती तो मैं कभी अपनी ही लिखी कहानी पर एक्टिंग करने के लिए तैयार नहीं होता। वह मेरी चोरी पकड़ चुका था। कहीं-न-कहीं मैं कार्तिक रॉय होना चाहता था और उसकी कहानी लिखते-लिखते मैं वहाँ तक पहुँच चुका था, जहाँ कार्तिक रॉय खुद नहीं पहुँच पाया था। यह मेरी सबसे बड़ी हार थी।

मैंने एक्टिंग के लिए हाँ कर दी। काया पहले से ही तैयार थी। प्ले तैयार हुआ। मैं कार्तिक की हर एक बात मानता रहा। मेरी लिखी कहानी को कार्तिक रॉय ने अपने डायरेक्शन से अपनी तरह लिख दिया था। प्ले हुआ और यह उस साल का सबसे बड़ा प्ले हो गया। हर कोई मेरी और मेरे लिखे हुए की तारीफ कर रहा था। मुझे एकदम एक्टिंग के लिए बहुत सारे ऑफर आने लगे। कोई बड़ी जगह से मुझे एक्टिंग का ऑफर आता तो मैं उन्हें बताता भी कि मेरी यह वाली कहानी पर आप फिल्म बनाकर देखिए लेकिन कोई मेरी कहानी सुनना ही नहीं चाहता था। हर कोई मुझसे एक्टिंग कराना चाहता था।

मुंबई में रहना आसान नहीं है। बड़े-बड़े लोग बड़े-बड़े होकर भी यहाँ बिखर गए फिर मेरी क्या औकात थी! मैं खर्च चलाने के लिए एक्टिंग का काम लेने लगा। धीरे-धीरे मैं इतना बिजी रहने लगा कि मुझे लिखने का टाइम ही नहीं मिलता था।

प्ले में एक्टिंग करते-करते पाँच साल के भीतर मेरी गिनती मुंबई के बड़े हीरो में होने

लगी। मेरे पास अगले 2 साल के लिए कोई भी डेट खाली नहीं थी। मैं रोज लिखने का सोचता और रोज अपने-आप से हार जाता। मुझे जब भी काया मिलती तो मैं उसकी गोदी में सर रखकर बच्चों की तरह रोता। मेरे रोने के दौरान काया ठीक वैसे ही चुप हो जाती जैसे वह मेरी कहानी सुन रही हो और धीरे-धीरे कहानी जी रही हो।

मुझसे कभी कोई इंटरव्यू में पूछ देता कि मैं अब लिखता क्यों नहीं तो मेरे अंदर का कुछ हिस्सा टूट जाता। मैं कैसे बताऊँ कि मेरी जिंदगी कार्तिक ने लिख दी! वह मेरी जिंदगी लिखकर खुद आजाद हो गया। मुझे अब ठीक एक तरह के रोल मिलते हैं। एक ही कैरेक्टर मैं इतनी तरह से प्ले कर चुका था कि उसका स्वाद अब मेरी जीभ से उतर चुका था। कार्तिक मुझसे अच्छा लेखक भले न हो लेकिन वह मुझसे बड़ा लेखक था। लिखना एक शॉप है और अच्छा लिखना पागलपन। कार्तिक यह बात जानता था इसलिए उसने मेरा इंतजार किया। मुझको कागज बनाकर उसने अपने-आप को मुझपर लिखा न होता तो मैं आपको यह कहानी कभी न सुनाता। अब मुझे खुद अपना इंतजार है। बाकी सब ठीक है बस अब पहले जैसी नींद नहीं आती।